# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ]


‡

ग्रन्थाङ्क ४४

# राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

‡


प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

मामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालोन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

*प्रधान सम्पादक*

**पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि**

[ ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी ]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासशोधनमन्दिर, पूना, गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-सस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक-
( आनरेरि डायरेक्टर )-भारतीय विद्याभवन, बम्बई

**ग्रन्थाङ्क ४४**

# राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

**संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

# राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रधान सम्पादक

**मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य**

सहायक

श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया
एम ए (प्री) साहित्यरत्न
प्रवर शोध-सहायक

श्रीरमानन्द सारस्वत
शास्त्री, ज्योतिषाचार्य
शोध-सहायक

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

**संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

जोधपुर ( राजस्थान )

विक्रमाब्द २०१७
प्रथमावृत्ति ५००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२

खिस्ताब्द १९६०
मूल्य ४.५० न पै.

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

## प्रकाशित ग्रन्थ

**संस्कृतभाषाग्रन्थ**–१ प्रमाणमंजरी–तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६ ००। २ यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १ ७५। ३ महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १० ७५। ४ तर्कसंग्रह–प० क्षमाकल्याण, मूल्य ३ ००। ५ कारकसम्बन्धोद्योत–प० रभसनन्दि, मूल्य १ ७५। ६ वृत्तिदीपिका–प० मौनिकृष्ण, मूल्य २ ००। ७ शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २ ००। ८ कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १ ७५ ९ शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २ ७५। १० चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–प० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३ ५०। ११ राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २ २५। १२ नृत्तसंग्रह, मूल्य १ ७५। १३ नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३ ७५। १४ उक्तिरत्नाकर–प० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४ ७५। १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि–प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४ २५। १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १ ५०। १७ ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११ ५०। १८ पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४ ००। १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २ ००।

**राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ**–१ कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२ २५। २ क्यामखारासा–कवि जान, मूल्य ४ ७५। ३ लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३ ७५। ४ वाकीदासरी ख्यात–महाकवि वाकीदास, मूल्य ५ ५०। ५ राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, मूल्य २ २५। ६ जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १ ७५। ७ कवीन्द्र-कल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २ ००। ८ भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १ ७५। ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७ ५०। १० मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८ ५० न पै। ११ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा, मूल्य ८-२५ न पै। १२ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४ ५०।

## प्रेसोंमे छप रहे ग्रन्थ

**संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ**–१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित। २ शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा। ३ करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४ बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–प० कृष्णमिश्र। ६ काव्यप्रकाशसंकेत–भट्ट सोमेश्वर। ७ वसन्तविलास फागु। ८ नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १० वस्तुरत्नकोश। ११ चान्द्रव्याकरण। १२ स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि। १३ प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १४ मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह। १५ कविकौस्तुभ–प० रघुनाथ मनोहर। १६. दशकण्ठवधम्–प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १७ भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा पद्मनाभ। १८ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध। १९ हम्मीरमहाकाव्यम्–नयचन्द्रसूरि। २० ठक्कुर फेरू रचित रत्नपरीक्षादि (प्रा)

**राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ**–१ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुहता नैणसी। २ गोरावादल पदमिणी चउपई–कवि हेमरतन। ३ चन्द्रवंशावली–कवि मोतीराम। ४ सुजान संवत–कवि उदयराम। ५ राजस्थानी दूहा संग्रह। ६ वीरवाण–ढाढी बादर। ७ राठोडारी वंशावली। ८. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रंथ सूची। ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २। १० देवजी बगडावत और प्रतापसिंह म्होकमसिंघ वार्ता। ११. बगसीराम और अन्य वार्ताएँ।

इन ग्रंथोके अतिरिक्त अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामे रचे गये ग्रंथोका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

---

# सञ्चालकीय वक्तव्य

++++++++

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमे मार्च सन् १९५६ ई तक सगृहीत ४००० हस्तलिखित ग्रन्थोका विषयवार सूची-पत्र हम "हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग १" के रूपमे प्रकाशित कर चुके है और मार्च सन् १९५८ ई तक सगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थोका विषय-वार सूची-पत्र सप्रति यन्त्रस्थ है एव शीघ्र ही प्रकाशित होगा। प्रतिष्ठानमे सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श और हिन्दीके साथ ही राज-स्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोका भी बडा सग्रह हो गया है, जिनके सूची-पत्रकी माग सबद्ध विद्वानो और अन्य जिज्ञासुओ द्वारा बराबर की जा रही है। वस्तुत देश-विदेशमे सर्वत्र प्राप्य राजस्थानी-भाषा-निबद्ध समस्त हस्तलिखित ग्रन्थोका सूची-करण एक विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसके लिये सुचारु प्रयत्न होना अपेक्षित है। इसी दृष्टिसे हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरमे मार्च सन् १९५८ ई तक सगृहीत २१६६ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोकी प्रस्तुत सूची प्रकाशित कर रहे है। भविष्यमे भी राजस्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोकी पृथक् सूची प्रकाशित करनेका कार्य चालू रहेगा और यथावसर वे सूचियॉ विद्वानोके सामने आती रहेगी। इस प्रतिष्ठानमे अथवा अन्यत्र प्राप्त होनेवाले वैयक्तिक सग्रहोकी सूचियॉ भी यथाक्रम उपसग्रह-सूची या परिशिष्टके रूपमे प्रकाशित करते रहना हमारा लक्ष्य है।

**प्रस्तुत सूचीके प्रकाशन-व्ययका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रान्तीय भाषा-विकास योजनाके अन्तर्गत प्रदान करना स्वीकार किया है तदर्थ हम आभार प्रदर्शित करते है।**

जिज्ञासु पाठक और अनुसंधित्सु विद्वान् हमारे इस प्रकाशनसे लाभान्वित होंगे, ऐसी आशा है।

**मुनि जिनविजय**
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

महाशिवरात्रि, वि स २०१६,
भारतीय विद्या-भवन,
बम्बई।

++++++++++++++++

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

---

## पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय द्वारा संपादित कतिपय ग्रन्थ

१ त्रिपुराभारती लघुस्तव — महाकवि-लघुपण्डित-कृत
२ शकुनप्रदीप — पं० लावण्यशर्मा कृत
३ करुणामृतप्रपा — कवि सोमेश्वरठक्कुर कृत
४ बालशिक्षा व्याकरण — ठक्कुर संग्रामसिंह कृत
५ पदार्थरत्नमञ्जूषा — पं० कृष्णमिश्र कृत
६ मुग्धावबोधादि औक्तिक संग्रह — अनेकविद्वत्कृतिरूप
७ प्राकृतानन्द — पं० रघुनाथ कृत
८ ठक्कुर फेरू रचित ग्रन्थावलि (प्राकृत)
९ उक्तिरत्नाकर — पं० साधुसुन्दरगणि कृत
१० राठोडारी वंशावलि — राजस्थानी भाषानिबद्ध ऐतिहासिक रचना
११ राजस्थानी सुभाषित संग्रह
१२ हमीर महाकाव्य — नयचन्द्रसूरि कृत
१३ मणिरत्नादि परीक्षा ग्रन्थ संग्रह

++++++

# विषय - सूची

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७७५३ (१–१५) | अक पाटी | | १८३७ | १३–२६ | * पाटी के नीचे नीति के दूहे हैं |
| २ | ४६०७(१) | ,, | | ,, | १८–२२ | |
| ३ | ४६१६(५) | ,, | | १८७५ | ७३–८३ | |
| ४ | २८६३(७१) | अकावलि जिर्णसिंह सूरि आसिका | हीरकलश | १७वी | १३५ वाँ | |
| ५ | ४४५२(५२) | अगफुरकण विचार | हीररतन | १८वी | १०८ वाँ | |
| ६ | १६२२ | अजना चोपाई | | १७६८ | ११ | |
| ७ | ४८१८ | ,, | पुण्यसागर | १७०२ | २० | |
| ८ | ५८६३ | ,, (सचित्र) | | १६वीं | ४३ | चि ४३, प्रारभ के १० दूहे पुण्य-सागर वाली प्रति से मिलते है |
| ६ | ६५२५ | ,, | ,, | १८६८ | २४ | * रचना १६८७ लि क नोलचद ग्राम पीही, ऊदावत राज्ये |
| १० | ४०४० | अजना रास | | १८४६ | १७ | |
| ११ | ४१६४(१) | अजना सती रास | | १६२६ | १३ | अन्तिम पत्र त्रुटित |
| १२ | ५०६३ | अजन सतीनो रास | | १८वीं | २१ | |
| १३ | ३५५३(३) | अजना सुदरी चोपाई | ,, | १८७७ | १०२–१२७ | लि स्था नागोर |
| १४ | ३८६० | ,, | ,, | १७४८ | १८ | लि स्था हीयादेसर रचना स० १६८६, साचोर मे |
| १५ | ३८७६ | ,, | ,, | १८७७ | २७ | लि स्था सकार ग्राम |
| १६ | ३६६६ | ,, | ,, | १७८६ | २० | लि स्था षा(खा)रीयानी-वरा ग्राम |
| १७ | ३८७७ | ,, | भुवनकीर्ति | १८७४ | २१ | लि स्था उदयपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | ३९६७ | अजना सुदरी चोपाई | भुवनकीर्ति | १८५६ | २२ | लि स्था बीकानेर |
| १९ | २२२३ | ,, ,, | ,, | १७२२ | २७ | लि स्था सिरुवज |
| २० | ४०३९ | ,, ,, | ,, | १९वीं | १८ | अपर नाम पवनजयप्रिया अजना सुदरी हनुमत चरित्र |
| २१ | ४३१९ | ,, ,, सचित्र | ,, | १८६१ | ३४ | चि स. ४० |
| २२ | ७०४३ | ,, ,, | | १८वी | १४ | लि कर्त्री आर्या हीरा |
| २३ | ७२९१ | ,, ,, | पुण्यसागर | ८५० | १२ | बीकानेर मे लिखित |
| २४ | १८२० | ,, भास | माल मुनि (?) | १७वी | ७ | |
| २५ | ३८६२ | ,, रास | | १७४७ | १० | लि स्था पीपाड |
| २६ | ६३६२ | ,, ,, | | १८६५ | २५ | लि स्था पोरबदर |
| २७ | १०९३ | अतरिक्ष पार्श्वनाथ छद | भावविजय | १८८२ | ३ | मान कुआ मे लिखित |
| २८ | २३७४(२) | अबरीषी रास | माइदास | १९वी | १६—२० | |
| २९ | ३८९२ | अबड विद्याधर रास | मगलमाणिक्य | १६९३ | ८३ | * पालगजा नगर मे लिखित |
| ३० | २२५२ | अबाजीकी आरती | शिवानद स्वामी | २०वीं | १ | |
| ३१ | २२४० | ,, ,, | रघुलाल | १९०१ | १ | |
| ३२ | २८९३(२२) | अंबिका गीत | सेवक | १७वीं | १२ वाँ | |
| ३३ | २०४३ | ,, भवानी छद | जितचद | १९२१ | २ | |
| ३४ | ७८० | अबिका स्तोत्र | भवानीनाथ | १९वीं | १ | |
| ३५ | ५२०२(१) | अकबरनामा | | १८८५ | ४—८७ | जयपुर मे लिखित |
| ३६ | ४९२० | अकबरनामो | | १९वीं | १४ | |
| ३७ | ३५४९(७) | अकल बहादरारी बात | | ,, | ४९—५९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३८ | ३५५५(२०) | अकलरी वात | | १९वी | १२६–१३२ | |
| ३९ | ११२४(९) | अगडदत्त चोपई | सुमति हर्षदत्त शिष्य | १६७६ | ३२–३९ | * स० १६०१ मे रचित |
| ४० | ६२१ | अगस्तोदय तथा शुक्रोदय विचार | | १९वी | १ | |
| ४१ | ३५६२(१४) | अचलदास खीचीरी वारता | | १९७० | ११७–१३५ | * |
| ४२ | ९९४ | अजापुत्र चोपई | सुमतिप्रभ | १८२९ | ४२ | स० १८२२ में साचोर मे रचित लि. स्था बालोतरा |
| ४३ | ३५०९ | ,, रास | धर्मदेव | १८७० | १२ | स० १५६१ में सीणी ग्राम मे रचित, लि स्था षे(खे)टकपुर |
| ४४ | ३५४६(१८) | अजितसिंघजीरी वारता | | १९वी | १२५–१२६ | * |
| ४५ | ३५७३(४२) | ,, ,, रो कवित्त | | ,, | १०६ वाँ | * जीर्ण प्रति |
| ४६ | २३६८(४) | ,, ,, रो सीलोको | | १८४८ | ३२–३५ | * दाध्या मे लिखित |
| ४७ | १०९५ | अजित शातिस्तव | मेरुनदन | १९वीं | ८०–८१ | |
| ४८ | ३५७५(२) | ,, ,, | ,, | २०वीं | २४–२७ | |
| ४९ | ३५७१(४६) | ,, ,, | , | ,, | २३१–२३४ | |
| ५० | ३५७५(६) | अट्ठावीस लब्धिस्तवन | धर्मवर्धन | ,, | ३४–३७ | |
| ५१ | २८९३(११३) | अढारभार वनस्पति वर्णन | | १७वी | १६८ वाँ | |
| ५२ | २८९३(२७) | अढारनातरा चोपाई | हीरकलश | ,, | ६१–६४ | |
| ५३ | ३५४३(१) | अणगस | माणकसाह | १८८२ | १–२ | |
| ५४ | २८९३(१२७) | अणहिल्लवाड पत्तन राजावली | | १७वी | १९१ वाँ | * |
| ५५ | २०४२(१) | अतिचार तथा स्नात्र विधि | | १७८३ | १–९ | मगरवाडा मे लिखित |
| ५६ | ४२८७(१०) | अदीतवारकी कथा | भाव कवियण (?) गर्ग गोत्रीय अग्रवालमल्ल पुत्र | १८वी | ४९–७७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५७ | ५३१२ | अध्यात्म गीता | | १८८३ | ८५ | अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अप्राप्त, पाली मे लिखित |
| ५८ | ७५२४ | अध्यात्मविचार | | १८२७ | १६ | अन्त - अदेकरण जेवतना चोपडा माथी |
| ५६ | ७७४३ | अध्यात्म रामायण भाषा | राजसिंघ | १७८४ | १–३२ | * बाई सिरेकवरी लिखित, सावरमध्ये |
| ६० | २२०३ | अध्यात्म सार माला | नेमिदास | १८वीं | ६ | * स० १७६५ मे रचित |
| ६१ | ३५६७(३०) | अधूरा पूरा | | १६वीं | १५२–१५४ | |
| ६२ | २१४२(२) | अधूरै पूरैरा दूहा | | ,, | ५–६ | |
| ६३ | ५४१८(१६) | अनतचतुर्दशी कथा | | ,, | १२१–१२४ | |
| ६४ | ४६१४(१८) | अनत व्रत रास | ब्रह्मजिणदास | १८७१ | २१२–२१८ | |
| ६५ | ३५४६(११) | अनतराय साष(ख)लारी वारता | | १६वीं | ६३–६७ | |
| ६६ | ३५४६(६) | अनतराय साष(ख)लारी वात | | ,, | ६८–७१ | * |
| ६७ | ३८७८ | अनाथी सघी | खेमो | १७५६ | ४ | स० १७४५ मे कल्याणपुर मे रचित |
| ६८ | ५१०८ | अबजदी प्रश्न | | २०वीं | ८ | अपूर्ण |
| ६६ | ५४१८(३६) | अबजदी पाशावली | | २०वीं | १–१० | जैन विनती सहित |
| ७० | ३७४२ | ,, शकुनावाली | | १८वी | ३ | |
| ७१ | ३७५८ | ,, ,, | सतीदास | १८८२ | २४ | विक्रमपुर में लिखित |
| ७२ | २३७५(३) | अबोलानी वारता | सामलदास भट्ट | १६०६ | १०४–१३१ | सिंघासण बत्तीसी के अतर्गत |
| ७३ | ११२४(७) | अभयकुमार रास | | १६७५ | १से४६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७४ | २८९३ - (१२६) | अभयदेव सूरि गच्छ निर्णय | | १६१७ | १९०-१९१ | १९० वें पत्र मे अन्य ग्रन्थो के अवतरण है, १९१ वें पत्र में अन्य गच्छो के ३४ मुनियो की साक्षी है, पत्तन में लिखित लि क हीरकलश |
| ७५ | ४४५२(१६) | अभिसारिका वर्णन गीत आदि | | १८वीं | १८ वाँ | |
| ७६ | ११२४(१) | अमरतज राजा धर्मबुद्धि मत्री रास | रतन विमल | १६७५ | २-१८ | प्रथम पत्र अप्राप्त, स० १६०९ में रचित |
| ७७ | ७१४१ | अमरदत्त मित्रानद चरित्र रास | देवगुप्त चद्रसूरीश्वर | १७०० | २८ | स० १६०६ मे रचित, सारण-मध्ये, ऋषि कचरा भाभण-शिष्य लिखित |
| ७८ | ४३६१ | ,, ,, | ,, | १६१७ | १६ | |
| ७९ | २३६८(२) | अमरसिंघजी को सिलोको | | १९वी | २७-२९ | लि स्था दाध्या |
| ८० | ३२१३ | | | ,, | ३ | |
| ८१ | २०९७(१) | अमरसेन वयरसेन चोपाई | जयरग | १७७२ | १-१० | स० १७०० मे रचित, पत्तन मे लिखित |
| ८२ | ३८९३ | , ,, | पुण्यकीर्ति | १८वीं | १५ | स० १६६६ मे सागानेर में रचित |
| ८३ | ५११७ | ,, ,, | विजयहर्ष | १८४६ | २० | |
| ८४ | २०७८ | ,, ,, रास | राजसुन्दर | १८वी | २३ | स० १६९७ मे जालोर में रचित |
| ८५ | ११२२(५) | अमल री छद | राजो | १९वी | ३-४ | |
| ८६ | ६९०२ | अम्रितसागर | सवाई प्रतापसिह | ,, | २२८ | २, ३, ४, ५ वें पत्र अप्राप्त |
| ८७ | ४२०६ | ,, | ,, | १८७६ | २७८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८८ | ५८३९ | अभ्रितसागर | सवाई प्रतापसिह | १९वीं | ३३८ | अपूर्ण |
| ८९ | ६८३१ | ,, ,, | ,, | ,, | ४६७ | |
| ९० | ३७२१ | अयनाशकरण विधि आदि | | ,, | ३ | |
| ९१ | ७१३७ | अयवती सुकुमाल चौपाई | | , | ५ | रचना १७४१ |
| ९२ | ४०४८(२) | अयवती सुकुमाल स्वाध्याय | शातिहर्ष | १८९२ | १६–२० | लि क धनरूप हस, सऊपरा-ग्रामे |
| ९३ | २८९३(४६) | अर्ध प्रकरण वर्णन | | १७वीं | ८८वाँ | |
| ९४ | १८९०(९८) | अर्जुन गीता | धरमदास | १९वीं | ७६–७९ | |
| ९५ | ७७४४(२) | ,, | रुघनदास | १७५८ | ३–८ | |
| ९६ | २१३० | अर्जुन मालीरी चोपाई | मुक्तिनिधान | १८९३ | ५ | सुवाई गाम मे लिखित |
| ९७ | २१५६ | अरजन हमीररी वात | | १९वी | ५ | * |
| ९८ | ४४६१ | अर्बुदाचल श्लोक | विनीतविमल | १८वीं | २ | |
| ९९ | २८९३(३२) | अर्हत भेद नमस्कार | | १६१९ | ६६वाँ | |
| १०० | ४००४ | अरहन्नक मुनि चरित | जिनहर्ष सूरि | १९वीं | ६ | |
| १०१ | २८९३(७३) | अल्प बहुत्व विचार | | १७वीं | १३७–१३८ | |
| १०२ | ८६३ | अवतार गीना (चरित ?) | नरहरदास बारहठ | १८११ | ६०४ | |
| १०३ | २२१९ | ,, ,, | ,, | १८२६ | ६१ | पुनरासर में लिखित |
| १०४ | ७७२४ | अवतार चरित | नरहरिदास बारहठ | १७८६ | २९७ | |
| १०५ | ७७२९ | , ,, | ,, | १९१८ | ६४६ | |
| १०६ | ७७३३ | ,, ,, | ,, | १९१४ | ४४५ | हरिराम कबीरपथी द्वारा वदनार में लिखित |
| १०७ | ७३८७ | अवतीगज सुकुमाल चोपाई | जिनहर्ष | १९वीं | ६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०८ | १८३९(१२) | अवती सुकुमाल चोपाई | जिनहर्ष | १८३१ | ५७—६५ | |
| १०९ | २१४९ | ,, | ,, | १९वीं | ८ | रचना स० १७४१ |
| ११० | २३७४(९) | ,, | ,, | ,, | ३१—३४ | |
| १११ | ३५१०(२) | ,, ढाल | धर्मनरेंद्र | ,, | ३रा | |
| ११२ | ३५६७(१६) | अश्लील रासो | जैदेव | ,, | १३३ वाँ | |
| ११३ | ७७४५ | अश्वपरीक्षा | | १९४३ | ३६ | |
| ११४ | २०४१ | अष्टप्रकार पूजा | | १९वी | २ | |
| ११५ | ४७८४ | ,, ,, रास | उदयरत्न | १८२९ | ६१ | |
| ११६ | ५४१८(१९) | अष्टमी कथा | | १९वी | १४०—१४३ | |
| ११७ | ३५७५(४८) | ,, स्तवन | कान्ति | २०वी | २३६—२३८ | |
| ११८ | ४९१४(२४) | अष्टाणी वरतनो रास | शुभचन्द्र | ८७१ | २३१—२३२ | |
| ११९ | ३५७५(७) | अष्टापद तीर्थराज स्तवन | पद्मराज पाठक | २०वी | ३७—३८ | |
| १२० | ३५४३(५) | असज्झाय सज्झाय | | १८८२ | ९—१० | |
| १२१ | १७६७ | अक्षय तृतीया विचारादि | | १९वीं | १ | |
| १२२ | २८९३ (१३५) | आगमवचन चोपाई (कुमति विध्वसणाधिकार) | हीरकलश | १६२१ | २०२—२३९ | रचना स० १६१७ |
| १२३ | १००० | आगमसारोद्धार | देवचद | १९३१ | ८१ | |
| १२४ | २०३५ | ,, | | १९१८ | ६७ | |
| १२५ | ३५६२(१६) | आठपहोररा दूहा | | २०वीं | १३७—१३८ | |
| १२६ | २१४० | आणद सधि | श्रीसार | १८२४ | १२ | |
| १२७ | २१७७ | ,, | ,, | १६९६ | १२ | * लि स्था राजलदेसर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२८ | २२२० | आणद सधि | श्रीसार | १८वी | ६ | |
| १२९ | ३५७३ (३६) | ,, | ,, | १९वीं | ८६–९७ | |
| १३० | ३८७१ | ,, | ,, | १७६४ | ७ | लि. स्था कृष्णगढ |
| १३१ | ३८७९ | ,, | ,, | १७७३ | ६ | |
| १३२ | ५६०२ | आत्मप्रकाश चौपाई | धर्ममन्दिर | १८वी | २३ | रचना १७४२ |
| १३३ | ३५४८ (१०) | आत्मबोध सज्झाय | रूपचद | १८४५ | १–२ | तिमरी ग्राम मे लिखित |
| १३४ | ५४१८ (४) | आत्मसबोध रास | बनारसी | १८वीं | ८८–९१ | |
| १३५ | ३५७५ (५२) | आत्मोपरि स्वाध्याय | नयविमल | २०वी | २५०–२५१ | |
| १३६ | ३५७५ (६८) | आदिजिन गुहली | शिवचद्र | ,, | २९९–३०० | |
| १३७ | ३५७५ (९) | ,, वीनती | समयसुदर | , | ४४–४६ | |
| १३८ | ४९१४ (२०) | आदित्य व्रत कथा | सूरजी शाह | १८७१ | २२२–२२६ | |
| १३९ | ५३७६ (२) | , वार कथा | | ,, | ३१–४२ | |
| १४० | ५३७६ (१३) | ,, ,, (छोटी) | | ,, | १९७–१९९ | |
| १४१ | १८१८ (२) | आदिनाथ हमचडी | वर्धमान | १८वीं | ४–५ | |
| १४२ | ३५४९ (५) | आदीश्वर वीनती | | ,, | ४६–४७ | |
| १४३ | ४४२० | आनदमदिर रास | ज्ञानविमल | १८वीं | २१३ | ढाल दूहाबद्ध, अतिम पत्र अप्राप्त |
| १४४ | ७०९४ | आनद श्रावक | श्रीसार | १८७० | २२ | लि क साध्वी रत्ना, बावडीमध्ये |
| १४५ | ४०४२ | ,, सधि | ,, | १७५४ | १५ | लि क रुषमा |
| १४६ | ५४१८ (३२) | आनदाके दोहे | | १९वी | १७१–१७३ | दूहा स० ४१ |
| १४७ | ११२२ (२८) | आबूजीनो छद | रूपो कवि | ,, | २७वां | |
| १४८ | ३०२० (३) | आबूधरा छत्रीसी | महिराज | १८वीं | ३–५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४९ | ३०२०(२) | आबूधरा बत्रीसी | महिराज | १८वीं | १–३ | |
| १५० | ४९११(२) | आभूषण चितावणी | | १८७६ | ४१–४२ | |
| १५१ | ३५७३(४३) | आमणा | | १९वीं | १०६–१०७ | जीर्ण प्रति |
| १५२ | ६४६ | आर्द्रकुमार चोपाई | ज्ञानसागर | १७३० | १२ | |
| १५३ | ४०३५ | आर्द्रकुमार चौढालिया | समुद्र मुनि | १७३० | ३ | |
| १५४ | ३०३० | ,, चौपाई | ज्ञानसागर | १७७८ | १३ | |
| १५५ | ४८२३(२) | ,, रास | मान कवि | १८१९ | ९–११ | |
| १५६ | ६४८ | ,, धवल | कनकसोम | १७वी | ३ | |
| १५७ | १००८ | आराधना | अजितदेव | १६४७ | १० | वीरमपुरमे रचित |
| १५८ | २१३६ | ,, गद्य | समयसुदर | २०वीं | १० | |
| १५९ | ६५१ | ,, स्तवन | हीरसूरिशिष्य | १७वीं | ६ | अत्य पत्र अप्राप्त |
| १६० | ६०४५ | ,, प्रकरण | सोमसूरि | १८वी | ६ | |
| १६१ | ३४६८ | आराम शोभा चोपाई | दयासार | १७४९ | १६ | * स० १७०४मे मुलतानमें रचित |
| १६२ | ३५४९(१०) | आलणमी भाटीरा दूहा | | १९वीं | ७२–७३ | |
| १६३ | ३५७५(१२) | आलोचना स्तवन | कमलहर्ष | २०वीं | ५८–६२ | |
| ६४ | ३५७५(४२) | ,, ,, | ऋषभ | ,, | २०६–२११ | |
| १६५ | ३५७५(४५) | ,, ,, | ध्रमसीह | ,, | २२८–२३१ | |
| १६६ | ६६४ | आलोयणा छत्तीसी | समयसुदर | १७वीं | १ | |
| १६७ | ४४५२(६) | आवडीजी आदिके छद | | १८वीं | १३ वाँ | |
| १६८ | २१११ | आवश्यक पीठिका बालावबोध | सोमसुन्दर शिष्य | १७वी | ३९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १६९ | ७३४४ | आवश्यक विधि प्रकरण | जिनवल्लभगणि | १५वीं | ६ | |
| १७० | ११२२(५८) | आशा पुरुकरी माता छव | | १९वीं | ८१ वाँ | |
| १७१ | ४०५१ | आषाढ़ाभूति चतुष्पदिका | भावप्रभ | ,, | २ | |
| १७२ | ६२७ | आषाढ़ाभूति धमाळ | कनकसोम | १७७७ | ३ | |
| १७३ | ५४१८(७) | ,, चौपई | | १९वीं | ९७–१०१ | |
| १७४ | ६६६ | , धमाळ | ,, | १७१४ | २ | |
| १७५ | २१६७ | ,, ,, | ,, | १८वीं | ६ | |
| १७६ | ३५७३(१०) | ,, ,, | ,, | १९वीं | ३२–३३ | |
| १७७ | ५१२१ | ,, ,, | ,, | १८वीं | ५ | रचना १६३८ |
| १७८ | १०१२ | ,, रास | ज्ञानसागर | १८१३ | ९ | |
| १७९ | २०१५ | ,, ,, | ,, | १८वीं | १२ | |
| १८० | २०६५ | ,, ,, | ,, | १७६५ | ८ | |
| १८१ | २३७४ | ,, ,, | ,, | १९वीं | ७२–९९ | |
| १८२ | ३२४५ | ,, ,, | ,, | १८७४ | ६ | |
| १८३ | ३९१९ | ,, ,, | ,, | १७५१ | ५ | |
| १८४ | ८५५३ | ,, ,, | ,, | १९०५ | १६०–१६४ | |
| १८५ | ३९२० | ,, ,, | ,, | १६७१ | ३ | * |
| १८६ | ३५४६(१६) | आसथानजीरी वारता | | १९वीं | १२२ वाँ | |
| १८७ | २३९१ | आज्ञाविचार गीत | हीरकलश | १७वी | २३९ वाँ | |
| १८८ | ८०७२ | इखुकारी सधी | खेमराज | ,, | ५ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १८९ | २१६३ | ,, | ,, | ,, | २ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९० | ३५७३ | इखुकारी सधी | खेमराज | १९वीं | ६०–६१ | |
| १९१ | २२१७(१) | ,, | ,, | १७६० | १–३ | किसनगढमें लिखित |
| १९२ | ३५७३(४८) | इग्यारसकी कथा—गद्य | | १९वीं | ११९–१२० | अपूर्ण |
| १९३ | ४५७३ | इन्द्रिय-पराजयशतक | | १६२८ | ६ | |
| १९४ | ७२७३ | ,, | | १७वीं | ६ | |
| १९५ | ४०४३ | इलाकुमार चोपाई | ज्ञानसागर | १८४३ | ५ | रचना १७१९ |
| १९६ | ६५३० | ,, | ,, | १८वीं | ७ | |
| १९७ | ९०७ | इलाचीकुमार रास | ,, | १७५९ | १७ | * स १७१९में रचित, शेषपुरमें |
| १९८ | ९४९ | ,, | ,, | १७६५ | ५ | |
| १९९ | २०४५ | , | ,, | १८७२ | ९ | |
| २०० | २०९३ | ,, | ,, | १७६८ | १४ | |
| २०१ | १५६६ | ,, | ,, | १७९० | १७ | |
| २०२ | *२०९७ | ,, | ,, | १७७२ | १७–२२ | |
| २०३ | २३७४(३) | ,, | ,, | १९वीं | २०–२५ | |
| २०४ | ३०३१ | ,, | ,, | १८वीं | ११ | |
| २०५ | १५२२(१६) | इस्कचमन | | १९वीं | १० वाँ | |
| २०६ | ७८६ | ईश्वरी छन्द | कुअरकुशल | १८५१ | ४ | |
| २०७ | ७९९ | ईश्वरी छन्द | ,, | १९वीं | ५ | |
| २०८ | ११२२(४६) | ,, | ,, | ,, | ६३–६४ | |
| २०९ | २०३९ | ईसरशिक्षा | ईसर | १७वीं | २ | |
| २१० | ४९१४(२८) | उणतीसी भावना | | १८७७ | २४६–२४७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २११ | ५९७४ | उत्तमकुमार चोपाई | तत्त्वहस | १७९५ | ३१ | लि स्था जोधपुर |
| २१२ | ३२१९ | ,, रास | जिनहर्ष | १८६५ | १८ | वीजापुरमे लिखित |
| २१३ | ९६५ | उत्तराध्ययन कथा बालावबोध | | १८वीं | ८३ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २१४ | ५०९८ | उत्तराध्ययन गीत | | १७२२ | १३ | ,, |
| २१५ | २१६४ | उत्पत्ति बहुत्तरी | श्रीसार | १८वीं | १ | |
| २१६ | १८३९(६) | उतपति गीत | ,, | १८२९ | २७–३२ | |
| २१७ | २८३२(३) | उतपति नामौ | | १७७४ | ८१–८५ | |
| २१८ | २३११ | उदयपुर गजिल्ल | भोज | १९वी | ४ | |
| २१९ | २२४३ | उदयसिंघ मेडत्यारो सपखरो | | २०वीं | २ | |
| २२० | ३५७३(४६) | उदैपुररी गजल | खेताक | १९वीं | १०९–११० | स १७५७ मे रचना |
| २२१ | ३२३९ | उपकरणविधि आदि | | ,, | ६ | भुज नगरमे लिखित |
| २२२ | ४२८७(१३) | उपदेशको रासो | रामचद्र | १८वीं | ९८–११४ | स्वय कवि द्वारा लिखित रचना स १७२९ |
| २२३ | २१९४ | उपदेशमाला कथासग्रह | | १९वीं | २८ | १७वीं कथा पर्यन्त |
| २२४ | २२१३(२) | उपदेशसत्तरी | श्रीसार | १८३८ | २–४ | * कालुग्राममे लिखित |
| २२५ | ३५७५(४३) | ,, | ,, | २०वी | २११–२१६ | |
| २२६ | ११२२(१७) | ऊट तथा हाथीवर्णन | | १९वीं | १० वाँ | * |
| २२७ | ३५७५(७०) | ऋषभजिनदेशना | शिवचद्र | २०वीं | ३०५ वाँ | |
| २२८ | ३५७३(३१) | ऋषभदेवक्रीडा गीत | समयसुन्दर | १९वीं | ८१ वाँ | |
| २२९ | ९५४ | ऋषभत्रिवाहलो (धवल) | सेवक | १७११ | १६ | |
| २३० | ९७९ | ,, | ,, | १८११ | १३ | |
| २३१ | ३३७८ | ,, | ,, | १६२४ | ११ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २३२ | ३४६६ | ऋषभविवाहलो | सेवक | १७३४ | १३ | |
| २३३ | ३५७३(२७) | ,, | ,, | १९वीं | ७३–७९ | |
| २३४ | ६१०६ | ,, | ,, | १७२२ | २१ | |
| २३५ | ६९ | ऋषिभाषित | | १९६२ | ७ | |
| २३६ | ६१६६ | ऋषिभाषितकुलक | ,, | १७१५ | ८ | |
| २३७ | ७३३३ | ऋषिभाषितकुलक | | १८वीं | २ | |
| २३८ | २०५५ | ऋषिवदना | पासचद | १७१५ | ८ | |
| २३९ | २३६०(८) | एकलगिड वाराहरी वात | | १९वीं | ६१–६७ | |
| २४० | ३५४६(१९) | ,, वारता | | १८०७ | १२७–१३० | * |
| २४१ | ४४५२(५५) | ,, | | १९वी | १११–११३ | अपूर्ण |
| २४२ | ४९१५(६) | , | | १८८७ | १३६–१३९ | |
| २४३ | ७२६१ | एर्कावशति स्थानक प्रकरण | सिद्धसेनसूरि | १७६६ | १० | लि क सुमतिहस |
| २४४ | ३५६७(३) | एकातरारी वारता | | १८१३ | ९७ वाँ | |
| २४५ | ४०५५ | ,, | | १८७६ | ३ | |
| २४६ | २३२२ | एकादशी कथा | | १८५१ | ६० | |
| २४७ | ९०२ | ,, माहात्म्य चोपाई | विष्णुदास | १८३१ | २९ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २४८ | ३२८४(४) | ,, | हरिदास | १८१६ | १–११ | |
| २४९ | ७७४६ | ,, कथा भाषा (गद्य) | | १९१३ | ५१ | २६ कथाओका संग्रह |
| २५० | ४२९३(२) | एकादशी कथा सग्रह | | १९वी | १८ | * २० कथाओका संग्रह लि क जोशी नानगराम लि स्था लोलुवास (जयपुर) |
| २५१ | ५३० | एकाक्षरनाममाला | रतनू वीरभाण | १८५६ | २ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २५२ | ९०५ | ओ(उ)खा हरण | प्रेमानन्द | १९०३ | ७४ | |
| २५३ | ३२८९ | ,, | ,, | १९वीं | ३७ | * |
| २५४ | ३८४१ | औषधपुराण भाषा गद्य | | ,, | १२ | |
| २५५ | २३०९(३) | कृष्णध्यान | ईसरदास | ,, | १४–१५ | * |
| २५६ | २१०० | कृष्ण बारमास | किसनदास | १८वीं | १ | |
| २५७ | १८६८(४) | कृष्णरुक्मणी बेली | पृथीराज | १७९२ | १–६७ | |
| २५८ | २०७० | ,, | ,, | १७२२ | ४६ | |
| २५९ | २०९९ | ,, | ,, | १७९९ | ३३ | |
| २६० | ३५५७(२) | ,, सटीक | ,, | १७९१ | १–६९ | |
| २६१ | ३९४२ | , | ,, | १७३८ | ८१ | |
| २६२ | ३९४३ | ,, | ,, | १७९८ | ३५ | |
| २६३ | ३५४८(४) | ,, | ,, | १८वीं | १–७३ | |
| २६४ | ४८३८ | ,, | ,, | १७४५ | २४ | लि क. भाग्यविजय |
| २६५ | ४४५२(४७) | ,, | ,, | १८१७ | ८५–१०० | लि क प्रीतसौभाग्य |
| २६६ | ७७६९(४) | कृष्णलीला वर्णन | | १८५६ | २–७ | चित्र १ |
| २६७ | ६४२५ | कृष्णजीरो व्याहलो | | १९वीं | ४ | |
| २६८ | ३४७० | ,, ,, | | १८वीं | ८ | |
| २६९ | ७०३० | ,, | पदमकवि | ,, | ६४ | |
| २७० | २८२९ | कृष्णस्मरण तथा अकलबेल | अर्जुनजी | ,, | २ | |
| २७१ | २०५६ | कक्काबत्तीसी | जीवो ऋषि | १९वीं | २ | |
| २७२ | २३६८(१९) | ,, | | ,, | ६०–६३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २७३ | ३५७३(५७) | कक्काभास | विद्याविलास | १९वी | १५४वाँ | |
| २७४ | ७४४४(२०) | कक्कासज्भाय | श्रावक चोथो | १८८५ | ३२४–३२६ | |
| २७५ | ५२११ | कछवाहोकी वशावली | | १८८४ | ११४ | * |
| २७६ | २०४७ | कथलो | ज्ञानविमल | १८८४ | २ | |
| २७७ | ४०४६ | कनकावर्ती चोपई | जिनहर्ष | १९वीं | २३ | अन्तिम पत्र अप्राप्त |
| २७८ | ७७२०(२२) | कपडकुतूहल | | १८वी | ९वाँ | * |
| २७९ | ४०४७ | कपोत कपोतणीरी वारता | | १८५४ | १२ | |
| २८० | ६६३७(२) | कबीरजीकी वाणी | कबीर | १८११–१८१६ | १०९–१८७ | लि क रामदास |
| २८१ | ३५५७(१) | „ साखी | „ | १९वीं | १–११ | |
| २८२ | २०३२ | कयवन्ना चोपाई | जयरग | १८२३ | ३१ | |
| २८३ | २०९० | „ „ | „ | १७७९ | ३९ | |
| २८४ | २१८४ | „ „ | „ | १८वीं | २१ | |
| २८५ | २२०६ | „ „ | „ | १७६८ | १४ | |
| २८६ | ३८७४ | „ „ | „ | १८५५ | १९ | |
| २८७ | ३९२१ | कयवन्ना चोपाई | जयरग | १८वीं | १८ | |
| २८८ | ४०४८(१) | „ „ | „ | १८९२ | २२ | रचना १७४१ |
| २८९ | ६७३६ | „ „ | गुणसागर | १७१६ | १० | लि.क भरथ |
| २९० | ३८७५ | „ रास | „ | १८वीं | १५ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २९१ | ४०४९ | „ „ | „ | „ | ५ | लि क आर्या हीरा |
| २९२ | २०६२ | करगडू चोपाई | मतिशेखर | १७वी | १० | * |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २९३ | ३७६७ | करणकुतूहल सार | | १८वी | ९ | भाषामें ग्रहसाधन प्रकार वर्णित है |
| २९४ | ३७५६ | ,, | | ,, | २९ | |
| २९५ | ५९७६ | कर्मग्रन्थपचक | मतिच द्र | ,, | ११२ | |
| २९६ | १४०३ | कर्मविपाक | | १९वीं | ७ | भाषामें फलादेश वर्णित है |
| २९७ | १४४४ | ,, | | १९१९ | १५ | |
| २९८ | ३८१७ | ,, | | १८१९ | ५ | |
| २९९ | ४९१४(३३) | ,, काण्ड | गुणकीर्ति | १८७७ | २५१–२५५ | |
| ३०० | २०८८ | ,, रास | वीरचद | १८२० | ९ | |
| ३०१ | ३५७५(१९) | करमछत्तीसी | समयसुन्दर | २०वी | ८८–९१ | मुलतानमें रचित |
| ३०२ | ११२३(१२) | करसवाद | लावण्यसमय | १७वीं | ६९–७१ | * |
| ३०३ | ४४२५ | कलावती चरित्र | विजयभद्र | १६७६ | ४ | २रा पत्र अप्राप्त |
| ३०४ | ३८७२ | कलावती चोपाई | रायचद | १८७३ | ५ | |
| ३०५ | ९३३ | कलियुगमाहात्म्य | | १८६८ | २ | |
| ३०६ | ४०२० | कविकल्पलता | श्रीसार | १८७८ | ९ | * |
| ३०७ | २३१४ | कवित्त | | १९वीं | १ | |
| ३०८ | ३४३० | ,, | | १८वीं | ३ | |
| ३०९ | ३५६२(११) | ,, | | २०वीं | ६७ वाँ | |
| ३१० | ३५६७(१०) | ,, | | १९वीं | ११२ वाँ | |
| ३११ | ४४५२(५४) | ,, | | १८वी | १०९–११० | |
| ३१२ | ४४५२(७३) | ,, गीत आदि | | ,, | १२२ वाँ | |
| ३१३ | ४४५२(९५) | ,, | उदेराज | ,, | १३१ वाँ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१४ | ४९१५(२) | कवित्त गीत आदि | | १८८७ | २०—४१ | |
| ३१५ | ११२२(६९) | ,, छप्पै दूहा | | १८८८ | ८८ वाँ | |
| ३१६ | ३५४९(३) | ,, जेठवारा दूहा आदि | | १९वीं | ३१—३९ | |
| ३१७ | ३५५७(९) | ,, दूहा सग्रह | | १८वी | ९८-१०१ | |
| ३१८ | ४४५२(१०३) | ,, दूहा आदि | केसरसिंघ | ,, | १३६—१४१ | |
| ३१९ | ३५६७(१४) | ,, पद-दूहा | | १९वीं | १२९—१३१ | |
| ३२० | २०८५ | , बावनी | जिनहर्ष | १८५७ | १० | |
| ३२१ | ४४५२(२६) | ,, ,, | उदैराज | १८वी | २४—२६ | |
| ३२२ | ४४५२(४५) | ,, सवैया आदि | | ,, | ६१ वाँ | |
| ३२३ | ४४५२(९६) | कष्टावलीचक्र | | ,, | १२६ वाँ | |
| ३२४ | २८९३(८१) | ककस्वरस्वरूप | | १७वीं | १४३ वाँ | |
| ३२५ | ४९१५(१६) | कागदरी नकल | | १८८७ | ३९८—४०६ | * |
| ३२६ | २१८३ | कानड कठियारा चोपाई | मानसागर | १८८२ | १४ | |
| ३२७ | ३५५४(५) | ,, ,, | ,, | १९वीं | ६५—६७ | |
| ३२८ | ३८७३ | ,, ,, | ,, | १८४१ | ९ | |
| ३२९ | ४०५१ | ,, ,, | ,, | १८वीं | ८ | |
| ३३० | ४०५० | ,, विवाहलो | | १७०२ | ८ | |
| ३३१ | ३५६२(२) | काया नगरको कागद | | २०वीं | १२—१६ | * |
| ३३२ | १८२१ | कालक कथा | | १८वी | ६ | |
| ३३३ | २१९५(१) | कालकाचार्य कथा | | १९वी | १—७ | |
| ३३४ | ७३७७ | कालज्ञान भाषा | लक्ष्मीवल्लभगणि | ,, | ७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३५ | २७८४ | कालिका स्तोत्र | जयलाल | १९२७ | २ | |
| ३३६ | ३५४७(८) | कालिकाजी रा दूहा-सोरठा | लधो | १९वीं | ८६–८७ | |
| ३३७ | २३२९ | ,, स्तव | चन्द्रदत्त | १८९४ | १ | |
| ३३८ | २७८५ | ,, स्तोत्र तथा आरती | जयलाल | २०वीं | २ | |
| ३३९ | २२४६ | ,, की आरती | | ,, | १ | |
| ३४० | ४०५२ | कालीनाग दमण पवाडो | | १८वीं | ७ | |
| ३४१ | ५४३० | काव्यविधान | | १९वीं | ३३–४० | जैन श्लोकको मत्र मान कर उसके प्रयोग का वर्णन किया गया है |
| ३४२ | २३७५(२) | काष्ठ घोडा विक्रमजीतनी वारता | सामल भट्ट | २०वीं | ६१–१०४ | * |
| ३४३ | ३८८० | किसनजीरी ढाला | | १९वीं | ८ | |
| ३४४ | ११३१ | कुडलियाबावनी | धर्मवर्द्धन | १८०७ | ९ | |
| ३४५ | ११५२ | कुतुबशत | | १६७० | ६ | * |
| ३४६ | ७७५२(७) | ,, री वात | | १७२० | ९६–१०४ | लि क माधो |
| ३४७ | २१४६ | कुतुबुद्दीन शाहजादारी वारता | | १९०२ | १२ | |
| ३४८ | ७७२१(१०) | ,, | | १८२५ | १६६–१७७ | |
| ३४९ | ३५६७(२७) | कुपति रासो | | १९वीं | १४७–१४८ | |
| ३५० | ५९६१ | कुमति विध्वसण चौपाई | हीरकलश | १७वीं | ७ | रचना १६७७ |
| ३५१ | ९९३ | कुमारपाल रास | ऋषभदास | १८८० | १०८ | |
| ३५२ | १५६४ | ,, | हीरकुशल | १७वीं | १८ | रचना १६४० |
| ३५३ | ४९०४(१) | केरडावाली चौथमाताजीरी कथा | | १८६१ | १–३४ | लि क कल्याणसौभाग्य |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३५४ | ७१७२(१) | केवाट राजाकी कथा | | १९३६ | २७ | |
| ३५५ | ३५७३(५२) | केशकल्प आदि वैद्यक | | १९वीं | १३५ वाँ | |
| ३५६ | ११२३(१४) | केशी गौतम सधि | | १७वीं | ७५–७६ | |
| ३५७ | ३५७५(७७) | ,, अध्ययनार्थ | | २०वीं | ३१६–३२६ | |
| ३५८ | ११२२(५९) | कोटेसरनो छन्द | विसराम (?) | १९वी | ८२ वाँ | |
| ३५९ | ७३६ | कोकशास्त्र भाषा (काम विलास) | | १९१२ | ११ | अन्त मे 'काम समूह' नाम है |
| ३६० | ७३८ | ,, | | १८१४ | १२ | |
| ३६१ | १८३४ | ,, | नरबद | १८वी | ५ | |
| ३६२ | २८९३(४५) | खरतरगुरुनाम सस्तवन | हीरकलश | १७वी | ४ था | |
| ३६३ | २८९३(६०) | खरतरादिगच्छोत्पत्ति छप्पय | हीराणद | ,, | ११४ वाँ | |
| ३६४ | २८९३(९६) | खातचक्रादि विचार | | ,, | १३२ वाँ | |
| ३६५ | ५४१८(३०) | खिचडी रासा | | १९वी | १६८–१७० | |
| ३६६ | ४०९० | खीची अचलदासकी वात | | १८वी | ६ | स ३३ के समान |
| ३६७ | २१४३(२) | षी(खी)वै विजैरी वात | | १८६० | ४–७ | |
| ३६८ | ४४५२(१३) | खेजडला माताजीरी नीसाणी | मान कवीसर | १८०८ | १६ वाँ | |
| ३६९ | ४६८८ | खेटसिद्धि | | १८४८ | ६ | लि क चतुरविजयगणि |
| ३७० | ४६८९ | ,, | महिमोदय | १८४८ | ६ | लि क ज्ञानविजय |
| ३७१ | ४४५२(८४) | खेतरपालजीरो छन्द | कवि देव | १८वी | १२५ वाँ | |
| ३७२ | ३५५०(५) | खेतलाजीरो छन्द | | १९वी | ३९–४० | |
| ३७३ | २३७४(१२) | खेमासानो रास | लक्ष्मीरतन | १८५७ | ४३–४७ | |
| ३७४ | १८३९(५) | खदकमुनि चोढालीयु | | १८२९ | २३–२७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३७५ | ३५७५(१४) | खदकमुनि चोढालीयु | | २०वीं | ६६–७७ | |
| ३७६ | ३५७३(३८) | गउडी पार्श्व स्तवन | जिनचन्द्र | १६वीं | १०१ वां | |
| ३७७ | ४६१४(१४) | गजमुनि वीनती | | १८७१ | २०८ वां | |
| ३७८ | ६४३७(२) | गजसिहकुअर कथा | | १८वीं | २४–४८ | अपूर्ण |
| ३७९ | ३५७३(११) | गजसुकुमाल गीत | नन्नसूरि | १ वी | ३३–३४ | |
| ३८० | ३६२३ | ,  छढालीयो | केसव | १८वी | ३ | |
| ३८१ | १८१६ | ,,  ढाल | शुभवर्द्धन | , | १–४ | |
| ३८२ | ९४७ | ,,  विवाह | | १७८० | ७ | |
| ३८३ | २०८२ | ,,  सधि | मूलाऋषि | १६६५ | ८ | |
| ३८४ | ३५७५(२२) | ,,  स्वाध्याय | | २०वी | ९७–१०० | |
| ३८५ | ४०५६ | गजसुकुमाल चरित्र | | १८वी | १८ | अपूर्ण |
| ३८६ | ६५४१ | ,,  रास | | १८८७ | ८ | लि क सरूपचद |
| ३८७ | ९७५ | गणधरवाद बालावबोध भाषा | | १९वीं | ११ | |
| ३८८ | २८९३(२३) | गणविचार चोपाई | हीरकलश | १७वी | १३वाँ | |
| ३८९ | ३४४० | गणित ग्रथ साठीसो दोहा | महिमोदय | १७५७ | ९ | |
| ३९० | ४४५२(६९) | गणेशजीछन्द अमृतध्वनि | | १८वीं | १२० वाँ | |
| ३९१ | ३८११ | गतेष्टकरण विधि | | १९वी | २ | |
| ३९२ | ३५६२(१) | गरब चिंतामणी | रामचरन | १९५६ | १–११ | |
| ३९३ | ६०४१ | गर्भोत्पत्ति स्तवन | श्रीसार | १८वीं | ३ | |
| ३९४ | २२६९ | गागातेलीरी वात | | १९वी | २ | |
| ३९५ | ३५५३(५) | गाफल लावणी | विनैचद | ,, | १५७–१५९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३९६ | ३५५९(५) | गिदोलीरी कथा | | १९वीं | ६६–७० | |
| ३९७ | ३५५८(२) | ,, वात | | ,, | १–११ | |
| ३९८ | ५४५८(४) | ,, वारता | | १८५६ | १–२७ | जगमाल वारता |
| ३९९ | ३५६२(१८) | ,, गणगोरकी वारता | | २०वीं | १४६–१६१ | |
| ४०० | ८८४ | गिरनारकी गजल | कल्याण | १८८८ | ३ | |
| ४०१ | ४९१५(५) | गीत | | १८८७ | १३४–१३५ | |
| ४०२ | ४९१५(१५) | ,, कवित्त | | ,, | ३९५–३९७ | |
| ४०३ | ४१३६ | ग तगोविन्द भाषा | टी चैतन्यदास | १८वीं | ४७ | अत्य पत्र अप्राप्त |
| ४०४ | ७५५९ | ,, सज्झाय | | ,, | ४ | |
| ४०५ | ४४५२(९०) | गीत सवैया आदि | | ,, | १२८ वाँ | |
| ४०६ | २२९० | ,, सग्रह | जवानसिंह आदि | २०वीं | १२ | |
| ४०७ | ४९०४(३) | गीता माहात्म्य | | | ६५ वाँ | |
| ४०८ | २८९३(१०३) | गुजाकाचन सवाद | | १७वीं | १६३ वाँ | |
| ४०९ | ११२३(२३) | गुडी पारसनाथ छन्द | कुशललाभ | ,, | ८२–८३ | |
| ४१० | ११४३(२) | गुण एकादशी माहात्म्य | लागा मैडू | १९वी | ३८–९८ | |
| ४११ | ४०२२ | गुणकरड गुणावली चौपाई | ऋषि दीप (?) | १८२१ | २२ | |
| ४१२ | ४०५३ | ,, ,, | ,, | १९वी | २७ | लि क आर्या नाथी |
| ४१३ | ४८२० | ,, , रास | ,, | १८७४ | २० | |
| ४१४ | ६०२७ | ,, ,, | | १८३९ | १५ | स १७५७ मे रचना |
| ४१५ | ६५४२ | ,, ,, | | १८३३ | ३६ | लि क नवनिधिविजय |
| ४१६ | २१०३ | गुणरत्नाकर छन्द | सहजसुन्दर | १७४६ | १९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४१७ | २०२३(३) | गुणसागर भास | | १७३४ | ३–६ | |
| ४१८ | ३५६२(५) | ,, | | १६६७ | २१–३४ | |
| ४१९ | ४०१३ | गुणहरिरस | | १७९६ | ७ | |
| ४२० | ३५१४ | गुणावली कथा चोपाई | ज्ञानमेरु | १८वीं | ८ | |
| ४२१ | २०३३ | ,, | ,, | १७४३ | ७ | |
| ४२२ | ३८८१ | ,, | | १८४८ | २४ | |
| ४२३ | ३९६८ | ,, | दीपो | १८७१ | २६ | स १७५७ में रचित |
| ४२४ | ९५० | गुणावली गुणकरडरी वात | | १८वी | २–४ | |
| ४२५ | ४०५५ | ,, चरित्र चौपई | शांतिहर्ष | १८७४ | २१ | रचना स १५१३ |
| ४२६ | ९०६ | गुणावली बुद्धिप्रकाश रास | श्रुतसागर | १७वीं | १० | |
| ४२७ | ३९२४ | गुणावली रास | गजकुशल | १७१८ | १८ | |
| ४२८ | ५०६४ | ,, | ,, | १९वीं | २६ | |
| ४२९ | ३५६४(५) | गुरुचार | | १८६१ | २३–३२ | |
| ४३० | १९८४ | ,, विचार | | १७वीं | ३ | |
| ४३१ | ५१०३ | गुरुचेलारी कथा | | ,, | २ | त्रुटित पत्र |
| ४३२ | ३५७५(७३) | गुरुजी गुहली | | २०वीं | ३०७ वाँ | |
| ४३३ | २८९३(१२१) | गुरुपरम्परा गुर्वावली | हीरकलश | १७वीं | १७६–१७७ | |
| ४३४ | ७१८० | ,, ढाल | ज्ञानविमल | १९वीं | १२ | |
| ४३५ | ३५७५(२५) | गोडीजिन स्तवन | प्रीतिविमल | २०वी | १०४–१०६ | |
| ४३६ | १०९२ | गोडीजीरो छन्द | | १८९४ | ५ | |
| ४३७ | ३५७८(१०) | गोडी पार्श्व जिन चौदा स्वप्नस्तवन | समयरग | २०वी | ४६–४९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४३८ | ११२२(५६) | गोडीपार्श्व छन्द | | १९वीं | ७४–७५ | |
| ४३९ | २०५१ | ,, | रूपसेवक | १८वीं | ९ | |
| ४४० | २२१३(१) | ,, वृद्ध स्तवन | प्रीतिविमल | १८३८ | १–२ | |
| ४४१ | २०५२ | ,, ,, | नेमविजय | १८२९ | ४ | |
| ४४२ | ५४५८(३) | गोतम रासा | | १८३८ | ४ | |
| ४४३ | ७५६७ | गोतमपृच्छा चौपाई | | १७५६ | १३ | लि क मुनि गगजी |
| ४४४ | ६१२८ | ,, बालावबोध | जिनसूरि | १८८३ | ६८ | |
| ४४५ | ५४३६(७) | गोतम लघुस्तवन | समयसुन्दर | | ३८–४० | |
| ४४६ | ५०६९(२) | ,, स्वामी रास | उदयवत | १९०६ | ३–८ | |
| ४४७ | ५४३६(३) | ,, ,, | | | १७–२६ | |
| ४४८ | ७४४४(११) | गोतम रासो | | १८८५ | २०५–२१२ | |
| ४४९ | ३४९९ | गोपीचंद राजापद | | १९वीं | १ | |
| ४५० | ३५४६(३) | गोरखनाथजीरो छन्द | | ,, | १० वाँ | |
| ४५१ | ३०२७ | गोरखप्रमोद भाषा | | १७८४ | २ | |
| ४५२ | ४४५२(५) | ,, पतडा | | १८वी | १० वाँ | |
| ४५३ | ३५४६(५) | गोरभजीरो छन्द | | १९वीं | ११ वाँ | |
| ४५४ | २१६९ | गोराबादल कथा | जटमल | १८२८ | ९ | |
| ४५५ | २३६०(३) | ,, की बात | ,, | १९वी | ११–१७ | |
| ४५६ | ३५५५(२५) | ,, री बात | ,, | ,, | १५१–१५६ | |
| ४५७ | ३३८४ | ,, चोपाई | भाग्यविजय | १८०३ | ३१ | |
| ४५८ | ३३८५ | ,, ,, | हेमरतन | १९वीं | २९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४५९ | ३०२९ | गोराबादल चौपाई | लब्धोदय | १७९५ | २५ | |
| ४६० | ३३८६ | ,, ,, | ,, | १७५६ | ४१ | स १७०७में रचित |
| ४६१ | ४१५१ | ,, कथा आदि गुटका | | १८वी | ९० | १४ कृतियोका संग्रह |
| ४६२ | ७७५२(६) | ,, | हेमरतन | ,, | ५७–९५ | सादडीमे रचित |
| ४६३ | ४९२४(२) | ,, | जटमल | १७८७ | ९–१५ | लि क जयसौभाग्य |
| ४६४ | २३७७(५) | गोरावणे वीरनो सपषरो तथा घोडावर्णन | माधौ | १९वीं | ३०–३१ | |
| ४६५ | ३५७५(४१) | गौतम प्रश्नोत्तर स्तवन | ऋषभ श्रावक | २०वी | १९९–२०६ | |
| ४६६ | १८३९(१६) | गौतमरास आदि | | १८३३ | ११८–१४३ | |
| ४६७ | १८३९(८) | गौतमाष्टक | लावण्यसमय | १९वीं | ४०–४१ | |
| ४६८ | ६१८ | ग्रहण विचार | | ,, | ३ | |
| ४६९ | १७७७ | ,, | | ,, | २ | |
| ४७० | २५७४ | ,, | | ,, | २ | |
| ४७१ | ६४८ | ,, साधन | | ,, | २ | |
| ४७२ | ६७४ | ,, अनेक विचार | | ,, | ६ | |
| ४७३ | २८९३(१४) | ग्रहभाव फल | | १७वी | ९ वॉ | |
| ४७४ | ३२१४ | ग्रहलाघवसारिणी विधि | | १९२८ | ९ | |
| ४७५ | ३२४८ | ग्रहस्पष्टकरण विधि | | १८वी | ६ | |
| ४७६ | ५२७९ | ग्रहणविचार टीका | | ,, | ३ | |
| ४७७ | ४७२९ | घटीज्ञान | | ,, | १ | |
| ४७८ | ४४५२(७६) | घूघूचक्र | | ,, | १२३ वॉ | उलूक सम्बन्धी शकुन-विचार, ग्रन्तमे नाहरखान राजसिघोतरो छन्द है |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४७९ | ३५७३(८) | घोडावर्णन तथा वर्षावर्णन दूहा | | १९वी | ३०—३१ | |
| ४८० | ४९२४(१०) | घोडारा बखाण | | १७९३ | ११—१२ | |
| ४८१ | ४४५२(९३) | ,, बणाव | | १८वी | १३० वाँ | |
| ४८२ | १८१७ | चउपरवीचउपई | समयसुन्दर | ,, | २० | |
| ४८३ | ७७५ | चउसठी (योगिनी) छन्द तथा जगदम्बा छन्द | | १९वीं | १ | |
| ४८४ | ५१२३(२) | चक्रकेवली | | १८वी | २—११ | |
| ४८५ | ३५७५(७४) | चक्रेश्वरी स्तवन | | २०वीं | ३०७—३०८ | |
| ४८६ | ७१५४ | चतुर्मुकुटचन्द्रकिरण | | १८७७ | ३१ | |
| ४८७ | २८९३(३९) | चतुर्विंशति जिनगणधर सख्या वीनती | हीरकलश | १६१९ | ८४ वाँ | |
| ४८८ | २८९३(३३) | चतुर्विंशति जिनपचकल्याणक स्तोत्र | ,, | १७वीं | ६६—६९ | |
| ४८९ | ५३७६(२१) | , स्थानक सूची | | | २४३—२४८ | |
| ४९० | ६९१२ | चर्चा समाधान | | १९वी | २३६ | |
| ४९१ | ४९१४(५७) | चरित्ररत्नत्रय गीत | | १८७७ | ३१२—३१३ | |
| ४९२ | ९५९ | चातुर्मासिक व्याख्यान बालावबोध | सूरचद्र | १८वीं | १२ | |
| ४९३ | ३३८३ | ,, | | १७वी | २८ | |
| ४९४ | ६३६३ | ,, व्याख्यान पद्धति | | १९११ | ७४ | लि क. टेकचद |
| ४९५ | ५१०५ | चार जणारी वात | | १९वी | ३ | |
| ४९६ | ७२३१ | चार भावना (गद्य) | | १७वी | ११ | |
| ४९७ | ६२९२ | चारिप्रत्येक बुद्धचरित्र | समयसुन्दर | १६७६ | २७ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४९८ | ३५६२(१०) | चावडारो छन्द | चुनीलाल | २०वी | ६६—६७ | रचनास्थल—सोभत |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४९९ | ३२०५ | चित्तोडकी गजल | खेतल | १८वीं | २ | स १७४८में रचना |
| ५०० | ३५५०(४) | ,, | ,, | १९वीं | ३७–३९ | |
| ५०१ | ४४५३(३) | ,, | ,, | १८वीं | ६ | |
| ५०२ | ४८०६ | ,, | ,, | १९वी | २ | |
| ५०३ | ४८२२ | ,, | ,, | १७८३ | ५ | ३रा पत्र अप्राप्त |
| ५०४ | ३५४६(१७) | चित्तोड, जोधपुर, अजमेर आदिकी ऐतिहासिक हकीकत | | १९वीं | १२३–१२५ | |
| ५०५ | ४४५२(१०) | चित्रबन्ध काव्य | | १८वी | १३४–१३५ | |
| ५०६ | ३८८६ | चित्रसेन पद्मावती चोपाई | रामविजय उपाध्याय | १९वीं | १५ | |
| ५०७ | ३५७३(५३) | ,, सभूत चोढालीयो | जीवराज | ,, | १३६ वाँ | |
| ५०८ | ४७९७ | ,, चौपई | ज्ञानसागर | १८वीं | ३५ | |
| ५०९ | २८९३(७८) | चिहुत्तरजत्र विधि | हीरकलश | १७वीं | १४१ वाँ | |
| ५१० | ४२८७(१४) | चेतन गीत | मनराम | १८वीं | ११५–११६ | |
| ५११ | ७८१०(३) | चेतनदासकी वाणी | चेतनदास | ,, | २३०–२९८ | |
| ५१२ | २३६८(११) | चैत्यवदन | कमलविजय | १८४८ | ४० वाँ | |
| ५१३ | ४४५२(६१) | चोबोली राणीरी कथा | जिनहर्ष | १८वी | ११८ | |
| ५१४ | ७४४४(१३) | चोढ़ालियो (दानशील तपसवाद) | समयसुन्दर | १८८५ | २४५–२५३ | |
| ५१५ | ३१५८ | चौथकी कथा | | १८३३ | ४ | |
| ५१६ | २१३४ | ,, मातारी वात | | १९वी | २ | |
| ५१७ | ३२७७ | ,, ,, कथा | | ,, | ४ | |
| ५१८ | ३५४७(१४) | ,, ,, | | ,, | ९२–९३ | |

| क्रम | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५१९ | ३५६७(२२) | चौयकी कथा | | १९वी | १३८–१४१ | |
| ५२० | ४०६१ | ,, ,, | | १८वीं | ३ | बिलाडामें लिखित |
| ५२१ | ३५६३(१) | चौबीस एकादशीकी कथाऐ | | १७८६ | १–६० | |
| ५२२ | २८९३(५३) | ,, गति आगति विवरण | | १७वी | ८९–९० | |
| ५२३ | ६०९७ | चौबीस चौक | अमृत कवि | १८५३ | ७ | लि क भानुकीर्ति, जयपुर |
| ५२४ | ६९१८ | चौबीस तीर्थंकरोकी पूजाविधि | | १९वीं | ६९ | |
| ५२५ | १८३९(११) | ,, वडक स्तवन | धर्मविजय | ,, | ४८–५२ | |
| ५२६ | ३२०४ | चौवीसी स्तवन | जिनराज | १७६२ | ६ | लि स्था कालू |
| ५२७ | ३५७५(१) | ,, ,, | देवचद्र | २०वी | १–२४ | |
| ५२८ | ३५७५(३३) | ,, ,, | जिनराजसूरि | ,, | १४२–१५४ | |
| ५२९ | ११२२(२९) | चौवीस साखना कवित्त | | १९वी | २८ वाँ | |
| ५३० | २३६८(८) | चौरासी सीख प्रास्ताविक आदि | | ,, | ५१–५२ | |
| ५३१ | ७४२५ | चौसठ मार्गणा विचार | | ,, | १३ | |
| ५३२ | २३६०(७) | चदकवररी वात | | ,, | ५५–६१ | |
| ५३३ | ३५५५(२६) | ,, | हस कवि | , | १५६–१५९ | |
| ५३४ | ३५६२(१२) | ,, वारता | ,, | १९७० | ६८–८१ | |
| ५३५ | ३५७३(४४) | ,, | | १८०८ | १०७–१०८ | |
| ५३६ | ४१४८ | ,, | | १८१६ | १८ | |
| ५३७ | ४९१५(१०) | ,, | | १८८७ | ३४८–३६० | |
| ५३८ | ४९११(३) | ,, | कविराय | १८३०–१८३२ | १–६ | |
| ५३९ | ५३४१(२) | ,, तथा स्फुट कवित्त | | १९वी | ५८–६७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५६१ | ३८८२ | चन्दराजा रास | लब्धिरुचि | १८२७ | ६१ | |
| ५६२ | ३९७० | ,, ,, | ,, | १८६६ | १३० | |
| ५६३ | ३९२५(१) | ,, ,, | ,, | १७७० | ५३ | अतमे पार्श्वनाथ गीताके ३६ पद्य लिखे है |
| ५६४ | ३९६९ | ,, ,, | ,, | १८२१ | ७६ | |
| ५६५ | ४०५९ | ,, ,, | मोहनविजय | १८१० | ८२ | |
| ५६६ | ६३४९(२) | ,, नो रास | ,, | १९०६ | ७०–३५४ | लि क हरकचन्द पाडे |
| ५६७ | ७२४९ | ,, ,, | ,, | १८४७ | ६८ | स० १७८३मे रचना |
| ५६८ | ७४२० | • ,, | ,, | १८४९ | १२३ | लि क पृथ्वीराज |
| ५६९ | ११४३(१) | चदरायकी वात | बिदमजी | १९वी | २०–३५ | |
| ५७० | ६९१ | चद्रग्रहणाधिकार | | ,, | ५ | |
| ५७१ | २८९३ (१३८) | चद्रगुप्त सोल स्वप्न सज्भाय | हीरकलश | १७वी | २४३–२४४ | स० १६२२मे राजलदेसरमें रचित |
| ५७२ | ३५७५(६४) | चद्रप्रभजिनस्तवन | शवचद्र | २०वीं | २९६–२९७ | |
| ५७३ | ७४०७ | चद्रलेखा चौपाई | मतिकुशल | १७७८ | १८ | |
| ५७४ | ९५५ | चद्रलेहा चोपई | ,, | १७७४ | २० | लि स्था नापासर |
| ५७५ | १८२९ | ,, | हर्षमूर्ति | १७वीं | ५ | |
| ५७६ | २२२९ | ,, | मतिकुशल | १९७५ | २६ | |
| ५७७ | ३५०३ | ,, | ,, | १७६५ | २६ | |
| ५७८ | ३५३७ | ,, | ,, | १८३० | २३ | |
| ५७९ | ३५५०(३) | ,, | ,, | १९वी | १३–३६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५८० | ३८८४ | चद्रलेहा चोपई | मतिकुशल | १७६१ | २७ | लि स्था पीपाड |
| ५८१ | ३६२६ | ,, | ,, | १७७७ | १६ | लि स्था षै(खै)रवा |
| ५८२ | ३६७१ | ,, | ,, | १७७४ | १३ | |
| ५८३ | ४०६० | ,, चरित्र चौपई | ,, | १८०५ | १६ | स १७२८मे रचना |
| ५८४ | ४७८६ | ,, रास | ,, | १६वी | २४ | |
| ५८५ | ४७६५ | ,, ,, | ,, | १८वीं | २६ | |
| ५८६ | २२११ | चपक श्रेष्ठि चोपाई | समयसुन्दर | १७वीं | १० | |
| ५८७ | ५०६६ | चद्रायणा कथा | करमचन्द | १८वी | २ | |
| ५८८ | ५३७६(१८) | ,, ,, | मलयकीर्ति | ,, | २११—२१३ | |
| ५८९ | ४७४६ | चद्रार्की | | ,, | ११ | |
| ५९० | ५०६१ | छत्तीस अध्ययन गान | सागरचन्द्र | १६४२ | १५ | लि क हर्ष |
| ५९१ | ३५४६(११) | छत्रीस राजकुल नाम | | १६वीं | ७४ वाँ | |
| ५९२ | २८८३(१०८) | छाया ज्ञान | | १७वीं | १६५ | हीरकलशद्वारा लिखित |
| ५९३ | २८६३(११६) | छिन्नवइ जिन नमस्कार | हीरकलश | ,, | १७४—१७५ | |
| ५९४ | २८६३(४३) | ,, | ,, | ,, | ८६—८७ | |
| ५९५ | ४४५२(७८) | छींक चक्र | | १८वीं | १२३ वाँ | |
| ५९६ | ४३०८(३) | छीतरदासजीका सवैया | छीतरदास | | ४४७—४५५ | |
| ५९७ | ३६७० | छूटक दूहा | | १६वीं | ३ | |
| ५९८ | ६३२ | ज्योतिष (सार दूहा) | मेघराज | १८६६ | ४ | |
| ५९९ | ३५४७(३) | ,, दूहा | | ,, | १ ला | |
| ६०० | ३५४७(११) | ,, ,, | | ,, | ८६—९० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६०१ | ४८४७ | ज्योतिष वार्ताएँ | | १८४३ | ३० | |
| ६०२ | ५५२८ | ,, सार | कवि कृपाराम | १९०७ | ४७ | लि क. रामकुवार |
| ६०३ | ३५४६(१३) | जखरा मुखरारी वारता | | १९वी | १०७–११३ | * |
| ६०४ | ११२२(३) | जगडूनो छन्द | लीलो | ,, | २ रा | * |
| ६०५ | ११२२(१८) | ,, साहनो जस | | , | १० वाँ | * |
| ६०६ | ३५५४(२१) | जगदेव परमाररी वात | | १९२४ | ३२–४९ | |
| ६०७ | ४४५२(६४) | जगदेव पमाररा कवित्त | ककाली भाटण(?) | १८वी | ११९ वाँ | |
| ६०८ | ७१७२(२) | ,, री वात | | १९३६ | १–३५ | |
| ६०९ | ७७५३(१४) | ,, ,, | | १८३७ | ७१–८८ | अपूण |
| ६१० | ४९१६(१) | ,, ,, | | १८७५ | ४४ | |
| ६११ | ४४५२(७१) | जड भरथरा कह्या श्लोक आदि | | १८वीं | १२१ वाँ | |
| ६१२ | ६२० | जन्मकुण्डली विचारादि | | १९वीं | ६ | मारवाडके बखतसिह और जयपुरके राजाका युद्ध-वर्णन |
| ६१३ | ४८४८ | जन्मपत्री गणित | | ,, | २९ | |
| ६१४ | ४५२४ | ,, (क्रमब्रह्मनुल्य) | | , | २५ | |
| ६१५ | ६४३४ | ,, प्रकार | | १७५९ | ६ | |
| ६१६ | ७४२७ | जम्बू अज्भयण | | १८८० | ५८ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ६१७ | ४२७३ | ,, गुण रत्नमाल | | १९वी | ३३ | |
| ६१८ | ६२९८ | , , | आणद जेठूमल | २०वी | ३६ | |
| ६१९ | ४१५७ | ,, चरित्र रास | पदमचन्द मुनि | १९वी | ३३ | लि क परतावाई स्था अजमेर |
| ६२० | ७०४६ | ,, | | १८७२ | ५५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६२१ | ७५३३ | जम्बू चरित्र रास | | १७९६ | ६० | |
| ६२२ | ७६०३ | ,, | | १८६१ | ११३ | |
| ६२३ | ९२४ | जम्बू पृच्छा रास | वीरमुनि | १८८९ | १३ | स १७८८मे पाटणमे रचित |
| ६२४ | १०१० | ,, | ,, | १८१९ | १२ | स १७२८मे पाटणमे रचित |
| ६२५ | ५३७६(३) | जम्बू स्वामी कथा | | | ४२–८० | लि क विहारी,चूरूमध्ये लिखित |
| ६२६ | ७३५२ | ,, | | १८६६ | २० | लि क माणकचद |
| ६२७ | ६७३५ | ,, | | १८५६ | ७ | |
| ६२८ | ६७८१ | ,, | | १९वीं | ४ | |
| ६२९ | ३३७९ | ,, चरित्र | | १७वीं | १२ | |
| ६३० | ३४७१ | ,, ,, | | १८वीं | १६ | लि स्था चाटसू |
| ६३१ | २२३१ | ,, चोपाई | चद्रभाण | १८९३ | ३६ | सुवाई ग्राममे लिखित |
| ६३२ | ३४७२ | ,, ,, | देपाल | १५४८ | ८ | स १५२२मे रचित |
| ६३३ | ३५७३(१४) | ,, ,, | ,, | १९वी | ३८–४२ | जीर्ण प्रति |
| ६३४ | २१३१ | ,, ,, | पद्मचद्र | ,, | ५३ | १५ से २३ पत्र अप्राप्त |
| ६३५ | ३२८८ | ,, रास | नयविमल | १९४९ | ४९ | स १७५४मे लिखित |
| ६३६ | ३४७३ | ,, , | राजपाल | १६५९ | ३४ | स १६४२मे रचित |
| ६३७ | ३५६४(७) | जमानारा दूहा महामाईवायक | | १८६१ | ३५–४३ | |
| ६३८ | ३९२८ | जयविजय चोपाई | धर्मरत्न | १७वीं | २८ | स १५५१में आगरामे रचित |
| ६३९ | ६८८४ | जयसुख वैद्यक | | १७३३ | ८ | लि क मतिविमल |
| ६४० | ५४१८(१३) | जलगालण विधि | | १९वी | ११४–११६ | |
| ६४१ | ३५७३(५५) | जलाल गहाणीरी वारता | | १८१२ | १३९–१५१ | लि स्था ऊबरी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६४२ | ३५४६(८) | जलाल गहाणीरी वारता | | १६वीं | ६०–६७ | |
| ६४३ | ४४५२(३२) | ,, | | १८०७ | ३५–४० | |
| ६४४ | ४०६२ | ,, | | १८६० | २० | लि क देवचद |
| ६४५ | ७७६६(५) | ,, | | १८५६ | २–४२ | |
| ६४६ | ५८६५ | जलाल बूबना वारता सचित्र | | १८वी | ३२ | चि स १२ |
| ६४७ | ४२२ | ज्वरनो छन्द | काति | १८३८ | १ | |
| ६४८ | २३६२(७) | जसवर्तासहजीरा कवित्त | | १८वीं | ७ वाँ | * |
| ६४९ | ३५४८(६) | ,, तथा अजीतसिहजीरा कवित्त | | ,, | १ | * |
| ६५० | ११२२(४६) | जमालखांरी नीसाणी | | १९वी | ६२–६३ | * |
| ६५१ | ४०६४ | जामवती चौपई | सूरसागर (?) | १८४७ | ७ | लि स्था बीकानेर |
| ६५२ | ३४७४ | जालोर पार्श्व विविध ढाल स्तवन | पुण्यनदि | १७वीं | ५ | * |
| ६५३ | ६४६ | जालधरपुराण | हरदास | २०वी | ४३ | |
| ६५४ | ४८१७ | जिणरस | वेणीराम | १८४१ | १७ | |
| ६५५ | ३५७५(३१) | , | ,, | १९वीं | १७०–१७४ | स १७३९मे रचित |
| ६५६ | २८६३(१३३) | जिनकल्याणकस्तवन | हीरकलश | १६२१ | १६५–१६७ | |
| ६५७ | २८६३(१२२) | जिनचद्र सूरि गीत | ,, | १७वी | १७७ वाँ | |
| ६५८ | २८६३(१२४) | ,, | ,, | ,, | १८२–१८६ | |
| ६५९ | २८६३(१२५) | ,, | ,, | ,, | १८६–१८६ | |
| ६६० | २८६३(६४) | ,, स्तुति | विल्ह | ,, | १६० वाँ | |
| ६६१ | २८६३(३) | जिनप्रतिमाधिकार चोपाई | हीरकलश | ,, | २–३ | स १६२४में रचित |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६६२ | ३५५५(३१) | जिनरस | | १९वीं | १७०–१७४ | |
| ६६३ | ३५७५(५०) | जिनप्रतिमा स्थापन स्तवन | जिनहर्ष | २०वीं | २४१–२४८ | |
| ६६४ | ३९८५ | जिनरग बहुत्तरी | जिनरग | १८वीं | २ | |
| ६६५ | ३५७५(५४) | जिनरक्षित जिनपाल चोढालियो | उदयरतन | २०वीं | २५२–२६० | |
| ६६६ | ३५७५(६२) | जिनवाणी स्तुति | शिवचद्र | ,, | २९४–२९५ | |
| ६६७ | २३९८(१६) | जिनवीनती | कनककीर्ति | १९वीं | ५०–५१ | |
| ६६८ | ३५७५(७१) | जिनहर्षसूरि भास | | २०वीं | ३०५–३०६ | |
| ६६९ | ३५७५(६६) | ,, | शिवचद्र | ,, | २९८–२९९ | |
| ६७० | २८९३(३५) | जिनहससूरि गीत | | १७वीं | ६९ वाँ | |
| ६७१ | २१२५ | जिनाज्ञा स्तवन सविवरण | नेमिसागर | १८वीं | ५ | |
| ६७२ | ५०७३ | जिनेश्वर पूजा पद्धति | | ,, | १९८ | |
| ६७३ | ७४४४(३) | जीव विचार | | १८८५ | १२१–१२९ | |
| ६७४ | ३२०० | जीराउला पार्श्वनाथ स्तवन | सोमविजय | १७४५ | ३ | |
| ६७५ | ४९१४(२६) | जीवसिखामण रास | प्रभुचद्र | १८७७ | २४२–२४४ | स १८५८मे रचित |
| ६७६ | ४९०५(७-९) | जुवानीरा दूहा आदि | | | ३१–३६ | |
| ६७७ | ३५५५(१३) | जैतसी उदावतरी वारता | | १९वी | ९०–९५ | |
| ६७८ | ५४५६ | जैन बोल सग्रह | | ,, | ५३ | |
| ६७९ | ३५४३(६) | जोग पावडी | गोरखनाथ | १८८५ | १०–१४ | |
| ६८० | २५८३ | जोग बत्रीसी | सोम | १८वीं | १ | * |
| ६८१ | ४९१४(५४) | जोगीरासा | जिनदास | १८७७ | ३००–३०२ | |
| ६८२ | ५४१८(२०) | ,, | ,, | १९वीं | १४३–१४५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६८३ | ५४१८(२५) | जोगीरासा | भगोतीदास | १७वीं | १५२–१५४ | |
| ६८४ | ४२८७(४) | जोगी रासो | जिणदास | १७२६ | १४–१८ | लि क रामचद्र |
| ६८५ | २३०६(१) | झाडो | | १६वी | १–६ | |
| ६८६ | ५४१८(३१) | टडाणा गीत | | ,, | १७०–१७१ | * |
| ६८७ | ११२२(१२) | टाकरपचीसी | | ,, | ७ वाँ | |
| ६८८ | ३५६२(४) | डोकरीरी वात रो चुटकलो | | १६५६ | १८–२० | |
| ६८९ | ६८४१ | ढालपट्ट आदि | | १६वीं | ६६ | |
| ६९० | ४०६७ | ढ़ालसार | चोथमल | ,, | १६ | रचना स १८५६ |
| ६९१ | ३८८७ | ढ़ाळसागर | गुणसागर | ,, | १३१ | स १६७६ में रचना |
| ६९२ | ३९७२ | , | ,, | ,, | ६६ | |
| ६९३ | ६१२२ | ,, | केशराज | १८वी | १०१ | |
| ६९४ | ६७३७ | ,, | | १८६७ | ११६ | लि क. खुशालचद |
| ६९५ | ७२२४ | ,, | गुणसागर | १८वीं | ७७ | |
| ६९६ | ७३७५ | ,, | ,, | १७६८ | ७६ | |
| ६९७ | ४०३३ | ,, प्रबन्ध | ,, | १७७० | १०४ | |
| ६९८ | ४०६६ | ,, | ,, | १७५६ | ८६ | लि क जोधनजी |
| ६९९ | ६१३ | ढुढ़क पवाडो | अविचळ (?) | १८७४ | ६ | |
| ७०० | ११२२(२३) | ढुढ़ियानो छद तथा सवैया | प्रेमकवि | १६वीं | १६ वाँ | |
| ७०१ | ११४४(१) | ढोलामारवणी चोपई | | ,, | १–२८ | |
| ७०२ | २२०७ | ढोलामारू री वार्ता | | १८२८ | ८ | |
| ७०३ | १८८१(२) | ढ़ोलाजीकी वात | | १६वीं | २५–६६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७०४ | ५०८४(१) | ढोलामारू सचित्र | | १८३६ | १४ | चि स ३६ |
| ७०५ | ७७२०(१) | ढोलामारू चोपाई | कुशललाभ | १७५६ | १–२३ | |
| ७०६ | ६४३८ | ढोला मरवणी ,, | ,, | १८वीं | २४ | स १६७३ में रचना, लि स्था –जेसलमेर |
| ७०७ | ५८९६ | ढोला ,, रा दूहा सचित्र | | ,, | ६१–११४ | स १५३०मे रचित, चि स ३३ |
| ७०८ | ७७४७ | ,, मारूनी वात | कुशललाभ | | ५६ | |
| ७०९ | ६७२० | ,, ,, रा दूहा | | १९वीं | ४७ | |
| ७१० | ४९२४(१३) | ,, ,, री चौपाई | ,, | १७७० | १–३४ | |
| ७११ | ३५७३(२) | ढढणस्वाध्याय | जिनहर्ष | १९वीं | १७ वाँ | |
| ७१२ | ७७४८ | तर्कप्रबन्ध | सरूपराम | ,, | ५७ | |
| ७१३ | ७००७ | ताजिकसार भाषा | | १८२० | २९ | |
| ७१४ | ३५६७(२५) | तारादे लोचनारी सज्झाय | हर्षकुशल | १९वीं | १४६–१४७ | |
| ७१५ | २३६८(५) | तारातबोलरी वार्त्ता | | | ३७–४० | * |
| ७१६ | २५८१ | तिथ्यानयन टीका | | १८वीं | १ | |
| ७१७ | १७४६ | तिब्ब सहावी फारसीकी भाषा | सीताराम | १८३० | ५२ | |
| ७१८ | ४८७५ | तुरक शकुनावली | | १८५० | २९ | |
| ७१९ | ११४४(६) | तेजपाल व्ययवर्णन तथा नागोर चित्तौडादिके ऐतिहासिक सवत् | | १९वीं | ४८ वाँ | * |
| ७२० | ७५३५ | तेजसिंहजीका सवैया | | १७४३ | १७ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ७२१ | ४९१४(५०) | तेरह काठिया | | १८७७ | २७९ वाँ | |
| ७२२ | ७६०४ | तडुल वेयालिय पइन्न | पाशचद | १८३३ | ४१ | लि क मोतीचद डूगरसी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७२३ | २३६२(१२) | तबावली कथा | हरजी जोशी | १८वीं | ७ | |
| ७२४ | ७२६५ | थावच्चा चोपई | समयसुन्दर | ,, | १८ | |
| ७२५ | ३५७५(७६) | थावच्चा मुनि चोढ़ालियो | क्षमाकल्याण | २०वीं | ३११–३१६ | |
| ७२६ | २२२८ | ,, सुत चोपाई | राजहरष | १८वी | १७ | |
| ७२७ | ३८८८ | ,, | समयसुन्दर | ,, | २५ | स १६६१मे रचित |
| ७२८ | ४६०४(२) | थावर देवतागी वात | | १८६१ | ३५–६५ | लि क कल्याणसौभाग्य |
| ७२९ | ४०६८ | थूलभद्र नवरसो | उदयरतन | १८४६ | ५ | स १७५९मे रचित |
| ७३० | ४८३२ | ,, | ,, | १८५२ | ८ | लि क राजविजय |
| ७३१ | ६२५५ | ,, | ,, | १८वीं | २ | |
| ७३२ | ७४४४(१४) | ,, | ,, | १८८५ | २५३–२६० | |
| ७३३ | ३५७३(२४) | थभण पार्श्वनाथ स्तवन | कुशललाभ | १९वीं | ६९–७० | |
| ७३४ | ७४२१ | वडकसस्तबक | | ,, | ९ | |
| ७३५ | ७४४४(५) | ,, प्रकरण | | १८८५ | १३६–१४३ | लि क नेमविजय |
| ७३६ | १९२१ | द्रव्यसग्रह बालावबोध | पर्वत धर्मार्थी | १६८९ | ४५ | |
| ७३७ | १८२६ | द्रौपदी चोपाई | कनककीर्ति | १७०७ | २० | स १६९३ मे जैसलमेरमे रचित |
| ७३८ | २१३२ | ,, | ,, | १७२९ | २९ | |
| ७३९ | ३४७५ | ,, | ,, | १७१८ | ३६ | डोल ग्राममें लिखित, माडवगढ़-पार्श्वे |
| ७४० | ३५३८ | ,, | ,, | १८वी | ३१ | |
| ७४१ | ९९६ | द्रौपदी रास | समयसुन्दर | १८५६ | २० | स १७००में अहमदाबादमें रचित |
| ७४२ | ६५३१ | ,, | कनककीर्ति | १८वी | ४१ | जैसलमेरमें रचना |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७४३ | ६३५६ | द्रौपदी रास | कनककीर्ति | १८१५ | ४० | |
| ७४४ | ६४१६ | द्वादश भावफल | | १६वीं | ४ | |
| ७४५ | १६६४ | द्वादश भावफल | | १७वीं | ४ | |
| ७४६ | २१६५(१) | दत्त ब्राह्मण कथा | | १६वीं | ७ वाँ | |
| ७४७ | ६४४६(५) | दत्तलालाको कक्को | दत्तलाल | ,, | ५—११ | |
| ७४८ | १८३६(१०) | दशपच्चक्खाण वर्णन | रामचद | ,, | ४४—४७ | |
| ७४९ | ४६१४ | दर्शनबत्तीसी | | १८७७ | २७७—२७८ | स १८५४में रचित |
| ७५० | २१७५ | दशवैकालिक भास | राममुनि | १७वीं | २४ | |
| ७५१ | ६८६ | ,, स्वाध्याय | वृद्धिविजय | १६वीं | ७ | |
| ७५२ | २८६३(८७) | दशाविचार कोष्ठक | | १७वीं | १४६ वाँ | |
| ७५३ | २८६३(११) | दशार्णभद्र गीत | हीरकलश | ,, | ६—८ | ६, ८वाँ पत्र अर्ध-त्रुटित |
| ७५४ | ६५४४ | ,, चौढालियो | दीपो | १६वीं | ३ | लि स्था अहिपुर |
| ७५५ | ६३६६ | दशावली | | , | ६ | लि क उपाध्याय पद्मउदयगणि |
| ७५६ | ३५७३(५) | दाढाला एकलमल्ल वराहरी वारता | | ,, | १८—२२ | स २२०के समान |
| ७५७ | ३५५६(६) | ,, री वारता | | ,, | १—१० | ,, |
| ७५८ | ४१४६ | ,, री वारता | | १८१७ | २३ | ,, |
| ७५९ | ११२२(६८) | दातार सूरनो सवाद | | १८८८ | ८७—८८ | |
| ७६० | ४३०८ | दादू वाणी आदि गुटका | | १८वी | ४१० | विभिन्न सतोके ४४४० पदो का सग्रह |
| ७६१ | ६६२६ | ,, | | १७८७ | २६८ | |
| ७६२ | ६६३७(१) | ,, | | १८११ | १०६ | लि क रामदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७६३ | ६९४८ | दादूजी का शब्द | | १८०० | ७८ | आद्यन्त शोभन |
| ७६४ | ६९५४(१) | ,, | | १९वी | ६५ | |
| ७६५ | ६९४९ | दादूजीकी साखी | | १८६९ | ९६ | लि क लक्ष्मणदास |
| ७६६ | ६९५० | ,, | | १८वी | ६७ | |
| ७६७ | २१०१ | दान लीला | | १९वी | १ला | |
| ७६८ | ८८१ | दानशील तपभावना सवाद | समयसुन्दर | १८वी | ४ | स १६६२में सांगानेरमे रचित |
| ७६९ | ९५२ | ,, | ,, | १९वीं | ४ | |
| ७७० | ९९५ | ,, | ,, | १७वीं | ६ | |
| ७७१ | १८३९(७) | ,, | ,, | १८२९ | ३२–४० | |
| ७७२ | २०४२(२) | ,, | ,, | १७८३ | ९–१२ | |
| ७७३ | २०८९ | ,, | ,, | १७०५ | ६ | |
| ७७४ | २३७४(११) | ,, | ,, | १९वीं | ३९–४२ | |
| ६७५ | ३२५६ | ,, | ,, | १८४१ | ५ | कृष्णगढ़में लिखित |
| ७७६ | ३२७१ | ,, | ,, | २०वीं | १८ | |
| ७७७ | ३५७३(५४) | ,, | ,, | १८१० | १३७–१३९ | |
| ७७८ | ३५७५(३६) | ,, | ,, | २०वीं | १७३–१८१ | |
| ७७९ | ३८६१ | ,, | ,, | १८वीं | ४ | |
| ७८० | ३९२७ | ,, | ,, | १९वीं | ४ | |
| ७८१ | ५४३६(९) | ,, | ,, | ,, | ४४ वां | |
| ७८२ | ५४३६(११) | ,, | दशार्ण भद्रराज | ,, | ४६–५९ | |
| ७८३ | ६८४५ | ,, | | ,, | ४५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७८४ | ५६६७ | दानादिक सवाद | समयसुन्दर | १६६२ | ५ | |
| ७८५ | ५४१८(१७) | दानाधिकार | ,, | १९वीं | १२४–१३७ | |
| ७८६ | ११२४(१०) | दामनक चोपाई | दयाशील | १६७६ | १–९ | * |
| ७८७ | २१७९ | ,, | चारित्रसुन्दर | १८३० | ९ | |
| ७८८ | ३५२४ | दिक्कुमारी वर्णन | | १७वीं | ४ | |
| ७८९ | २८९३(१२०) | दिनमानकुलक | हीरकलश | ,, | १७५–१७६ | |
| ७९० | ७७२०(२४) | दिल्ली पातसाहीरो विवरो | | १८वीं | १२–१८ | |
| ७९१ | ४०१७ | दीवालीकल्प बालावबोध | जिनसुन्दर | १९वीं | २६ | |
| ७९२ | ३५५५(३) | दीपक बत्तीसी | केसौदास | ,, | १४ वाँ | |
| ७९३ | २१६१ | दुगोली गावरी गजल | अर्जुनचद्र | १९३४ | ५ | |
| ७९४ | ३५७३(३२) | दूहा | केसरसिह जैतावत | १९वीं | ८१ वाँ | |
| ७९५ | ४४५२(२८) | ,, | ज्ञान कवि | ,, | २६ वाँ | |
| ७९६ | ७७२१(१३) | दूहो जसवतसिहजी रो | जसवतसिह | १९३१ | २०० वाँ | |
| ७९७ | ६०१५ | देवकीरी चौपाई | | १९वी | ९ | |
| ७९८ | ३२७२ | देवकीना ढालीया | | १८९१ | २४ | |
| ७९९ | ४४५२(७९) | देवीचक्र | | १८वी | १२३ वाँ | |
| ८०० | ११२२(१) | देवी स्तुति | | १९वी | १ | |
| ८०१ | २३२८ | देवीजीकी स्तुति | | १९२० | १४ | |
| ८०२ | ३५६७(२९) | देसतरी छद | समधर कवि | १९वी | १५०–१५२ | |
| ८०३ | ७३७३ | देशना शतक | | १७वीं | १९ | |
| ८०४ | ४८५५ | दोषकेवली | | १८वी | १ | लि क. मानसिह |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८०५ | ६६२ | दोषावली | | १८२५ | ३ | |
| ८०६ | १७८५ | ,, | | १८वीं | ६ | |
| ८०७ | ३५५४(१६) | ,, | | १९वीं | २७ वां | |
| ८०८ | ४९१४(५) | दोहाशतक | रूपचद | १८७१ | १६२–१६५ | |
| ८०९ | ११२३(३) | धन्नाचरित्र रास | मतिशेखर | १७वीं | २२–३० | स० १५१४मे रचित |
| ८१० | ११२४(३) | ,, | ,, | १६७५ | ३७–३९ | |
| ८११ | ३५७३(१५) | ,, | ,, | १९वी | ४२–४९ | |
| ८१२ | २०३४ | धन्ना रास | भावरत्न | ,, | ५६ | |
| ८१३ | ३५७३(२१) | धन्ना सधि | कल्याणतिलक | ,, | ६५–६७ | जैसलमेरमें रचना |
| ८१४ | ३५५०(१२) | धन्ना सज्झाय | | ,, | ८८ वां | |
| ८१५ | ३३८१ | धन्य विलास | कल्याण | १७वीं | ४३ | स० १६८५में रचित |
| ८१६ | ४९१५(१३) | धमाल | | १८८७ | ३८४–३८९ | |
| ८१७ | ४४५२(५१) | धमाल वसत | | १८वीं | १०७ वां | |
| ८१८ | २१८१ | धर्मदत्त धनवतीरी चौपाई | कुशलहर्ष | १८८२ | ४५ | |
| ८१९ | ५४१८(१५) | धर्मबत्तीसी | | १९वीं | ११९–१२१ | |
| ८२० | ८७० | ,, | धर्मसी | १८१५ | ७ | |
| ८२१ | ८८२ | ,, | ,, | १८८२ | ४ | |
| ८२२ | ३५५०(९) | ,, | ,, | १९वीं | ७५–७९ | |
| ८२३ | ७७५३(१५) | धर्मबावनी | | १८३७ | ६०–६९ | अपूर्ण |
| ८२४ | ७३६९ | धर्मबुद्धि चौपाई | लालचद | १७९० | १६ | |
| ८२५ | ४०६९ | ,, पापबुद्धि चोपई | ,, | १८२५ | २५ | स० १७४२मे रचना |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८२६ | ६५०(३) | धर्मबुद्धि पापबुद्धिरी कथा | | १८वी | ५–६ | |
| ८२७ | ३५५५(२३) | धर्मसिंघ बावनी | धर्मवर्धन | १६वी | १४६–१४६ | |
| ८२८ | ५२२३ | धर्मोपदेश | | ,, | १३ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ८२६ | ३५४६(१४) | धरातीथ गीत आदि | | ,, | ७५–७७ | |
| ८३० | १८८२(१३६) | ध्रुव चरित्र | परमानद | ,, | ७२–७५ | |
| ८३१ | २३६०(१०) | ध्रू चरित्र | गुपाल (?) | १८४७ | ३७–४६ | |
| ८३२ | ४८०८ | धामना वणन | | १६वी | ६ | |
| ८३३ | ५४३६(१२) | नरकरो चोढालियो | गुणसागर | १८५३ | ३ | |
| ८३४ | ८७७ | नरसी मामेरू | प्रेमानद | १८६१ | १५ | |
| ८३५ | ६६५४(२) | नरसी माहेरो | | १८८८ | ६५–६६ | ६८वा पत्र अप्राप्त |
| ८३६ | ५२०२(२) | ,, | वसन्त | १८८५ | ८७–६१ | |
| ८३७ | ६५२ | नलदवदती चोपई | समयसुन्दर | १७७४ | २८ | स १६७३में रचना आणदनगर मध्ये |
| ८३८ | ११२३(२५) | ,, | | १७वीं | ८६–६४ | |
| ८३६ | ३८८६ | ,, | ,, | १७७६ | ७२ | |
| ८४० | ३६३१ | ,, | मेघराज | १६८६ | २७ | |
| ८४१ | ४०७० | ,, | समयसुन्दर | १८३६ | २५ | |
| ८४२ | १८८०(१) | नल राजाकी बात | | १६वीं | १–२५ | |
| ८४३ | २०५६ | नलायनोद्धार | नयसुन्दर | १६८५ | ६७ | |
| ८४४ | ३५६६(२) | नव आख्यान (नवरत्न) | | १६वी | १–११ | |
| ८४५ | ६३१ | नवकार बालावबोध | | १७वीं | ४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८४६ | ९६७ | नवकार बालावबोध | | १८वी | ११ | |
| ८४७ | २१५२ | ,, | | ,, | १० | |
| ८४८ | ३४९६ | ,, | | १७वीं | २ | |
| ८४९ | ६९१३ | नवकार मत्र दर्शन | | १९वी | १३५ | |
| ८५० | ३५७५(३९) | नवकार वाली स्तवन | राजसोम | २०वी | १९१—१९५ | |
| ८५१ | ७६६७ | , वालीनी सज्भाय | लब्धिविजय | ,, | १ | |
| ८५२ | ३५५४(१५) | नवकार सज्भाय | | १९वी | २६ वॉं | |
| ८५३ | ३५१९ | नवग्रह छद | शकर | ,, | ५ | |
| ८५४ | ९७० | नवतत्त्व बालावबोध | | १७वीं | १७ | |
| ८५५ | २११९ | ,, विचार | | १६०२ | ६९ | |
| ८५६ | ३२९३ | ,, सग्रह बालावबोध | | १८७५ | ६८ | |
| ८५७ | २८९३(२५) | नवनिदान कुलक चौपाई | होरकलश | १७वीं | ५९- ६० | |
| ८५८ | ६४१२ | नवपद पूजा | | १८८५ | १४ | |
| ८५९ | ३५७५(२६) | ,, स्तवन | जिनलाभ | २०वी | १०९—११३ | |
| ८६० | २०४९ | नववाड सज्भाय | जिनहर्ष | १९वी | ५ | |
| ८६१ | २०६० | ,, | | १७वी | ४५ | |
| ८६२ | ३५६६(१) | नवरत्न नव आख्यान | | १६८७ | ४—१० | |
| ८६३ | ३५६६(३) | नवरस काव्य | नारायणदास भरूची | १७वी | १८—२६ | |
| ८६४ | २६५५ | नवार्ण पद्धति | | १८८७ | १८ | |
| ८६५ | ५४६१ | नसीहतनामा और देवीदास के कवित्त | | १९वी | स्फुट पत्र | |
| ८६६ | १९८७ | नष्टजन्म विचार | | १७वी | ६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८६७ | ११२३(६) | नक्षत्रशकुनावली | | १७वीं | ५६–६० | |
| ८६८ | ३७७४ | , | | १६वी | १ | |
| ८६९ | २३७७(४) | नागदमण चोपाई | | १८०७ | १६–२६ | चोबारी ग्राममें लिखित |
| ८७० | ३५५५(१६) | नागदमण | | ,, | १२१–१२६ | |
| ८७१ | ३५७३(३३) | ,, | | ,, | ८२–८६ | |
| ८७२ | ३६३२ | ,, | | १७वीं | ४ | |
| ८७३ | ४४५२(४) | ,, | | १८वीं | ७–६ | |
| ८७४ | ७०७३ | ,, चोपई | साईदास | १८२४ | ६ | |
| ८७५ | २१६६ | ,, छद (यदुणतिपवाडो) | | १८५२ | ४ | |
| ८७६ | ८१८ | ,, | | १७७६ | ७ | |
| ८७७ | ६२८ | ,, | | १६वीं | ५ | |
| ७७ः | ६३६० | ,, | | १८वीं | ४ | |
| ८७९ | ४६२४(३) | नागदमण कथा | | १७८७ | १५–१८ | |
| ८८० | ३०३६ | नागमाता चोपाई | | १८वीं | ६ | |
| ८८१ | ३५५०(११) | ,, | | १६वीं | ८४–८७ | |
| ८८२ | १८३० | नाग मतु | | १७वी | ४ | |
| ८८३ | ४४५२(२२) | नागमतर | | १८वी | २३ वाँ | सर्प-विष उतारनेके मत्र हैं |
| ८८४ | ३८४२ | नाडी परीक्षा | | १६वी | २ | |
| ८८५ | ५०६६ | नाडीला भवदेव रास | समयसुन्दर | १७४१ | ५ | |
| ८८६ | ४३१२ | नाथियाका सोरठा | | १६वी | ११ | |
| ८८७ | २३७५(५) | नापिकनी वारता | सामलदास | १६०६ | १७६–१६६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८८८ | ६९३७(३) | नामदेवजीका सबद | | १८११ | १८७–२०१ | लि क रामदास नारायणा मध्ये |
| ८८९ | ४८३१ | नामप्रताप | रामचरण | १९वी | १२ | |
| ८९० | ७८१६(३) | नारायण लीला | माधोदास | १८३१ | | |
| ८९१ | ४४५२(५०) | नासिका विचार | | १८वी | १०७ वाँ | |
| ८९२ | २१४१ | नासकेतु आख्यान | जगन्नाथ | १८६४ | १५ | |
| ८९३ | ३५५५(७) | नासकेत कथा बालावबोध | | १८२७ | १–९ | |
| ८९४ | ३५७३(४१) | ,, | | १ वी | १०२–१०६ | |
| ८९५ | ३५६३(२) | नासकेतरखेसरजीरी कथा | | १७८६ | ६४–७३ | |
| ८९६ | ६७४९(१) | नासकेतपुराण कथा | नददास | १९वी | ८८ | |
| ८९७ | ४२९३ | ,, भाषा | ,, | १८३७ | ४४ | |
| ८९८ | ६११० | ,, | ,, | १९वी | ५१ | |
| ८९९ | ३५७५(४०) | निगोद विचार स्तवन | क्षमाप्रमोद | २०वी | १९५–१९९ | |
| ९०० | ३२६४ | निर्णयसिद्धान्त भाषा | | १९वी | १४ | |
| ९०१ | ५४१८(३३) | निर्वाणकाण्ड | | ,, | १७३–१७५ | |
| ९०२ | ३५५७(१०) | नीसाणी | केसोदास गाडण | १८वी | १०२ वाँ | |
| ९०३ | ३५४९(१३) | नीसाणी कवित | | १९वी | ७४–७५ | |
| ९०४ | ४४५२(२२) | ,, | सूरज | १८वी | २४ वाँ | |
| ९०५ | १८३९(९) | नेमजीका बारहमास | श्यामगुलाब | १९वीं | ४१–४४ | |
| ९०६ | ३५०८ | नेमराजुल चुनडी | कातिविजय | , | २ | |
| ९०७ | ५३३० | ,, का सवैया | | ,, | २५ | |
| ९०८ | ३५२० | ,, बारमास | उदयरतन | १८वी | ४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६०६ | ७३०३ | नेमराजुल का बारमास | | १६वी | १ | |
| ६१० | ५०७७(२) | नेमराजीमती सज्झाय | | १८०२ | १ ला | |
| ६११ | २३६८(१२) | नेमनाथजी की वीनती बारमास | | १६वी | ४०–४२ | |
| ६१२ | २८६३(६) | नेमि गीत | हीरकलश | १७वीं | ४ था | |
| ६१३ | ११२३(२२) | नेमिनाथ चवाइण गीत | भाकड मुनि | ,, | ८१–८२ | |
| ६१४ | ३५५४(४) | ,, चोक | अमृत | १६वी | ६२–६४ | |
| ६१५ | ६८२ | ,, चौबीस चोक | ,, | १८६३ | ८ | |
| ६१६ | ३६३३ | ,, धवल | नयसुन्दर | १६६१ | ८ | |
| ६१७ | २१७० | ,, रास | कनककीर्ति | १७वीं | १० | |
| ६१८ | ३८६३ | ,, ,, | पुण्यरत्न | १७३५ | २ | |
| ६१६ | ३६३६ | ,, ,, | ,, | १७१६ | ४ | |
| ६२० | ६७८ | ,, विवाहलो | वीरविजय | १८६४ | ७ | |
| ६२१ | ६४० | नेमिजिन फाग | रङ्गसागर | १६वीं | ८ | वीसलनगरमें लिखित |
| ६२२ | ३६३५ | नेमिनाथ फाग | राजहर्ष | १८वीं | २ | |
| ६२३ | २३७४(५) | नेमिनाथ बारमास | रूपचद | १६वीं | २६–२७ | |
| ६२४ | २३७४(६) | ,, | देवविजय | ,, | २७–२८ | |
| ६२५ | २३७४(७) | ,, | कवियण | ,, | २८ वाँ | |
| ६२६ | ३२०३ | ,, | विनयविजय | १८वीं | २ | |
| ६२७ | २३६८(१७) | नेमिनाथ स्तवन | मनरूप | १६वीं | ५२–५४ | |
| ६२८ | ४६१४(३४) | नेमिनाथनी साखी | | १८७७ | २५५–२५६ | स १६७०में रचना |
| ६२६ | २८६३(५६) | नेमिनाथ हीडोलणा | हीरकलश | १६२५ | १११–११४ | स १६२५मे रचना |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६३० | २०१७ | नेमीश्वर स्नेह वेली | उत्तमविजय | १८७७ | ७ | |
| ६३१ | ३१६३ | ,, रागमाला स्तवन | मेरुविजय | १८वीं | ३ | |
| ६३२ | ३६२६ | नदद्वात्रिंशिका सार्थ | | ,, | २ | |
| ६३३ | ३६३० | नदबत्तीसी चोपाई | सिंघकुशल | १७१६ | ६ | |
| ६३४ | २०६४ | नदिषेण चोपाई | ज्ञानसागर | १८वी | १२ | |
| ६३५ | ३५७५(५६) | नदीश्वर स्तवन | | २०वी | २६१–२६२ | |
| ६३६ | ३५७५(६०) | नदीसूत्र सज्झाय | शिवचद्र | ,, | २६२–२६३ | |
| ६३७ | ६७२ | पृथ्वीचद्र कुमार रास | गुणसागर | १६७७ | ३ | |
| ६३८ | ४६०३ | पृथ्वीराज रासो | चदकवि | १६वीं | गुटका | जीर्ण प्रति |
| ६३९ | ७१२८ | ,, | ,, | १७४७–१७५७ | ६६ | ,, |
| ६४० | ७१५० | ,, | ,, | १८वीं | ,, | ,, |
| ६४१ | ७१६४ | ,, | ,, | १६४१ | ७६ | लि क चिरजी |
| ६४२ | ७१६८ | ,, | ,, | २०वीं | गुटका | |
| ६४३ | ७१६६ | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| ६४४ | ३५६२(१५) | पखवाडा | | २०वी | १३६–१३७ | १, २ पत्र अप्राप्त |
| ६४५ | ३५४६(१२) | पखप्रबोध | | १६वीं | ७४ वाँ | स १६२३में रचित |
| ६४६ | २८३१ | पचतत्र आदि वार्ताएँ | | ,, | १३६ | |
| ६४७ | ५४१८(२८) | पचगतिकी वेली | हर्षकीर्ति | ,, | १६५–१६७ | |
| ६४८ | २८६३(३१) | पचतीर्थी नमस्कार | | १७वी | ६६ वाँ | |
| ६४९ | २८६३(४०) | ,, | | ,, | ८५ वाँ | |
| ६५० | २८६३(४२) | ,, स्तुति | हीरकलश | ,, | ८६ वाँ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९५१ | २८९३(४१) | पचपरमेष्ठि नमस्कार | हीरकलश | १७वीं | ८५ वाँ | |
| ९५२ | ३५७५(६१) | पचमांग सज्झाय | शिवचद्र | २०वीं | २९३–२९४ | |
| ९५३ | २०३१ | पचमी कथा-गद्य | | १७८० | ७ | |
| ९५४ | १८६३ | पचमेरु पूजा | | १९वीं | ४ | |
| ९५५ | २०५४ | पचलघु तीर्थमाला स्तवन | | १९१८ | ५ | |
| ९५६ | ३५५४(१) | पचाख्यान बालावबोध | | १८८५ | १–५४ | |
| ९५७ | ११२२(१३) | पचागुली देवी छद | | १९वी | ८ वाँ | |
| ९५८ | ३५७५(४४) | पचेन्द्रिय चोपाई | | १८वीं | २१६–२२८ | |
| ९५९ | ३९३९ | ,, | | ,, | ४ | |
| ९६० | ५२९५ | पचेन्द्रिय चोपाई | | १८७२ | ५ | |
| ९६१ | ३९४० | पचेंद्रिय वेली | गेल्ह (?) | १७वीं | १ | |
| ९६२ | ४९१४(५८) | ,, | ठाकुरसी | १८७७ | ३१३–३३५ | |
| ९६३ | १८८२(१२८) | पद | मीरा | १९वीं | ६७ वाँ | |
| ९६४ | १८८२(२०६) | पद | ,, | ,, | १३२ वाँ | |
| ९६५ | १८९०(६३) | ,, | ,, | ,, | ५३–५४ | |
| ९६६ | १८९०(७४) | ,, | ,, | ,, | ६१–६२ | |
| ९६७ | १८९०(८२) | ,, | ,, | ,, | ६८ वाँ | |
| ९६८ | १८९०(८७) | ,, | ,, | ,, | ७०–७१ | |
| ९६९ | १८९०(८८) | ,, | नरसी | ,, | ७१ वाँ | |
| ९७० | १८९०(८९) | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| ९७१ | १८९०(९०) | ,, | मीरा | ,, | ७१–७२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९७२ | १८९०(९६) | पद | मीरा | १९वीं | ७६ वाँ | |
| ९७३ | १८९०(१०५) | ,, | ,, | ,, | ८२-८३ | |
| ९७४ | १८९०(११६) | ,, | ,, | ,, | ८९-९० | |
| ९७५ | १८८२(६९) | ,, | नरसी | ,, | ४८ वाँ | |
| ९७६ | १८८२(११०) | ,, | कबीर | ,, | ६१ वाँ | |
| ९७७ | १८८२(१३४) | ,, | मीरा | ,, | ६८ वाँ | |
| ९७८ | १८८२(१३५) | ,, | मुरलीदास | ,, | ६८-६९ | |
| ९७९ | १८९०(५२) | , | नरसी | , | ४८ वाँ | |
| ९८० | १८९०(१४४) | ,, | मीरा | ,, | १२६ वाँ | |
| ९८१ | १८९०(१४७) | ,, | ,, | ,, | १२७ वाँ | |
| ९८२ | १८९०(१८०) | ,, | नरसी | ,, | १४३ वाँ | |
| ९८३ | १८९०(१९८) | ,, | ,, | ,, | १५६ वाँ | |
| ९८४ | १८९०(२०४) | ,, | मीरा | ,, | १५८-१५९ | |
| ९८५ | १८९०(२०६) | ,, | ,, | ,, | १५९-१६० | |
| ९८६ | १८९०(२२३) | ,, | ,, | ,, | १७०-१७१ | |
| ९८७ | १८९०(२२७) | ,, | मीरां | ,, | १७३ वाँ | |
| ९८८ | ३५७५(६३) | ,, | शिवचद्र | २०वीं | २९५-२९६ | |
| ९८९ | ४९१४(१०) | ,, | सकलकीर्ति | १८७१ | २०७ वाँ | |
| ९९० | ४९१४(३१) | ,, | ,, | १८७७ | २४८-२४९ | |
| ९९१ | १८८२(१२७) | ,, द्वय | नरसी | १९वीं | ६६-६७ | |
| ९९२ | १८९०(९५) | ,, | ,, | ,, | ७५-७६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९९३ | १८८२(१६२) | पद | मीरा | १९वीं | ९४–९५ | |
| ९९४ | १८९०(३२) | ,, | ,, | ,, | ३४–३५ | |
| ९९५ | ३५७५(१६) | पद्मावती आलोचना | समयसुन्दर | २०वीं | ७९–८१ | |
| ९९६ | ११२२(१४) | ,, छव | हर्षसागर | १९वीं | ८–९ | |
| ९९७ | ४८०७ | पद्मिनी चौपई | हेमरतन | १८२७ | ५१ | |
| ९९८ | ४९१० | ,, | ,, | १९वी | ३१ | |
| ९९९ | ४०७२ | पदमसी पदमावती चोपाई | मुनिमाल | १८वी | २२ | |
| १००० | ७७२१(५) | पनर बादशाह शकुनावली | | १८२५ | ११८–११९ | |
| १००१ | २३०८(१) | पनरमी विद्या | वीरचद | १८९१ | १–१७ | |
| १००२ | २२१२ | ,, | | १९वीं | १३ | |
| १००३ | ३५५५(१७) | , | | ,, | १०३–११४ | |
| १००४ | ४९१६(६) | ,, | | १८८१ | ८४–९६ | |
| १००५ | ४४५२(४९) | ,, | | १८०५ | १०३–१०७ | लि क प्रीतिसौभाग्य गणि |
| १००६ | ३९३८ | परदेशी प्रतिबोध चोपाई | ज्ञानचद | १७९१ | २० | |
| १००७ | ४०७९ | ,, प्रबन्ध | ,, | १८४८ | ३१ | |
| १००८ | २०८५ | , राजा ,, | सहजसुन्दर | १७वीं | ८ | |
| १००९ | ११२३(५) | ,, ,, ,, | ,, | १६३६ | ३४–३९ | |
| १०१० | २१५९ | ,, ,, ,, | | १८८२ | १६ | |
| १०११ | ७४१२ | ,, प्रबन्ध | ज्ञानचद | १८४८ | ३१ | |
| १०१२ | ४८२७ | ,, राजारी चौपाई | | १८८५ | २९ | लि स्था बडली |
| १०१३ | ३५४६(१२) | परमार जगदेवरी वारता | | १९वीं | ९७–१०७ | स. ५५१ के समान |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०१४ | ५४१८(२९) | परमारि (प्रपाद) | गोपालदास | १९वीं | १६७–१६८ | |
| १०१५ | ३५४६(४) | परमेसरजीरो छव | हरख्प सेवग | १८१६ | १०–११ | |
| १०१६ | ३२४६ | परसोतम पुराण | | १८८१ | ११३ | |
| १०१७ | ३४७६ | प्रकीर्ण कथा | | १९वी | ५ | |
| १०१८ | ६३०४ | प्रत्येक बुद्ध चौपई | समयसुन्दर | १८६७ | २४ | |
| १०१९ | १००३ | ,, | ,, | १८९७ | ३१ | |
| १०२० | २१७८ | ,, | ,, | १७वीं | १० | |
| १०२१ | ६५२९ | ,, | ,, | १८२५ | २८ | लि क जैतसी |
| १०२२ | ११२४(५) | प्रतिमाधिकार वेलि | सामत | १६७५ | २ | |
| १०२३ | ५२७० | प्रद्युम्नप्रबध | कमलबधु | १८१३ | २८ | |
| १०२४ | ५२७४ | ,, | समयसुन्दर | १७३९ | २० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १०२५ | ५०६८ | प्रवेशीराय चौपाई | | १८९० | २९ | |
| १०२६ | ६०३३ | प्रबोध चितामणि चौपाई | धर्ममदिर गणि | १८५८ | ७७ | |
| १०२७ | ११२३(२१) | प्रस्थानमास दिनफल | | १७वी | ८० वाँ | |
| १०२८ | ५१३७ | प्रश्नोत्तरसार्धशतकनो बीजक | | १९वीं | ५७ | |
| १०२९ | १०४८ | प्रश्नोत्तरसार्धशतक भाषा | क्षमाकल्याण | १८६८ | १५ | |
| १०३० | २१९६ | ,, | ,, | १९वीं | ४९ | |
| १०३१ | ६३४९(१) | ,, | ,, | १९०६ | ७० | लि क. हरकचद |
| १०३२ | ४९१५(१४) | प्रश्नोत्तरी रत्नमाला | मंगनीराम | १९वीं | ३८९–३९५ | |
| १०३३ | ११४४(४) | प्रहेलिका आदि | | ,, | ३२–३५ | |
| १०३४ | ५१०१ | प्रहेली | जिनहर्ष | , | ५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०३५ | २३६८(१५) | प्रहेलिका | | १९वीं | ४६-५० | |
| १०३६ | २८९३(६७) | ,, | हीरकलश | १७वीं | ४ था | |
| १०३७ | ५३२९ | प्रश्नशकुनावली | | ,, | १२ | |
| १०३८ | ६८५४ | प्राकृतप्रबधसग्रह | मोहनविजय | १८६८ | ११९ | लि क. बखतावर |
| १०३९ | १८४२ | प्रास्ताविक गीत | | १९वीं | १ | |
| १०४० | ११२२(३०) | ,, | | ,, | २८ वाँ | |
| १०४१ | २८९३(९८) | ,, | | १७वीं | १६२ वाँ | |
| १०४२ | २८९३(१००) | ,, | | ,, | १६३ वाँ | |
| १०४३ | ३६७३ | ,, | | १८वीं | ६ | |
| १०४४ | २८९३(९) | ,, | | १७वीं | ५ वाँ | |
| १०४५ | ३०२६ | ,, | | ,, | ७ | |
| १०४६ | ३५५०(८) | ,, कुडलिया | धर्मवर्धन | १९वीं | ७०-७४ | |
| १०४७ | २८३२(५) | ,, दूहा | | १७७४ | ८८-८९ | |
| १०४८ | ३५६२(१७) | ,, | | २०वीं | १३९-१४५ | |
| १०४९ | ३५७३(४०) | ,, | | १९वी | १०१ वाँ | |
| १०५० | ३५७३(५०) | ,, | | ,, | १२८ वाँ | |
| १०११ | ३५५०(१०) | प्रास्ताविक बावनी | धर्मसी | ,, | ७९-८३ | |
| १०५२ | ११२२(२४) | ,, सुभाषित | | ,, | १७-२३ | |
| १०५३ | ४७९२ | प्रास्ताविक दूहा | | १८वीं | ३ | |
| १०५४ | ४८०९ | प्रास्ताविक दूहा | | १८वीं | ३ | |
| १०५५ | ४८१५ | ,, | | १८३९ | ३ | लि.स्था राजपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०५६ | ५३६५ | प्रास्ताविक दूहा | | १८वीं | ६ | |
| १०५७ | ४४५२ | ,, आदि | | ,, | १३२–१३४ | |
| १०५८ | ५३४५ | प्रास्ताविक पत्र | | १९वीं | ८ | |
| १०५९ | ९५८ | प्रियमेलक चोपाई | ,, | १७वीं | ४ | |
| १०६० | ९७४ | ,, | ,, | १७५५ | ६ | |
| १०६१ | १८१२ | ,, | ,, | १७१४ | ७ | |
| १०६२ | २०९७(२) | ,, | ,, | १७७२ | १०–१७ | |
| १०६३ | २२०१ | ,, | ,, | १८९० | ७ | |
| १०६४ | ४७९३ | प्रियमेलक चोपई | समयसुन्दर | १८वी | ७ | |
| १०६५ | ४८२१ | ,, | ,, | १७वीं | ६ | |
| १०६६ | ६८७५ | ,, | ,, | १९वीं | ८ | लि क लब्धकीर्तिगणि |
| १०६७ | १८९९(१) | प्रेमज्यौतिष | महिमोदय | १८१८ | १–१५ | |
| १०६८ | ४०७३ | पलकवरियावरी वात | | ,, | ३६ | लि क आखुजी |
| १०६९ | ४०७४ | पाण्डवचरित्र चौपई | लाभवर्द्धन | १७८५ | ५६ | स १७६७में रचित |
| १०७० | ७७२३ | पाडवविजय | मलूकदास | १९२९ | ३७७ | लि क जीताराम |
| १०७१ | १८३९(१३) | पाडवोकी सज्भाय | कान्ह सेवक | १८३१ | ६५–६७ | |
| १०७२ | २५६६ | पातसाह नामोपरि शकुनावली | | १९०८ | २ | |
| १०७३ | ३५५७(६) | ,, पातसाही भोगवी तिणरी विगत | | १७९१ | ७५–७७ | |
| १०७४ | ३५५०(१) | पाबुजीरी नीसाणी | | १९वीं | १–९ | |
| १०७५ | ३५६०(४) | पाबुधा धोलोतरा दूहा | | १८वीं | १–५ | |
| १०७६ | ४९१४(५५) | पार्श्वनाथ आदित्यवार कथा | | १८७७ | ३०२–३११ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०७७ | ३२६५ | पाराशरी भाषा टीका | परमसुख | १९वीं | ८ | |
| १०७८ | ३५५४(१७) | पाशा केवली भाषा | | , | २७–२८ | |
| १०७९ | २३६८(६) | ,, | | १८४९ | ४१–४९ | |
| १०८० | ६४३३ | ,, | | १९६९ | ७ | लि क रूपा साध्वी |
| १०८१ | ७६७० | ,, | | १९वी | ५ | |
| १०८२ | ५१२३(३) | ,, | | १८वी | १२–१९ | |
| १०८३ | ६२८२ | ,, | | १९वी | १६ | |
| १०८४ | २०४० | पार्श्वजिन स्तवन | दीपो | १८वी | ३ | |
| १०८५ | ९७६(२) | ,, | ,, | १९११ | २–४ | |
| १०८६ | ३५५०(२) | ,, | रूपसेवक | १९वीं | ९–१२ | |
| १०८७ | ३५७५(२८) | पार्श्वनाथ घग्घरनिसाणी छद | जिनहर्ष | २०वी | ११७–१२२ | |
| १०८८ | ११२२(९) | पार्श्वनाथ छद | | , | ५–६ | |
| १०८९ | ३५५५(३२) | ,, | | ,, | १७४ वाँ | |
| १०९० | ३५४८(८) | ,, रो छद | | ,, | १३–१४ | |
| १०९१ | २१०५ | पार्श्वनाथ देसतरी छद | राज कवि | १८वीं | १ | |
| १०९२ | २३२७(१) | ,, | ,, | १८६५ | २–९ | |
| १०९३ | ३५२२ | ,, | ,, | १८वीं | २ | |
| १०९४ | ३५७३(३४) | ,, | ,, | १९वीं | ८६–८८ | |
| १०९५ | ३५४६(६) | ,, | ,, | १८१७ | ११–१२ | |
| १०९६ | ३१९४ | पार्श्वनाथरागमालामयस्तवन | जयविजय | १८वीं | ३ | |
| १०९७ | ३९२५(२) | पार्श्वनाथराज गीत | उदयविजय | १७७० | ५३ वाँ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०९८ | ३५५९(४) | पार्श्वनाथ स्तवन | समयसुन्दर | १९वीं | ६५–६६ | |
| १०९९ | २३६४(१) | पिंगल सटीक | | ,, | ४७ | |
| ११०० | ४४५५ | पिंगल शास्त्र टीका | | १८७१ | २३ | |
| ११०१ | ७१४३ | पुडरीक कुडरीकनी ढाल | मुनि हर्ष | १९वी | ५ | |
| ११०२ | ३५७५(१७) | पुण्यछतीसी | समयसुन्दर | २०वी | ८१–८५ | स १६६९मे सिद्धपुरमे रचित |
| ११०३ | ११२३(११) | पुण्यपाल राजरिषि चउपई | सौभाग्यसेखर | १७वी | ६२–६९ | स १६४१में रचित |
| ११०४ | ३५७५(२९) | पुण्यप्रकाश स्तवन | विनयविजय | २०वी | १२२–१३० | |
| ११०५ | ५११९ | पुण्यसारचरित्र | हर्षचद गणि | १८७५ | ३ | स. १६६२में सागानेरमे रचित |
| ११०६ | ११२३(७) | ,, | विमलमूर्ति | १६३६ | ४६–५८ | |
| ११०७ | ३५३५ | पुण्यसार चोपाई | पुण्यकीर्ति | १७५१ | ६ | स १६६२में रचित |
| ११०८ | ३९३७ | ,, | | १८वी | ६ | ,, |
| ११०९ | ३९६५ | ,, | ,, | १७६५ | ४ | |
| १११० | ३८६४ | ,, | पुण्यरत्न | १७५४ | ७ | ,, |
| ११११ | ७५३० | ,, चोपाई | पुण्यकीर्ति | १८वीं | ५ | * |
| १११२ | ६४३७ | पुरदर कुवर कथा | मालदेव | , | ४८ | |
| १११३ | १८२२ | , चौपाई | ,, | १७वी | १० | |
| १११४ | ३८२६ | ,, चौपाई | रतनविमल | १९वीं | २१ | |
| १११५ | ३९४१ | ,, ,, | मालदेव | १७वीं | ७ | |
| १११६ | ४६७६ | पूर्णिमा विचार | | ,, | ४ | |
| १११७ | २५५४ | पूनम विचार | | १९वी | १६ | |
| १११८ | २५६० | ,, | | १८९४ | २४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११११ | ५३३२ | पूर्वदेश चैत्य प्रवाडो | | १८९४ | ३ | |
| ११२० | ११२२(६३) | पुरुषना कुलखाण छंद | | ,, | ८४ वां | |
| ११२१ | १८३७ | पुरुषनी ७२ तथा स्त्रीनी ६४ कला | | १७वीं | १ | |
| ११२२ | २३००(४) | पुरुषप्रतिस्त्रीका प्रीति लेख | | १८७९ | १९–३४ | |
| ११२३ | २३७५(१) | पुष्पसेन पद्मावतीनी वारता | सामलदास | १९०६ | १–६० | |
| ११२४ | ११४२(२) | ,, | ,, | १८वीं | १७–१०२ | |
| ११२५ | ३५७५(३१) | पैंतालीस आगम सज्झाय | धरमसी पाठक | २०वीं | १३८–१४१ | |
| ११२६ | ३५४७(१) | पोथी प्रेम दूहा | | १९वीं | १ | |
| ११२७ | ३५५५(४) | , | | १८२६ | १५ वां | |
| ११२८ | ३५७५(३८) | पौषधस्तवन | समयसुन्दर | २०वीं | १८६–१९१ | |
| ११२९ | ४९१४(१९) | पोस्तीनो रास | | १८७१ | २१८–२२२ | |
| ११३० | ४०७५ | ,, | | १८८२ | ४ | |
| ११३१ | ३५७३(३९) | फलवर्धि पार्श्वस्तवन | बखतो | १९वीं | १०१ वां | |
| ११३२ | ३९२ | फरासीस हकीमवैद्यक फुटकर औषध | | ,, | ७२ | |
| ११३३ | ७७५२(१२) | फुटकर औषध | | १८वीं | ११६–१२५ | |
| ११३४ | २३७१(३) | फुटकर कवित्त | | ,, | ५२ | |
| ११३५ | ३५६७(३१) | ,, | | ,, | १५५–१७६ | |
| ११३६ | ३५५७(४) | ,, | | ,, | ७२ वां | |
| ११३७ | ४९२४(१८) | ,, | | ,, | २७–२९ | |
| ११३८ | ३५६७(२) | ,, दूहा | | १९वीं | ७२–९६ | |
| ११३९ | ३५५७(७) | ,, ,, | | १७९१ | ७८–८१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११४० | ४९२४(७) | फुटकर ज्योतिष | | १७९३ | १४—१५ | |
| ११४१ | २३६८(१४) | फुटकर मंत्र | | १९वीं | ४४—४५ | |
| ११४२ | २३६८(२०) | ,, | | ,, | ६३—६७ | |
| ११४३ | ५२७२ | फूलकवरफूलकुवरीरी वात | | १९१२ | १४ | स १८५२मे रचित |
| ११४४ | ५०८१ | ,, | | १८९० | ७२ | चि स ४५ |
| ११४५ | ५५०० | फूलजीफूलमतीरी वात | | १८४९ | २६ | |
| ११४६ | ३५६७(१५) | फूलमाला | | १९वी | १३१—१३३ | |
| ११४७ | ३५६७(१७) | फूहडरासो | जैदेव | ,, | १३३—१३४ | * |
| ११४८ | ३५६७(२६) | ,, | | ,, | १४७ वाँ | |
| ११४९ | ३५७५(३) | बृहवालोचनास्तवन | राजसमुद्र | २०वीं | २७—३० | |
| ११५० | ३५४६(२२) | बराटीयाकी ऐतिहासिक हकीकत | | १९वी | १—२ | |
| ११५१ | ३५७५(११) | ब्रह्मचर्यनववाडसज्झाय | जिनहर्ष | २०वीं | ४९—५८ | |
| ११५२ | २८६२ | ब्रह्माडपुराण भाषा तथा पद्मपुराण भाषा | | १८०६ | २—११७ | |
| ११५३ | ४९१४(३७) | ब्रह्मजिणदासनी वीनती | | १८७७ | २५८—२५९ | |
| ११५४ | ७७४३(३) | ब्रह्मनिरूपण | राजसिंघ | १७८४ | ४६—५३ | लि क बाई सिरेकवँरी |
| ११५५ | ५८६७ | बगसीरामप्रोहितहीरांकीबात | कवितेण | १९वी | ६५ | * |
| ११५६ | ९७६(३) | बावीसअभक्ष्यबत्तीसअनतकाय-सज्झाय | लक्ष्मीरत्न | १९११ | ४—५ | |
| ११५७ | ७७५३(७) | बाभडवाड रो स्तवन | कमल | १८३७ | ३९—४१ | |
| ११५८ | १७५४ | बारमासफल वक्रीग्रहफल आदि | | १८७२ | १८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११५९ | १८०९ | बारव्रतकथा | | १६५७ | ११ | |
| ११६० | ३५६७(९) | बावनअख्यरो | कानडदासबारठ | १९वीं | १०९–११२ | |
| ११६१ | ३५७५(१३) | बारहभावना सज्झाय | जयसोम | २०वीं | ६२–६९ | |
| ११६२ | ३५६७(२८) | बारहमासो | | १९वी | १४९–१५० | |
| ११६३ | ४९१४(६२) | बाईजतननेलीलवणनीविगत | | १८७१ | ३२१ वाँ | |
| ११६४ | ७१३९ | बाईसपरीक्षाकीचोपाई | रामचन्द्र | १८२२ | ४ | |
| ११६५ | ४३२० | बातसग्रह | | २०वी | | चौबीस वार्ताओका सग्रह |
| ११६६ | ७८१७ | बावशाहीहाल | | १९वी | ८–५० | |
| ११६७ | ४९१४(२७) | बारहअनुप्रेक्षा | चन्द्रकीर्ति | १८७७ | २४४–२४६ | |
| ११६८ | ४७२१ | बारहपूनमरो विचार | | १९वी | १ | |
| ११६९ | ४७३७ | बारहभाव फल | | १८४० | ५ | |
| ११७० | ७४४४ | बारहभाव | | १८८५ | २६०–२७० | |
| ११७१ | ७७५४–(१,२,३) | बारहमासासग्रह | | १९२२ | १५ | |
| ११७२ | ४२८७(१५) | बारहमासो | रामचन्द्र | १८वी | ११६–१२७ | |
| ११७३ | ७६२१ | वालचन्द्रबत्तीसी | बालचन्द्र | १०वी | ७ | |
| ११७४ | २१०१(२) | बाललीला | | १९वी | १–३ | |
| ११७५ | २२५ | बालतन्त्रभाषावचनिका | कल्याण पण्डित | १८९५ | ८२ | |
| ११७६ | २८९३(१०१) | बिघडिया | हीरकलश | १७वीं | १६३ वाँ | |
| ११७७ | ११४१ | बिल्हणपचाशिका चोपई | ज्ञानसागर | १८०७ | २० | १,२ पत्र अप्राप्त |
| ११७८ | २२०२ | बीबीरोख्याल | | १९२३ | ३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११७६ | २०४२(३) | बुद्धिरास | शालिभद्र | १७८३ | १२–१४ | |
| ११८० | २०६८ | ,, | ,, | १८वीं | २ | |
| ११८१ | ३१६५ | ,, | ,, | १७वीं | २ | |
| ११८२ | ३४८० | ,, | ,, | १८वी | ८ | |
| ११८३ | ४१४२ | बुद्धिसेण चोपई | तिलकसूरि | १९वीं | ६६ | |
| ११८४ | ७५४२ | बोलविवरण | | १७वीं | ६२ | |
| ११८५ | ७७२१(१) | भगीपुराण | हरदास | १८२५ | १–२५ | |
| ११८६ | २२५७ | भडारी मानीरामजीरो गीत | | २०वीं | १ | |
| ११८७ | २२५६ | ,, सिवचन्दजीरो गीत | | ,, | १ | |
| ११८८ | ३५६७(१३) | भक्तबिडदावली | मलूकदास | १९वी | १२८–१२९ | |
| ११८९ | ५८८५ | भक्तसार | शालिग्राम | ,, | २२ | |
| ११९० | २८६१(१) | भगवद्गीता भाषा (गीतासार) | | ,, | ७५ | |
| ११९१ | ३७४० | भड्डली दूहा | | ,, | ८ | |
| ११९२ | ३५६४(८) | ,, पुराण | | ,, | १–३३ | |
| ११९३ | १८७७ | ,, ,, | | ,, | ६ | अपूर्ण |
| ११९४ | ३७५७ | ,, विचार | | , | १५ | |
| ११९५ | ५९८ | भड्डली वाक्य | | १८वी | ४ | |
| ११९६ | ५१२३(७) | ,, | | ,, | २९–४१ | |
| ११९७ | ८४५२(१७) | ,, दूहा पचीसी | | ,, | १९ वाँ | |
| ११९८ | ६७२८ | भड्डलीपुराण | | १८८१ | १२ | |
| ११९९ | ५१२२ | ,, रा दूहा | | १८२८ | ३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२०० | ४४५२(६८) | भड्डलीवाक्य | | १८वीं | १३२ वाँ | |
| १२०१ | ५८०० | ,, | | १६१३ | १४ | लि क ब्रजवासी |
| १२०२ | २०२३(१) | भमरगीता | विनयविजय | १७३४ | १–२ | |
| १२०३ | ३२०६ | ,, ,, | | १७६८ | ५ | |
| १२०४ | २३६८(१३) | भमर की सज्झाय | | १८४८ | ४२–४४ | |
| १२०५ | ७६३० | भरताधिकार | | १७६३ | ५३ | लि क त्रिकमजी |
| १२०६ | ३५४६(७) | भवानीजीरो छन्द | उदो | १६वीं | १२–१३ | |
| १२०७ | २३२६(२) | भवानीदासजीरो गीत आदि | साधूराम सेवक | ,, | ३–४ | |
| १२०८ | २५३३ | भवानीवायक | | १८६३ | ६ | |
| १२०६ | २२०६ | ,, | | १८७७ | ३ | |
| १२१० | १२५ | भागवतदशमस्कध भाषा | | १८२७ | ७५ | |
| १२११ | २८६३(३७) | भावनागीत | हीरकलश | १७वीं | ७० वाँ | |
| १२१२ | ४७६६(२) | भाषालीलावती | लालचन्द | १७७५ | १–१५ | बीकानेरके महाराजा रायसिंह के अमात्य कोठारी नैणसीके पुत्र जैतसीकी प्रार्थना पर उनके गुरु द्वारा प्रणीत |
| १२१३ | ७४१० | भुवनद्वारविचार | | १६वीं | २० | |
| १२१४ | ७७२२(१०) | भैरव आदिकी बोलीविचार | | १८वीं | १०७–११४ | |
| १२१५ | ३२५६ | भोगलशास्त्र (भूगोल) | | १८८७ | १६ | |
| १२१६ | ६७०२ | भोगलपुराण | | १७७२ | ३० | लि क टीकूदास |
| १२१७ | ३४७७ | भोजचरित्रचोपाई | | १७४० | ३५ | पत्र १४,१५,१६ अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२१८ | ११२३(४) | मगलकलशचरित्र | सर्वाणदसूरि | १७वी | ३०–३४ | |
| १२१९ | ३५१६ | ,, चोपाई | मगलधम | ,, | १२ | स० १५२५मे रचित |
| १२२० | ३५५४(७) | ,, ,, | लक्ष्मीहर्ष | १८८० | १–१२ | |
| १२२१ | ३६७४ | ,, ,, | लक्ष्मीकीर्ति | १८६६ | ३० | |
| १२२२ | ३५३३ | ,, फाग | कनकसोम | १७वीं | ७ | |
| १२२३ | २०२९ | ,, रास | दीप्तिविजय | १८७४ | ३३ | |
| १२२४ | २०८६ | ,, ,, | ,, | १८६६ | ४९ | |
| १२२५ | २८९३(११३) | मगध आदि देशके नगर तथा ग्रामो की सख्या | | १७वीं | १६८ वां | |
| १२२६ | ३४८८ | मत्स्योदरकुमाररास | पुण्यकीर्ति | ,, | १५ | |
| १२२७ | ४८२५ | मच्छोदर चोपाई | शातिहर्ष | १८४८ | २३ | लि क. क्षमासौभाग्य |
| १२२८ | ४७९८ | मदनवार्ता | खुशियालचन्द जालधरी | १८वीं | १० | |
| १२२९ | ४४५२(१) | मदन शत | | ,, | २ | अपूर्ण |
| १२३० | २१४३(१) | मदनशतकरीवार्ता | दान ? | १८६० | १–४ | |
| १२३१ | ११४२(३) | मधुमालतीचोपई | चतुर्भुजदास | १८वी | १०२–२११ | |
| १२३२ | २३६०(११) | ,, | | १९वी | ४७–५७ | अपूर्ण |
| १२३३ | ३५४७(४) | ,, | , | १८२८ | १–३३ | |
| १२३४ | ३५५५(१२) | ,, | ,, | १८२६ | ५८–८९ | |
| १२३५ | ३५५६(१) | ,, | ,, | १८४६ | १–७७ | |
| १२३६ | ५३५८(१) | ,, | ,, | १९वीं | १–९३ | |
| १२३७ | ३८९१ | ,, | ,, | १८५६ | ३२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२३८ | १५७८(२) | मधुमालती सचित्र | चतुर्भुजदास | १८७७ | १४१ | चित्र स० ८७ |
| १२३९ | ४०८४ | ,, | ,, | १९वीं | ६० | लि क. सेसमल |
| १२४० | ४३५१ | ,, कथा | ,, | १८८८ | ८१ | लि क तुलसीराम कनोजिया सवाईजैनगर |
| १२४१ | ४९११(१) | ,, ,, | ,, | १८३२ | १–४१ | |
| १२४२ | ५०८० | ,, ,, सचित्र | ,, | १८वी | १२५ | चित्र स० २७० |
| १२४३ | ५४५७ | ,, ,, ,, | ,, | १९वीं | २–८७ | चित्र स० ७५ |
| १२४४ | ४९१५(८) | ,, ,, वात | ,, | १८८७ | १४१–१९९ | |
| १२४५ | ५०७८ | ,, ,, | ,, | | २१६ | चित्र स० २२३ |
| १२४६ | ५४१८(१२) | मनभँवरागीत | कवि माल | १९वीं | ११३–११४ | |
| १२४७ | ४९१४(२९) | मनोरथमाला | | १८७७ | २४८ वाँ | |
| १२४८ | ३५४३(३) | मनमोहनपार्श्वनाथस्तवन | ज्ञानविमल | १८८२ | ६–७ | |
| १२४९ | ३५२५ | मनस्थिरीकरण विचार | सोमसुन्दर | १६वी | १३ | पत्र २,३,४ अप्राप्त |
| १२५० | २२६७ | मनसावचारी कथा | | १९१३ | १५ | |
| १२५१ | ७७५२(४) | मयणभट्ट दूहा | | १८७७ | ४८–५२ | |
| १२५२ | २३००(३) | मरदअस्त्रीकुलिवैतिणरी पैठ-दूहाबध | | १८७९ | १४–१८ | |
| १२५३ | २३००(२) | मरद प्रति लुगाइरी पैठ | | १८७९ | ४–१४ | |
| १२५४ | ४९१४(४४) | मरुदेवीनीसुलडी | | १८७७ | २७२–२७४ | |
| १२५५ | ५४२७(५) | मलयसुन्दरीचोपई | गोपालदास | १९वी | ६४–१८ | स० १६९९में रचित |
| १२५६ | २०२६ | ,, रास | कातिविजय | १७९६ | ८४ | स १७७५मे रचित |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२५७ | ३५५५(१५) | महादेवजीरो कह्यो मनछावाचा री वरत |  | १९वी | ९९–१०२ |  |
| १२५८ | ४४५२(१८) | महादेवजीरो छन्द | गागला | १८वी | १९ वाँ |  |
| १२५९ | ३७८९ | महादेवीसारणी |  | १९वी | ७६ | लि स्था नागोर |
| १२६० | ४९१४(५३) | महापुराणनी वीनती | गगादास पर्वतसुत | १८७७ | २८८–३०० |  |
| १२६१ | ६८५१ | महाबलमलयसुन्दरी रास |  | १९वी | २१ |  |
| १२६२ | ३५७३(४७) | महाभारतकी कथा |  | १८०८ | ११०–११९ |  |
| १२६३ | ३५६७(३२) | महामायावाक्य |  | १९वीं | १७७–१८० |  |
| १२६४ | ९१७ | महाराउरायधणजीरा छन्द | मोड़ू (?) गोदड | ,, | ४ |  |
| १२६५ | १८३२(१) | ,, |  | ,, | १–४ |  |
| १२६६ | ३५४६(२०) | महाराजअभैसिंघ देवलोक हुआ तिणसमियारीवारता |  | ,, | १३१–१४१ | * |
| १२६७ | ३५४६(१५) | महाराजजसवतसिंघजीरी वारता |  | ,, | ११५–१२२ |  |
| १२६८ | ४७४३ | महाराज दौलतसिंहजी जन्मोदाहरण |  | १८वीं | ८ | * |
| १२६९ | १८४५ | महावीरचरित्र बालावबोध |  | १७७४ | १४ |  |
| १२७० | ३५७५(८०) | महावीरजिनपचकल्याणस्तवन |  | २०वी | ३४०–३४६ |  |
| १२७१ | ३५७५(३२) | ,, स्तुति | जिनलाभसूरि | ,, | १४१ वाँ |  |
| १२७२ | ३५७५(१५) | ,, देवस्तवन | समयसुन्दर | ,, | ७०–७९ |  |
| १२७३ | ३५७५(८२) | , सत्तावीशभवस्तवन | शुभविजय | ,, | ३५२–३६० |  |
| १२७४ | ५४३६(५) | महावीरजीरो पारणो |  | ,, | ३३–३६ |  |
| १२७५ | ७३५९ | महावीरदशाठणजीमणवारविगत |  | १७६८ | २ |  |
| १२७६ | ७०५८ | महासतीसीताचरित्र | पुन्हकवि | १८७१ | ८८ | लि स्था अयोध्या |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२७७ | १०८६ | माणिभद्र छन्द | शातिसूरि | १८७० | ४ | |
| १२७८ | १०९१ | ,, | गुलाल | १९वी | ३ | |
| १२७९ | २०६७ | ,, | उदयविजय | ,, | २ | |
| १२८० | ३५४७(९) | माताजीरो छन्द | नरसिघ चारण | ,, | ८७ वाँ | |
| १२८१ | ३३४७(१०) | ,, | भगवान भोजग | ,, | ८८–८९ | |
| १२८२ | ३५४७(१२) | ,, | सारग कवि | १९वी | ९१ वाँ | |
| १२८३ | ३५४७(१३) | ,, | आढो दूरसोजी | ,, | ,, | |
| १२८४ | ४४५२(१२) | माताजीरो गीत | | १८०८ | १६ वाँ | लि क प्रीतिसौभाग्य |
| १२८५ | ४४५२(१०) | ,, री चरचा | | १८वी | १३ वाँ | |
| १२८६ | ४४५२(११) | ,, रो छन्द | बीकाजी | १८०७ | १४–१६ | |
| १२८७ | ४४५२(८५) | ,, ,, | कवि सारग | १८वी | १२६ वाँ | |
| १२८८ | ७७२१(११) | ,, ,, | चानणखिडिया | १९३१ | १७७–१७९ | लि क अमरसिंह |
| १२८९ | ९०४ | माधवानलकामकदलाचोपाई | कुशललाभ | १६४३ | १९ | * १६१६में जैसलमेरमे रचित |
| १२९० | ९१५ | ,, | ,, | १९वी | २५ | |
| १२९१ | ९१६ | ,, | ,, | १८९६ | २० | |
| १२९२ | २०९१ | ,, | ,, | १८वीं | २० | |
| १२९३ | २२२२ | ,, | ,, | १८२४ | १२ | |
| १२९४ | २३६०(९) | ,, | ,, | १९वी | १४–३७ | |
| १२९५ | ३५३० | ,, | ,, | १७३० | १४ | |
| १२९६ | ३५५५(१) | ,, | ,, | १८३१ | १–११ | |
| १२९७ | ३५६१(१) | ,, | ,, | १७२५ | गुटका | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १३१८ | ६५३४ | मानतुगमानवती चोपाई | मोहनविजय | १८७६ | ७६ | |
| १३१६ | ७३६६ | ,, | अभयसोम | १८२८ | ११ | |
| १३२० | ७५२८ | ,, | मोहनविजय | १८६२ | ८४ | |
| १३२१ | ८५५७ | ,, | ,, | १७६७ | ३५ | |
| १३२२ | ३२२२ | मामेरू | प्रेमानन्द | १८७४ | १६ | |
| १३२३ | २८६३(४७) | मारूदेशनिदा गीन | | १७वी | ८८ वाँ | |
| १३२४ | ४४५२(८०) | मासधि चक्र ? | ? | १८वीं | १२३ वाँ | |
| १३२५ | ३६७७ | मीयां बीबीरी वात | | १६वीं | २ | |
| १३२६ | ३४६८ | मीरा कबीर आदिके अनेक पद-सग्रह | | १८६० | २० | |
| १३२७ | २८६३(२६) | मुखवस्त्रिका विचार चोपाई | हीरकलश | १७वी | ६४–६५ | |
| १३२८ | ३४८२ | मुंज सबध | | १६वी | २ | |
| १३२६ | २०२१ | मुनिपतिचरित्र चोपाई | धर्ममन्दिर | १८४१ | २६ | |
| १३३० | २१३६ | ,, | , | १८१८ | ३१ | |
| १३३१ | २८६३(२४) | ,, | हीरकलश | १६१८ | १३–५८ | |
| १३३२ | ६५२६ | ,, | | १६वी | २१ | |
| १३३३ | ६३५५ | , | | १७६६ | ३१ | |
| १३३४ | ३४८१ | , चोपाई | | १५६६ | ३८ | स० १५५०में रचित |
| १३३५ | ३४६४ | ,, , | | १७वीं | ३५ | |
| १३३६ | ३६७८ | , ,, | धर्ममन्दिर | १८८६ | ५४ | |
| १३३७ | ३५७५(३७) | मुनिमालिका | चारित्र सघ | २०वीं | १८१–१८६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १३३८ | ३९७९ | मुनिमालिका | चारित्र सघ | १९वीं | २ | |
| १३३९ | ५४३६(४) | ,, | ,, | | २६–३३ | |
| १३४० | ६२७२ | ,, | कल्याण | २०वीं | २० | स० १६३६में रचित |
| १३४१ | ८७३ | मुमनाकलबिनी धर्मनी दवा | | ,, | ५ | |
| १३४२ | ११२३(१०) | मुष्टिज्ञान | | १७वीं | ६१ वाँ | |
| १३४३ | २५३१ | ,, | | ,, | १ | |
| १३४४ | ३३४१(१) | मुहता नेणसीरी ख्यात प्रथम भाग | मुहता नेणसी | | १–१०० | पत्र स० १,६,५३ ५४,५५,६८, ६९,८५,८६ ९६,९९,१०० अप्राप्त |
| १३४५ | ३३४१(२) | ,, द्वितीयभाग | ,, | | १०१–१९९ | पत्र स० १०१,१०७,११०, १११,११५ ११९,१२१-१२३, १३५,१६२-१६७,१६९,१७०, १९४ पत्र अप्राप्त |
| १३४६ | ३३४१(३) | ,, तृतीयभाग | ,, | | २००–३०० | |
| १३४७ | ३३४१(४) | ,, चतुर्थभाग | ,, | | ३०९–४०० | पत्र स ३०८,३२६,३३९,३४१, ३९०,३९४,३९९ अप्राप्त जीर्ण प्रति |
| १३४८ | ३३४१(५) | ,, पचमभाग | ,, | | ४०१–५०० | पत्र ४१५,४३५,४९१,४९३, तथा ४९९ वाँ अप्राप्त |
| १३४९ | ३३४१(६) | ,, षष्ठभाग | ,, | | ५०१–६०० | पत्र स० ५५५,५६६-५७६ अप्राप्त |
| १३५० | ३३४१(७) | ,, सप्तमभाग | ,, | | ६०८–७०० | पत्र स० ६९१से ६९८ अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १३५१ | ३३४१(८) | मुहता नेणसीरी ख्यात अष्टमभाग | मुहता नेणसी | | ७०१—७६५ | पत्र स ७३०,७३६,७५४,७५५, ७५७,७५६,७६६,७६६, तथा ७७१ वाँ अप्राप्त |
| १३५२ | ३३४१(६) | ,, नवमभाग | ,, | | | भाग १,८ तकके स्फुट पत्र |
| १३५३ | २२५५ | मुहता वाकीदासजीरो गीत ? | | २०वी | १ | वाकीदासजी रचित मुहता विषयक गीत |
| १३५४ | २५२० | मुहूर्त | | १६वीं | २ | |
| १३५५ | २५२१ | ,, | | ,, | २ | |
| १३५६ | २५३७ | ,, | | १८वीं | १ | |
| १३५७ | २५५९ | ,, | | १८७६ | २ | |
| १३५८ | ३२६५ | मुहूर्तानि | | १७वी | १ | |
| १३५९ | ११४४(३) | मूर्खबहुत्तरी | | १६वीं | २०—३२ | |
| १३६० | २८६३(६४) | मूलनक्षत्र विचार आदि | | १७वीं | १३१ वाँ | |
| १३६१ | २८६३(१०६) | मूत्रपरीक्षा तथा कालज्ञान | | ,, | १६५ वाँ | चित्र स० ४८ |
| १३६२ | ५८६१ | मृगलेखा चौपाई सचित्र | मुनि सागरचन्द्र | १८३८ | ५३ | |
| १३६३ | ३५७३(२२) | मृगापुत्रसधि | कल्याणतिलक | १६वीं | ६७—६८ | |
| १३६४ | ३६४४ | ,, | ,, | १६४७ | ४ | |
| १३६५ | ६६१ | मृगावती चोपई | समयसुन्दर | १६६० | २८ | |
| १३६६ | ३८६६ | ,, | ,, | १८वी | २५ | |
| १३६७ | ३६४८ | ,, | ,, | १७वीं | ३४ | |
| १३६८ | ३६८० | ,, | ,, | ,, | ६० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १३६९ | ७०५७ | मृगावती चरित्र | समयसुन्दर | १८वीं | ३८ | |
| १३७० | ४०८६ | ,, | ,, | ,, | २४ | |
| १३७१ | ६५३३ | ,, | ,, | ,, | २३ | |
| १३७२ | ६२५० | ,, चोपाई | ,, | ,, | १३ | |
| १३७३ | २३१७(२) | मृगापुत्र सज्झाय | खेममुनि | ,, | ३ रा | |
| १३७४ | ३५७३(१२) | मेघकुमार चोढ़ालियो | कनककवि | १९वी | ३४—३५ | |
| १३७५ | ३९४९ | ,, | ,, | १६९१ | ७ | |
| १३७६ | ३९८१ | ,, | यादव | १८८१ | ३ | लि स्था आणदपुर |
| १३७७ | ६८३८ | ,, | | १७३८—४९ | ५३ | १२ कृतियोका संग्रह |
| १३७८ | १७६८ | मेघमाला | | १९वी | ३३ | |
| १३७९ | १७८९ | ,, | | ,, | ५ | |
| १३८० | २२०८ | मेघमाला | | १८४६ | २ | |
| १३८१ | ४२८२ | , | | १९वीं | ५ | |
| १३८२ | ३५५०(१५) | मेडता आदिकी ऐतिहासिक हकीकत | | ,, | ९१—९२ | * |
| १३८३ | २२२६(१) | मेवाडको छद | जिनेंद्र | ,, | १—३ | |
| १३८४ | ४९१४(१६) | मेरुजयमाला | | १८७१ | २०९ वां | |
| १३८५ | ४४५२(६०) | मेषसक्रान्ति आदि विचार | | १८वी | ११७ वां | |
| १३८६ | ६९२२ | मैणरेहा चोपाई | | १९४९ | ७ | लि क केशरीचद |
| १३८७ | ३१९९ | मोती कपासिया सवाद चोपाई | श्रीसार | १८वीं | ६ | |
| १३८८ | ३२०८ | ,, | ,, | १७२५ | २ | |
| १३८९ | ३८६७ | ,, | ,, | १६९५ | ४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १३९० | ३९५० | मोतीकपासिया सवाद चोपाई | श्रीसार | १७वीं | ७ | |
| १३९१ | ५१०२ | ,, | ,, | १८वीं | ५ | लि क नित्यसागर |
| १३९२ | ८३ | मोह विवेकरास | धर्ममन्दिर | ,, | ७७ | स० १७४१में रचित |
| १३९३ | ५६०१ | ,, | ,, | १७९९ | ६६ | लि.क. भीमविजय |
| १३९४ | ६७६२ | मोहमरद राजाकी कथा (गोतम-महावीर सवाद) | | १९५२ | १३ | |
| १३९५ | ९६० | मौन एकादशी व्याख्यान | | १७वीं | ४ | |
| १३९६ | ७०७७ | ,, | | १८२४ | ५ | |
| १३९७ | ९२३ | यदुवश वंशावली | रतनु हमीर | १८१५ | १६ | |
| १३९८ | १५६८ | यशोधर रास | नयसुन्दर | १७वीं | २१ | |
| १३९९ | २०२५ | ,, | उदयरत्न | १८०३ | ५४ | |
| १४०० | २१३७ | ,, | ज्ञानव | १९वीं | २० | |
| १४०१ | १८२८ | यादव रास | पुण्यरतन | १६९० | ३ | |
| १४०२ | २८९३(७९) | युद्धवर्षादि विचार | | १७वीं | १४२ वाँ | |
| १४०३ | ६४०० | योगदृष्टि स्वाध्याय | नयविजय | १९वीं | ५ | जीर्ण पत्र |
| १४०४ | ७२७ | योगरत्नाकर चोपई | नयनशेखर | १८१४ | १२८ | स० १७३६मे रचित |
| १४०५ | ९४१ | योग बालावबोध | भेरुसुन्दर | १६वीं | ६७ | |
| १४०६ | ९४२ | ,, | ,, | , | ५९ | |
| १४०७ | ३०३२ | ,, | | , | ४८ | |
| १४०८ | ५४१८(१८) | योगसारके दोहे | योगचद | ,, | १३४–१४० | |
| १४०९ | ५४५० | योगासन माला सचित्र | | १८४६ | ११० | लि क शोभाराम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४१० | ८८६ | रघुनाथरूपक | मछाराम सेवग | १९वीं | ७६ | |
| १४११ | १८३३ | रतिप्रमोद | जगन्नाथ | १८५७ | १२ | स० १८२२में जैसलमेरमे रचित |
| १४१२ | ६०३८ | रत्नकुमाररास | सहजसुन्दर | १८वीं | ११ | |
| १४१३ | ११२३(२४) | रत्नचूडकुमार चउपई | सेवक | १७वी | ८४–८६ | |
| १४१४ | ११२४(६) | ,, | | १६७५ | १–२२ | |
| १४१५ | ३५५४(८) | ,, | कनकनिधान | १८७६ | १–१२ | |
| १४१६ | ३९८२ | ,, | ,, | १८४१ | २४ | |
| १४१७ | ३९९२ | ,, | ,, | १९वीं | १८ | |
| १४१८ | ४०८७ | , | ,, | १८१४ | १२ | |
| १४१९ | २१८० | रत्नपाल चोपाई | रघुपति | १८२४ | १४ | |
| १४२० | २२३० | ,, | ,, | १८९४ | ३३ | |
| १४२१ | ३८९४ | ,, | कनकसुन्दर | १८२१ | १३ | |
| १४२२ | ३८९५ | ,, | मोहनविजय | १८१२ | ५४ | |
| १४२३ | ३८९६ | ,, | हर्षनिधान | १८७३ | २७ | |
| १४२४ | ९३६ | ,, रास | सूरविजय | १७७६ | ३२ | लि स्था धोलका |
| १४२५ | ९८८ | ,, , | ,, | १८३० | २४ | स १७३२मे रचित |
| १४२६ | ४८१९ | ,, ,, | मोहनविजय | १८६७ | ५४ | लि क हितसौभाग्य |
| १४२७ | ६०५७ | ,, ,, | सूरविजय | १९०० | ७६ | |
| १४२८ | ६५३१ | ,, ,, | सेवक सूर | १८२७ | ३२ | प्रथम पत्र अप्राप्त, स० १७३२मे रचित |
| १४२९ | ४८३३ | रतनमहेशदासोतरी वचनिका | खिडियो जगो | १७४१ | ७ | लि क प्रमोदमनि |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४३० | ८९२ | रतन रासो | खिडिओ जगो | १८७६ | १४ | |
| १४३१ | २३१० | ,, | ,, | १८२५ | ३८ | लि स्था मेडता |
| १४३२ | २३६०(४) | ,, | ,, | १८४१ | १–१३ | पत्र स० ५,६ अप्राप्त |
| १४३३ | ३५४८(३) | ,, | | १८वीं | २१–२८ | |
| १४३४ | ३५४९(२) | ,, | ,, | १९वी | २४–३१ | |
| १४३५ | ३५६०(१) | ,, | ,, | १८वीं | १–३१ | |
| १४३६ | ३५७३(५१) | ,, | ,, | १८०९ | १२९–१३५ | |
| १४३७ | ११२३(६) | रत्नसार रास | सहजसुन्दर | १७वीं | ३९–४६ | |
| १४३८ | ३९८३ | ,, | ,, | १८वीं | १५ | स० १५८६में रचित |
| १४३९ | ४९१४(३०) | रत्नत्रय | | १८७७ | २४८ वाँ | |
| १४४० | ४९१५(३) | रतना हमीररी वात | कवियण ? | १८८७ | ४२–७५ | लि.क प्रभुदान |
| १४४१ | १७८० | रमलग्रन्थ भाषा | | १८८५ | ३० | |
| १४४२ | ३७३१ | ,, | | १८६७ | १५ | |
| १४४३ | ३७२२ | ,, | | १९वीं | १७ | |
| १४४४ | १७७४ | रमलशकुनविचार | | १८७९ | ३ | |
| १४४५ | ६७१ | रमलशकुनावली | | १८०१ | ४ | |
| १४४६ | १८३६ | रसिकसुरतीमास | ब्रह्मानन्द | १७४४ | २ | |
| १४४७ | ५४१८(२६) | रविकथा | | १९वीं | १५४–१६३ | लि.क रामसागर |
| १४४८ | ५४१८(२७) | ,, | भानुकीर्ति | ,, | १६४–१६५ | |
| १४४९ | ८४७ | रागसागर | | ,, | ६ | |
| १४५० | ७४४४(१६) | रागपदबहोत्तरी | आनदघन | १८८५ | २७०–२९४ | लि क नेमविजय |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४५१ | ४२८७(९) | राग पदसंग्रह | | १८वीं | ३८– ९ | |
| १४५२ | ५१०० | ,, | | १९वीं | ३ | |
| १४५३ | ५४१८(३४) | रागरासाष्टक | | ,, | १७५–१७६ | |
| १४५४ | ७७२०(२३) | रागनामोपरिविरह सुभाषित | | १७६५ | ९–११ | |
| १४५५ | २८३२(६) | राजकीय हिसाबकी विगत | | १७७४ | ८९–९८ | * |
| १४५६ | २०३६ | राजसिंह रतनवती पंचकथा रास | प्रभुदास | १९वीं | १९ | |
| १४५७ | २८९३(३८) | ,, संधि | हीरकलश | १६१९ | ७१–८४ | |
| १४५८ | १८३२(२) | राजानराजावतरो वातबणाव | | १९वीं | ४–१५ | |
| १४५९ | ३५७३(५८) | राजा भोजरी पनरमी विद्यारी वारता | भवानीदास व्यास | ,, | १५९–१६६ | |
| १४६० | २३६०(२) | राजा भोजरी वात | | ,, | १–११ | |
| १४६१ | ४९०६(२) | राजसभारंजन | रसिक ? | १७९८ | १–२५ | * र का १७५९ |
| १४६२ | ४९१५(१७) | राजा चचरी वातरा दूहा | | १८८७ | ४०६–४१० | |
| १४६३ | ४९१६(२) | राजा भोज माघ पंडित नै डोकरीरी वारता | | १८७५ | ४५–४६ | लि क सौभाग्यगणि |
| १४६४ | ७७२१(६) | राजा रतनरी वचनिका | खिडियो जगो | १८२५ | ११९–१४१ | |
| १४६५ | ७७२०(२१) | राजावली | | | ७ वाँ | सं० १२ ७ से सं० १७७० तक के सीसोदिया राणाओंका वंश-परिचय |
| १४६६ | ४७९९ | राणारी वंशावली | | १८वीं | १ | नागधरा नरेशसे अमरसिंह-पुत्र संग्रामसिंह तक |
| १४६७ | ३९८६ | राजीमति मंगल | जिनदास | १९वीं | २ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४६८ | ३९८७ | राजुलपचीसी | लालचद | १९वी | ८ | |
| १४६९ | ४९१४(८) | ,, बारहमासी | राजुल | १८७१ | १६७–१६८ | |
| १४७० | ५४१८(३५) | ,, | आनदचद | १८०६ | १–६ | लि क दयानिधि |
| १४७१ | ७१४४ | ,, | लालचद | १८५८ | ४ | लि क सरूपा |
| १४७२ | ७२४३ | ,, | ,, | १९वीं | २ | |
| १४७३ | ५१०४ | राठोड रतन महेशदासोतरी वचनिका | खिडियो जगो | १८०२ | ३७ | प्रथम पत्र अप्राप्त लि क धर्मसुन्दर |
| १४७४ | ३५४६(९) | राठोडांरी वसावली | | १९वीं | १४–८५ | |
| १४७५ | ४४५२(६१) | ,, | | १८वीं | १२९ वां | |
| १४७६ | ४८३४ | राठोड नाहरखानरो छद | गाडण माधोदास | १९वी | १ | |
| १४७७ | ६४४६(७) | राधाजीकी बारहखडी | | ,, | १४–१६ | |
| १४७८ | १००६ | राधाविलाप बारमास | प्रेमानद | १८२० | ११ | |
| १४७९ | ७७४४(३) | राधाविलास | | १७५८ | ८–१७ | |
| १४८० | ११२२(१९) | राधिका कृष्णसवाद | | १९वीं | ११–१३ | |
| १४८१ | ४४५२(१९) | रामकिशनजीरो छद | | १८वीं | १९ वां | |
| १४८२ | ५६०३ | रामकृष्ण चोपाई | लावण्यकीर्ति | १७११ | ३० | रचना स० १६७७ |
| १४८३ | ३३८७ | रामगुण रासो | माधोदास | १७८३ | ३७ | |
| १४८४ | ३३८८ | ,, | , | १८२६ | ४४ | |
| १४८५ | ३५४८(५) | ,, | , | १७९१ | ७३–१३६ | |
| १४८६ | ३५४९(१) | ,, | ,, | १९वीं | १–२३ | |
| १४८७ | ३५६७(१) | ,, | ,, | १८०६ | १–७१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४८८ | ४९२४(५) | रामगुणरासो | माधोदास | १७८८ | १–३२ | लि क जयसौभाग्यगणि |
| १४८९ | ७७२१(२) | ,, | ,, | १८२५ | २५–९९ | |
| १४९० | ७७३५ | ,, | ,, | १८वी | ८१ | |
| १४९१ | ३५५३(२) | राम चरित्र | | १८७६ | १६–१०१ | |
| १४९२ | ३५४७(७) | रामचद्रजीरो सपखरो | | १९वीं | ८५ वाँ | |
| १४९३ | ६४६७ | रामचद्र सवारी | रामनाथ | ,, | ६ | |
| १४९४ | ७८१०(२) | रामचरणदासजीसग्रह | रामचरणदास | १८वीं | २६–२३० | |
| १४९५ | ६८५३ | रामजसरसायन | | १८९४ | ११४ | |
| १४९६ | ३५५५(३०) | रामदासजीरी बात | | १९वीं | १६८–१७० | |
| १४९७ | ७७४४(१) | राममजरी | गोविददास | १७५८ | १–२ | |
| १४९८ | ३८९७ | रामयशोरसायन | केशराज | १८७१ | ९५ | * स० १६८०मे रचित |
| १४९९ | ३९८८ | ,, | ,, | १८४७ | १०० | |
| १५०० | ६३५७ | ,, | ,, | १७९४ | ८९ | |
| १५०१ | ८०२ | रामरक्षा भाषा | | १८९४ | १ | |
| १५०२ | २३०९(२) | ,, | | १८५६ | ९–१३ | |
| १५०३ | ६७४९(२) | ,, | रामानदजी | १९वीं | ८८–९२ | |
| १५ ४ | ७६०९ | ,, मत्र | | ,, | ३ | |
| १५०५ | ३४४९ | रामविनोद भाषा बचनिका | रामचदमति | १९३० | १५१ | पत्र १०० से १०४ तथा ११७ से ११९ अप्राप्त |
| १५०६ | २९२० | ,, | | १९वीं | २९ | |
| १५०७ | ११२२(१५) | रामाभैरव छद | जेस कवि | ,, | ९ वाँ | |
| १५०८ | ७१४० | रायप्रश्नश्रेणिमध्ये ग्यारह प्रश्न | | २०वी | ७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १५०९ | ३४८४ | रावणसवाद | लखब्यसमय | १८वीं | २ | |
| १५१० | ११२२(२०) | ,, | | १९वीं | १३–१४ | |
| १५११ | ७७२२(८) | राव सत्रसालरो गीत | | १८वी | १०५ वाँ | |
| १५१२ | ४४५२(७५) | रासभचक्र | | ,, | १२३ वाँ | |
| १५१३ | २५३६ | राहुविचार | | १९वीं | १ | |
| १५१४ | २२१५ | रात्रीभोजन चोपाई | धर्मसमुद्र | १६७७ | ६ | |
| १५१५ | ३४८३ | ,, | ,, | १७५४ | ७ | |
| १५१६ | ३५७३(१७) | ,, | ,, | १९वीं | ५१–५७ | |
| १५१७ | ४४५७ | ,, | ,, | १७२३ | ७ | लि क. भक्तिविशाल |
| १५१८ | ४९१४(४३) | ,, रास | | १८७७ | २६८–२७२ | |
| १५१९ | ४९१४(४१) | ,, सज्झाय | | | २६६ वाँ | |
| १५२० | ४९१४(४२) | ,, ,, | कवियण ? | ,, | २६७–२६८ | |
| १५२१ | ९२६ | रीसालू कुवररी वारता | | १८९० | ७ | |
| १५२२ | ३५५३(४) | ,, | | १९वीं | १२७–१५६ | |
| १५२३ | ३५७३(६०) | ,, | | ,, | १७१–१७५ | |
| १५२४ | ३९९० | ,, | | १८१० | १५ | |
| १५२५ | ४९०५(१–२) | ,, | नरवदो चारण | १८७५ | १–२५ | लि क अनूपविजय |
| १५२६ | ३५७३(४५) | रीसालुरा दूहा | | १९वीं | १०९ वाँ | |
| १५२७ | ७१२२ | रुक्मिणीमगल (कृष्णजीको ब्याहलो) | | ,, | १२–४२ | अपूर्ण |
| १५२८ | ६९७५ | रुक्मिणी ब्याहलो | | १८६७ | | गुटका, स० ४८ से ६४ तकके पत्र अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १५२९ | ४०७६ | रुक्मिणी बेली सबालावबोध | पृथ्वीराज | १८२६ | ४३ | लि क जीवणदास, टी कुशलधीरगणि |
| १५३० | ४०७७ | ,, वेली सटीक | ,, टी लब्धिविज्ञान शिवनिधान | १७८९ | २८ | |
| १५३१ | ७१६५ | ,, ,, नागदमण आदि | | २०वीं | गुटका | जीर्ण |
| १५३२ | ४०७८ | ,, ,, राजस्थानी अर्थसहित | , | १८वीं | २७ | |
| १५३३ | ८७२ | रुक्मिणीहरण | | १९०४ | १२ | |
| १५३४ | ८७५ | ,, | | ,, | ६ | |
| १५३५ | २२१० | ,, | विजैराज | १९वीं | ७ | |
| १५३६ | ५२२१ | ,, रास | | ,, | १५ | पत्र स० १,१२ अप्राप्त |
| १५३७ | २३६४(२) | रूपदीपक पिंगल | भवानीदास पुष्करणा | १८५८ | ७ | * स० १७७६में रचित |
| १५३८ | ५८९४ | रूपसेनकुमार रास सचित्र | | १८वीं | १३ | लि क साध्वी मेरुश्री |
| १५३९ | ९५०(४) | रूपसेनरी कथा | | ,, | ८–९ | |
| १५४० | ३५४३(२) | रेंटिया सज्झाय | रतनबाई | १८८२ | २–३ | |
| १५४१ | ६९३७(४) | रैदासके पद | रैदास | १८११ | २०१–२०९ | लि क रामदास |
| १५४२ | ३५७३(५९) | रोहिणी तपमहिमास्तवन | श्रीसार | १९वीं | १६९ वाँ | |
| १५४३ | ३५७५(५५) | ,, | ,, | २०वीं | २६०–२६४ | |
| १५४४ | ४०२७ | ,, | ,, | १८वीं | २२ | |
| १५४५ | २५६९ | लग्नदोषावली | | १८८१ | ३ | |
| १५४६ | ३५५५(२७) | लाखा फुलाणीरी वात | | १८२९ | १५९–१६१ | * |
| १५४७ | ११२२(६१) | ,, कवित्त | | १९वीं | ८३ वाँ | * |
| १५४८ | ३५०० | लीलावती चोपाई | हेमरतन | १७वीं | १९ | स० १७७३मे पालीमें रचना |
| १५४९ | ६११९ | ,, | लाभवर्द्धन | १७४२ | १४ | पत्र १-३ अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १५५० | ६३७८ | लीलावती चोपाई | लाभवर्द्धन | १९वीं | ३६ | |
| १५५१ | ३५६४(२) | लीलावती भाषा | लालचव | १८६१ | ११–३५ | |
| १५५२ | ३७१८ | ,, | ,, | १८४५ | २१ | स० १७३६में बीकानेर में रचित |
| १५५३ | ३७२३ | ,, | ,, | १९वीं | १५ | |
| १५५४ | ६०५६ | ,, | ,, | १७८३ | | |
| १५५५ | ४८३६ | ,, रास | उदयरतन | १८०७ | १६ | लि क. जेठा |
| १५५६ | ५२८६ | ,, ,, | ,, | १९वीं | १२ | स० १७६७में रचित |
| १५५७ | ९८७ | लीलावती सुमतिविलास रास | ,, | १८४२ | १४ | |
| १५५८ | २०५० | ,, | ,, | १८१७ | १३ | |
| १५५९ | ३२२७ | ,, | ,, | १८७१ | ११ | |
| १५६० | ३५१५ | ,, | ,, | १८वीं | १५ | |
| १५६१ | ३५६७(८) | लेखा | | १९वीं | १०७–१०८ | |
| १५६२ | ४९१४(२५) | लकायत निराकरण प्रतिमा स्थापन रास | सुमतिकीर्ति | १८७७ | २३४–२४२ | |
| १५६३ | ३५५५(१०) | वृ दबहुतरी | वृ व | १९वी | १–२ | |
| १५६४ | २८९३(१२३) | वृद्धगुर्वाविली | हीरकलश | १६१९ | १७८–१८२ | |
| १५६५ | ३५१३ | वृद्धसागर निवाण-रास | दीपो | १८०५ | १० | |
| १५६६ | ४४५२(६२) | वृद्ध जवानको झगडो | | १८वी | ११८ वां | लि.क प्रीतिसौभाग्य |
| १५६७ | ३४८६ | वच्छराज चोपाई | आनदविधान | ,, | २१ | |
| १५६८ | ४०८८ | ,, | जिनोदय | १८६१ | ३३ | लि क रूपविजय |
| १५६९ | २३५८ | वकचूल कथा | | १९वी | १८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १५७० | ४७८१ | वध्याकल्प | | १८१४ | ४ | |
| १५७१ | ७७२६ | वशभास्कर | सूयमल | १९४३ | १८४ | |
| १५७२ | ७७२७ | ,, | ,, | १९४० | ,, | लि क बारहठ बालाबक्सजी |
| १५७३ | १६८० | वचनामृत | सहजानद स्वामी | १९वीं | १०२ | |
| १५७४ | ११२२(६६) | वणिकछुप्पै | | ,, | ८५ वाँ | |
| १५७५ | १०५४ | व्याख्यानपद्धति | | ,, | २ | |
| १५७६ | २९५६ | ,, वचनिका | | १६वीं | प्लेट ३६ | फोटो कापी |
| १५७७ | २८९३(८) | वर्तमानादि चोवीसीनमस्कार | हीरकलश | १७वीं | ४–५ | |
| १५७८ | ७७२१(३) | वमेक वाररी निसाणी | | १८२५ | ९९–११० | |
| १५७९ | ४९२४(६) | ,, | केशवदास | १७९३ | १–१४ | लि क जयसौभाग्य |
| १५८० | ४७१६ | वर्णोत्पत्ति | | १९वीं | २ | |
| १ ८१ | ७१५१ | वर्षाऋतुका कवित्त | | १८७६ | ७५ | लि क भेरूदास |
| १५८२ | २६४६ | वशीकरणविधि | | २०वीं | १ | |
| १५८३ | १८३९(४) | वस्तुपाल तेजपाल रास | समयसुन्दर | १९वी | १९–२३ | |
| १५८४ | '२२१३(३) | ,, | ,, | १८३८ | ४–५ | |
| १५८५ | ३४८५ | वसुदेवकुमार चोपाई | हर्षकुल | १८वीं | ८ | |
| १५८६ | ३३३५ | वसत राजशकुन भाषा | | १८५० | १७६ | |
| १५८७ | ५३७६(२०) | वारसेनमुनिकथा | | | २२९–२४२ | |
| १५८८ | २८९३(४९) | वासप्रास्ताविक | हीरकलश | १७वीं | ८९ वाँ | |
| १५८९ | २१२४ | वासुपूज्य पुण्यप्रकाश रास | सकलचन्द्र | १७४१ | २९ | |
| १५९० | २३७४(१३) | ,, | ,, | १८५७ | ४७–६३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १५९१ | ३८६६ | विक्रम खापरा चोपाई | अभयसोम | १७९७ | ९ | |
| १५९२ | ६७३८ | ,, | ,, | १९वीं | १६ | |
| १५९३ | १८१५ | विक्रमचरित्र प्रबध | उदयभानु | १५६७ | २० | |
| १५९४ | ६४१४ | ,, | हेमानद | १९वीं | २७ | |
| १५९५ | ६६१५ | चौबोलीसतीचोपाई | अभयसोम | १८९५ | ११ | |
| १५९६ | ३५५५(२८) | विक्रम चोबोली चोपाई | जिनहर्ष | १९वीं | १६२ वाँ | स० १७२४में रचित |
| १५९७ | २१२७ | ,, | अभयसोम | १८६९ | ८ | |
| १५९८ | २१४३(३) | विक्रम चोबोलीरी वात | | १८६० | ७–८ | |
| १५९९ | २८९० | ,, चोपाई | | १९वीं | २२ | अत्य २३वाँ पत्र अप्राप्त |
| १६०० | २२५५ | ,, ,, | ,, | १७६८ | ११ | |
| १६०१ | ३९०० | ,, | ,, | १७८२ | १२ | |
| १६०२ | १०११ | विक्रम चोबोली तथा प्रहेलिका | जिनहर्ष | १९वीं | २ | |
| १६०३ | २३७५(४) | विक्रम पचदड कथा | सांमलदास | १९०६ | १४०–१७९ | |
| १६०४ | २२०५ | ,, चोपाई | लक्ष्मीवल्लभ | १८५३ | ११६ | |
| १६०५ | ३८६८ | ,, ,, | ,, | १८वीं | ७२ | |
| १६०६ | ३९५१ | ,, ,, | ,, | ,, | ७१ | |
| १६०७ | ३९०२ | ,, ,, | , | १८८१ | ८४ | |
| १६०८ | ३९९४ | ,, ,, | ,, कीर्ति | १९वीं | १०९ | |
| १६०९ | २०८० | ,, ,, रास | नरपति | १७९२ | ३४ | |
| १६१० | २१२८ | विक्रम रास | लाभवर्धन | १८६९ | २३ | |
| १६११ | १८२५ | विक्रमसेन चोपाई | पदमसागर (?) | १८१९ | ४५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १६१२ | २०१६ | विक्रमसेनचोपाई | परमसागर | १६३५ | ६१ | र का १७२४ |
| १६१३ | ३८६८ | ,, | मानसागर | १८२८ | ३६ | |
| १६१४ | ३८६६ | ,, | ,, | १७८४ | ४८ | |
| १६१५ | ३६६१ | ,, | ,, | १७६८ | ३३ | |
| १६१६ | ३५७३(५६) | विक्रम शनीसर वारता | | १६वीं | १५१–१५३ | अपूर्ण |
| १६१७ | ७०१४ | विक्रमादित्य भूपाल पचदडक चरित्र | लक्ष्मीवल्लभ गणि | १७६२ | ५५ | र का स० १७२४ |
| १६१८ | ६४१५ | विक्रमादित्यलावणी | धर्मदेवी (?) | १६७७ | ६ | लि.स्था. देवगढ |
| १६१६ | १०१६ | ,, चरित्र चोपाई | नरपति कवि | १७०६ | ३२ | |
| १६२० | ३६०१ | ,, नवसेन कन्या चोपाई | लाभवर्धन | १८४८ | १६ | |
| १६२१ | २०६२ | विचारबालावबोध | | १७वीं | १७ | |
| १६२२ | ११२३(१६) | विचारस्तवन | सेवक | ,, | ७७ वाँ | |
| १६२३ | ११२२(६) | विजयप्रभसूरि नीसाणी छन्द | वृद्धि | १६वीं | ४ था | |
| १६२४ | ३५७५(२१) | विजयशेठ विजयाशेठाणी चोढालियो | चद्रकीर्तिसूरि | २०वीं | ६५–६७ | |
| १६२५ | ७६२० | ,, लावणी | लालचन्द | ,, | ३ | |
| १६२६ | २२२७ | विद्याविलासचोपाई | राजसिंह | १७वीं | ६ | |
| १६२७ | ३६५२ | ,, | ,, | १६६३ | १३ | |
| १६२८ | ३६६७ | ,, | जिनहर्ष | १८५० | २१ | |
| १६२६ | ६१११ | ,, | ,, | १८२६ | १८ | |
| १६३० | ११२३(१) | ,, पवाडऊ | हीराणंदसूरि | १६३१ | २–५ | सं० १४८५में रचित |
| १६३१ | १८२४(२) | ,, | ,, | १६वीं | ४–८ | |
| १६३२ | १८२७ | ,, | ,, | १६७६ | ६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १६३३ | २०१३ | विद्याविलास पवाडऊ | हीराणदसूरि | १६वीं | ५ | |
| १६३४ | ३५४४ | ,, | हीराणद | १७वीं | ६ | |
| १६३५ | १००४ | विनयचटरास | ऋषभसागर | १८७६ | ५३ | |
| १६३६ | ४०६६ | विनयचट श्रेष्ठिपुत्र कथा | ,, | १६वीं | ७० | स० १८१०में रचित |
| १६३७ | २१२३ | विमलमत्री रास | लावण्यसमय | १८वी | २६ | |
| १६३८ | २३७४(१७) | ,, | ,, | १८५७ | ८३–१४१ | |
| १६३९ | ३५३४ | ,, | ,, | १७वीं | ६५ | |
| १६४० | ४४५२(४१) | विमलसाहजीरो सिलोको | ज्ञातिविमल | १८वीं | ४५–४८ | |
| १६४१ | ४१४५ | ,, | ,, | १६वी | १४ | |
| १६४२ | ३५४६(१) | विमेकवाररी नीसाणी | केसोदास | १८०६ | १–५ | |
| १६४३ | ३५५५(१८) | ,, | ,, | १६वीं | ११४–१२१ | |
| १६४४ | ३५५५(२२) | ,, | ,, | ,, | १४५ वाँ | |
| १६४५ | ३५७३(७) | ,, | ,, | ,, | ३० वाँ | |
| १६४६ | ३६६६ | * ,, | | ,, | ११ | |
| १६४७ | ३५५५(२६) | विरमदे सोनगरारी वात | | १६वी | १६३–१६८ | |
| १६४८ | २५१७ | विवाह दोष | | १६वीं | ६ | |
| १६४९ | ६८२ | ,, पटल चोपाई | अभयकुशल | ,, | ६ | |
| १६५० | ३७३४ | विवाह दोष बालावबोध सहित | अमरसाधु सोमसुन्दरशिष्य | १८१६ | ३२ | |
| १६५१ | ३७७२ | विवाहपटलभाषा | मतिकुशल | १८६० | ४ | |
| १६५२ | २८६३(११८) | विविधदृष्टात गीत | | १७वीं | १७३ वाँ | |
| १६५३ | २८६३(१०५) | ,, मुहूर्तनक्षत्र विचार | | ,, | १६४–१६५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १६५७ | ३५७३(२५) | विषयस्तवन | | १६वीं | ७० वाँ | |
| १६५८ | ४४५२(५३) | विषहरा विचार ? | | १८वी | १०६ वाँ | |
| १६५४ | ४६१४(४) | विषापहार स्तोत्र | अचलकीर्ति | १८७१ | १६०–१६१ | |
| १६५५ | ६३३४ | ,, | | २०वी | १३ | |
| १६५६ | २२६५ | विसरभजन | सिवदान | २०वी | २ | |
| १६५९ | ३५७५(८३) | विहरमान स्तवन | धमसी | २०वी | ३६१–३६५ | |
| १६६० | ३५७५(६७) | वीकानेर मडन आदि जैन स्तुति | हीरकलश | १७वी | ६६ वाँ | |
| १६६१ | ३५५६(३) | वीझा सोरठरी वात | | १६वी | ५१–६५ | |
| १६६२ | ३५६२(१३) | ,, | | १६७० | ८२–११६ | |
| १६६३ | ३५७५(६७) | वीरजिन गुहली | विद्यारग | २०वी | २६६ वाँ | पद्मविजयकृत बालावबोध सहित |
| १६६४ | ३५७५(८१) | वीरजिन पचकल्याणक स्तवन | सकलचद | ,, | ३४६–३५२ | |
| १६६५ | ४१६ | वीरजिनस्तवन | यशोविजय | १८७६ | ८६ | |
| १६६६ | ३५७५(७८) | वीरजिनस्तुति | ,, | २०वी | ३२७–३४० | |
| १६६७ | ३५७५(६५) | वीरदेशना स्तवन | शिवचद पाठक | ,, | २६७–२६८ | |
| १६६८ | ३५७५(७२) | ,, | ,, | १८वीं | १५२–१५६ | * लि क आणदराम |
| १६६९ | २१४८ | वीरभाण उदैभाण चौपाई | कुशलसागर | १८४२ | ४८ | |
| १६७० | ७७२२(१४) | वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त | | ,, | ३०६ वाँ | |
| १६७१ | ७७६६(१) | वीरमदे पन्नारी वारता सचित्र | | १८५६ | १–३७ | चित्र स० १८ |
| १६७२ | ४१३६ | वीरसेन राजकथा आदि | | १६२४ | ८ | स० १७४५में रचित लि क जीवो |
| १६७३ | २१४३(४) | वीसलदेव सूअर सिकाररी वात | | १८६० | ६–१३ | * |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १६७४ | ३५७५(२३) | बीसस्थानकस्तवन | वसतो मुनि | २०वीं | १००–१०२ | |
| १६७५ | ३९९८ | बीसस्थानक रास | जिनहर्ष | १८२५ | १८१ | |
| १६७६ | २३७४(१४) | ,, पद पूजा तथा विधि | लक्ष्मीसूरि | १९वी | ६३–७१ | |
| १६७७ | ११२३(१५) | बीसायन्त्र चउपई | अमरसुन्दर | १७वी | ७६ वॉ | |
| १६७८ | ९३४ | वेतालपचीसी | | १८८० | ६५ | |
| १६७९ | २१४४(१) | ,, | | १९वीं | १–१५ | स० १६१९में रचित । दूहाबध |
| १६८० | २१४३(५) | ,, | देवसील ? | १८६० | १३–३५ | |
| १६८१ | २३६०(६) | ,, | देवीदान नाइता | १८४९ | २९–५४ | |
| १६८२ | ३२४३ | ,, | ,, | १८५४ | १९ | |
| १६८३ | २८३० | , | ,, | १९वी | १३ | |
| १६८४ | ३५५४(९) | ,, | | १८८० | १–१३ | |
| १६८५ | ३५७३(१) | ,, चोपाई | हेमाणद, हीरकन्नश शिष्य | १८१२ | १–१७ | |
| १६८६ | ५३६८ | ,, | | १९वी | ४० | |
| १६८७ | ६४४३ | ,, | म अनूपसिह | १८९१ | ४४ | |
| १६८८ | ७०४४ | ,, | शिवदास | १७२६ | ५२ | लि क पुरुषोत्तम |
| १६८९ | ७७२२(२) | ,, रा कवित्त | | १७८४ | ३७–४५ | * लि क. सिरेकवरी |
| १६९० | ७७४३ | वेदस्तुति भाषा | राजसिंघ | १९वी | ३३–४६ | कवित्त ६१ |
| १६९१ | ३९०३ | वैदर्भी चोपाई | प्रेमराज | १८वीं | ७ | * |
| १६९२ | ३९९५ | ,, | | १८५९ | ६ | |
| १६९३ | ३८५३ | वैद्यकगुणसार | | ,, | १०८ | १,३ पत्र अप्राप्त |
| १६९४ | २४०९ | ,, नुखसा | | २०वीं | ६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १६९५ | ३५६७(११) | वैद्यक फुटकर | | १९वीं | १३–१२६ | |
| १६९६ | ३५६७(३३) | ,, | | ,, | १८१–२३९ | |
| १६९७ | ३८३२ | ,, सार | | १९वीं | २७ | |
| १६९८ | २३८२ | ,, | | १९१९ | २४० | |
| १६९९ | ३५७५(५१) | वैराग्यसज्झाय | विजयभद्र | २०वी | २४८–२५० | |
| १७०० | ३५४८(१) | वैहलमरी वात | | १८वीं | ३–१९ | * |
| १७०१ | ३५१०(१) | शकुतला रास | धर्मसमुद्र | १८वीं | १–३ | |
| १७०२ | २५७८ | शकुन विचार | | १९वीं | १ | |
| १७०३ | ३५७५(३४) | शकुनावली | | २०वीं | १५४–१६६ | |
| १७०४ | ६८६३ | शकुनदीपिका चोपाई | | १९वीं | ८ | |
| १७०५ | ४४५२(६२) | शकुनरा कवित्त | | १८वीं | १२० वाँ | सवाई जैसिंह और बखतेसयुद्ध का भी वर्णन है |
| १७०६ | ४४५२(३०) | शकुनरी चोपाई | | ,, | ३१–३२ | अपूर्ण |
| १७०७ | ४४५२(७) | ,, विचार | | ,, | ११ वाँ | |
| १७०८ | ४१६० | शकुनावली | | १७वीं | २ | |
| १७०९ | ५१२३(४) | , | | १८वीं | १९–२७ | |
| १७१० | २८९३(२८) | शतवर्ष दिन प्रहर मूहूर्त घडी-सख्या चोपाई | | १७वीं | ६४ वाँ | |
| १७११ | ६०२ | शतसवच्छरी तथा राशिफल | | १७वीं | १२ | |
| १७१२ | १७५० | ,, | | १८६८ | २२ | |
| १७१३ | ३७७५ | ,, | | १८२७ | १६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १७१४ | ४६८६ | शतसवत्सरी | | १८वी | ६ | |
| १७१५ | ४७२५ | ,, | | १९वी | ४६ | |
| १७१६ | ३५६४(६) | शनिचार | | १८६१ | ३३–३४ | |
| १७१७ | १७७८ | शनिपुत्तलक विचारादि | | १८वीं | २ | |
| १७१८ | ४४५२(६५) | शनीसररो गुण छन्द | हेमकवि | ,, | ११९ वॉ | लि क प्रीतिसौभाग्य |
| १७१९ | ४१६९ | शनीसरकथा | | १८४० | २१ | लि क गोपाल मिश्र |
| १७२० | ४७८८ | ,, | | १९वी | ६ | |
| १७२१ | ४८२४ | ,, | | १८३६ | २ | |
| १७२२ | ६३०७ | ,, छन्द | | १९वीं | २ | |
| १७२३ | २३०६ | श्यामाजीकी आरती | मगनीराम | २०वी | १ | |
| १७२४ | २३०७ | ,, | ,, | ,, | १ | |
| १७२५ | २३१७ | ,, | ,, | १९१६ | २ | अजमेरमे लिखित |
| १७२६ | १०५३(२) | श्राद्धविधिप्रकाश | क्षमाकल्याण | १८४१ | १७–२७ | |
| १७२७ | ३५६७(१८) | श्रावकारी चोरासी न्यातरो छन्द | | १९वी | १३५ वॉं | |
| १७२८ | ७४४४(८) | श्रावक अतिचार | | १८८५ | १८०–१९० | |
| १७२९ | ७१२२ | ,, कथा कोष भाषा | | १९वीं | २१ | अपूर्ण |
| १७३० | ७७५३(८) | ,, री सज्भाय | जिनहर्ष | १८३७ | ४२–४४ | |
| १७३१ | २०२८ | श्रीआनी कथा | | १९वीं | ७ | |
| १७३२ | १५६७ | श्रीचन्द्रकेवली रास | देवविजय | १७१७ | ९२ | |
| १७३३ | ९५०(१) | श्रीदत्त श्रीमतीरी कथा | | १८वीं | १–२ | |
| १७३४ | ७८१६(१) | श्रीधरलीला | | १८३१ | ४८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १७३५ | ६०२४ | श्रीपालकथा | रत्नशेखर | १७२७ | २९ | |
| १७३६ | ६३५१ | ,, चरित्र भाषा | | १९१७ | १०२ | |
| १७३७ | ६९१९ | ,, | सुजसविजय | १९२८ | ७८ | लि क मागूमल, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १७३८ | ३९०५ | श्रीपाल चोपाई | महिमोदय | १८५१ | ४३ | |
| १७३९ | ४००२ | ,, | जिनहर्ष | १८२३ | २५ | |
| १७४० | ४१३८ | ,, | ,, | १८९४ | ३५ | |
| १७४१ | ६५२७ | ,, | ग्यानसागर | १७९१ | ३४ | |
| १७४२ | ७०८९ | श्रीपाल नरेंद्र कथा | हेमचंद | १८८३ | १३७ | लि क गोडीचंद |
| १७४३ | ७२४८ | ,, | | १९वीं | ३१ | |
| १७४४ | ९८० | श्रीपाल रास | विनयविजय | १९२३ | ७८ | |
| १७४५ | ९८५ | , | ज्ञानसागर | १८वीं | ८ | |
| १७४६ | ९९१ | ,, | जिनहर्ष | १८१४ | २७ | |
| १७४७ | १००१ | ,, | विनयविजय | १९१७ | ८४ | |
| १७४८ | ११२४(२) | ,, | ज्ञानसागर | १६७५ | २१—३७ | |
| १७४९ | २०५८ | ,, | विनयविजय | १७८५ | ४६ | |
| १७५० | २१३८ | ,, | जिनहर्ष | १८३० | ३३ | |
| १७५१ | २१५४ | ,, | जिनहर्ष | १८७८ | ४३ | |
| १७५२ | ३४८९ | ,, | गुणरत्न | १७वी | २२ | |
| १७५३ | ३९०६ | ,, | जिनहर्ष | १८३३ | २८ | |
| १७५४ | ३९०७ | ,, | विनयविजय | १८४२ | ४६ | |
| १७५५ | ३९५७ | ,, | ज्ञानसागर | १७५२ | ११ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १७५६ | ४४६३ | श्रीपाल रास | ज्ञानसागर | १७३२ | १३ | |
| १७५७ | ६५२८ | ,, | विनयविजय | १८५७ | ५५ | |
| १७५८ | ६७४६ | ,, | | १८७७ | गुटका | |
| १७५९ | ५३७३(५) | ,, | | १८०९ | १०९–११८ | |
| १७६० | २१५० | श्रेणिक चोपाई | धर्मशील | १८३५ | २३ | |
| १७६१ | २१५१ | ,, | जिनहर्ष | १९वीं | १३ | |
| १७६२ | २०३० | ,, | सोमविमल | १६२० | २१ | |
| १७६३ | ४४५२(७७) | श्वानचक्र | | १८वीं | १२३ वाँ | |
| १७६४ | २८९३(८२) | श्वानचेष्टा विचार | | १७वीं | १४३–१४४ | |
| १७६५ | २८९३(७५) | ,, शकुन विचार | | ,, | १४०–१४१ | |
| १७६६ | २८९३(४४) | शत्रु जय इगतालीस नाम गर्भित-नमस्कार | | ,, | ८७–८८ | |
| १७६७ | ६३८९ | शत्रु जय उद्धार | भानुभेरु | १६६७ | ६ | * |
| १७६८ | १००२ | ,, , रास | समयसुन्दर | १८३६ | ८ | |
| १७६९ | १८३९ | ,, ,, | ,, | १८२९ | १०–१९ | स १६८२में नागोरमे रचित |
| १,७० | २२२६ | ,, ,, | ,, | १८वीं | २३ | |
| १७७१ | ३५५४(३) | ,, ,, | नयसुन्दर | १९वीं | ६०–६२ | |
| १७७२ | ३६५३ | ,, ,, | ,, | १६६५ | ६ | |
| १७७३ | ६५३८ | ,, ,, | ,, | १८वीं | ६ | लि क दानविजय |
| १७७४ | ५४३६(२) | ,, रास | | | ५–१७ | |
| १७७५ | ३५७५(५७) | शत्रु जयवीनती | देवचन्द्र | २०वी | २७७–२८० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १७७६ | २८९३(४) | शत्रुजय स्तवन | रगकलश | १७वीं | ३ रा | |
| १७७७ | ३५७ (२७) | शातिजिन स्तवन | मेघमुनि | २०वीं | ११३–११७ | |
| १७७८ | ३५३६ | शांतिनाथ चोपाई | ज्ञानसागर | १८वीं | ५० | |
| १७७९ | ३९०४ | ,, ,, | ,, | १८८७ | २२ | |
| १७८० | २३६८(३) | शातिनाथ स्तवन | गुणसागर | १९वी | २९–३१ | |
| १७८१ | २३६८(१०) | ,, ,, | शांतिकुशल | ,, | ३९ वाँ | |
| १७८२ | ३५७३(२३) | ,, ,, | हर्षधर्म | ,, | ६८–६९ | |
| १७८३ | ५८९० | ,, रास | | १८२४ | २२० | पत्र स० १०४ १०५ अप्राप्त |
| १७८४ | २०७१ | शारदा छन्द | शातिकुशल | १९वीं | ३ | |
| १७८५ | २०७४ | ,, | ,, | १८७० | २ | |
| १७८६ | २१०२ | ,, | ,, | १९वीं | २ | |
| १७८७ | ७७२०(७) | शारदाष्टक | | १८वीं | ४५ वाँ | |
| १७८८ | ४०२४ | ,, चरित्र | मतिसार | ,, | १२ | स० १६७८मे रचित |
| १७८९ | ९५३ | शालिभद्र चोपाई | ,, | १७७५ | १९ | |
| १७९० | ९८३ | ,, | ,, | १८१३ | १५ | |
| १७९१ | १००७ | ,, | ,, | १८वीं | १७ | |
| १७९२ | १८३९(१४) | ,, | ,, | १८३१ | ६७–११० | |
| १७९३ | २०२० | ,, | ,, | १८२१ | १७ | |
| १७९४ | २१८६ | ,, | ,, | १७वी | २५ | |
| १७९५ | २३७४(१) | ,, | ,, | १८५७ | १६ | |
| १७९६ | ३४८७ | ,, | ,, | १७वीं | २४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १७९७ | ३५५४(६) | शालिभद्र चोपाई | मतिसार | १८७९ | १–८ | |
| १७९८ | ३८७० | ,, ,, | ,, | १६८९ | १८ | |
| १७९९ | ३९५५ | ,, ,, | ,, | १७वी | १८ | |
| १८०० | ३४९५ | ,, ,, | | ,, | ९ | |
| १८०१ | ३५५०(७) | ,, ,, | मतिकुशल | १९वीं | ५०–६९ | |
| १८०२ | ४८०४ | ,, ,, | ,, | ,, | १२ | |
| १८०३ | ५०६५ | ,, ,, | | १८४३ | १८ | लि स्था सवाई जयपुर |
| १८०४ | ६१४० | ,, ,, | | १८१८ | ४८ | |
| १८०५ | ६५४३ | ,, ,, | | १८५१ | २६ | |
| १८०६ | ६८४६ | ,, ,, | | १८२८ | १७ | लि क खुशालचद |
| १८०७ | ७५६३ | ,, ,, | ,, | १७७२ | १३ | |
| १८०८ | ७५६४ | ,, ,, | ,, | १८०६ | २६ | लि क. खुशाल |
| १८०९ | ५४५८(२) | ,, श्लोक | | १८५६ | १–१० | |
| १८१० | २४१३ | शालिहोत्र | | १८५१ | ८ | |
| १८११ | ३५४९(४) | ,, | | १९वीं | ४०–४५ | |
| १८१२ | ३५५०(६) | ,, | | ,, | ४१–५० | |
| १८१३ | ४७७७ | ,, | | २०वीं | ६० | |
| १८१४ | ६८२६ | ,, | | १९१५ | १०५ | १,३ पत्र अप्राप्त |
| १८१५ | ७७३० | ,, गुटका | | १९४३ | ३४ | लि क राव जयसिंह, वदनोर फतेबुर्जमध्ये |
| १८१६ | ७७६७ | ,, सचित्र गुटका | | १९वीं | १३९ | चित्र स० ११८ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १८१७ | ७८३७ | शालिहोत्र सचित्र | | १९वीं | ६–७२ | चित्र स० ४८ |
| १८१८ | ३५७५(३०) | शाश्वतजिनवरस्तवन | | २०वीं | १३०–१३८ | |
| १८१९ | २८९३(११७) | शास्त्रीय विचार | | १७वीं | २३९–२४२ | |
| १८२० | ११३८ | शिखनखवर्णन | केशवदास | १९वीं | १६ | |
| १८२१ | ३५७५(५३) | शिखामणस्वाध्याय | | २०वीं | २५१–२५२ | |
| १८२२ | २८५२ | शिवरात्री कथा | | १८६६ | १४ | |
| १८२३ | ३५४६(२१) | ,, | | १८१९ | १४२–१४३ | |
| १८२४ | ३२७ | शिवरात्री कथा चोपाई | जावड ? | १७८६ | २४ | |
| १८२५ | ७७२२(१३) | ,, | | १७२७ | १२५–१५२ | |
| १८२६ | ३९५६ | ,, ,, | | १७वीं | ४ | |
| १८२७ | ३५४६(१४) | शिवरात्रीरी वारता | | १८०५ | ११३–११५ | |
| १८२८ | ३५५५(१४) | शिवरात्रीरी कथा | | १९वी | ९५–९९ | |
| १८२९ | ४००१ | , | | १८वी | ५ | |
| १८३० | ५२९६ | शीतलनाथस्तवन | समयसुन्दर | २०वीं | ३२–३४ | |
| १८३१ | ३५७५(५) | शीयलबावनी | | १९वी | २ | |
| १८३२ | २०५७ | शीलरक्षारास | विजयदेवसूरि | १७वी | ७ | |
| १८३३ | २१६५ | ,, | नयसुन्दर | १६७३ | ९ | |
| १८३४ | ३५७३(३७) | ,, | विजयदेवसूरि | १९वी | ९७–१०१ | |
| १८३५ | ३८९० | , | ,, | १७वीं | ६ | |
| १८३६ | ३४७८ | शीलरास | | १६४४ | १० | |
| १८३७ | ४०७१ | , | ,, | १७९२ | ७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १८३८ | ५४१८(२३) | शीलरास | कवि जैत | १९वीं | १४९–१५० | |
| १८३९ | २०५३ | शीलवतीचरित्र | नेमविजय | १८३० | ५३ | |
| १८४० | ११२४(८) | ,, चोपई | ललितसागर | १६७६ | १–३२ | |
| १८४१ | २१७३ | शीलसिलोकोरास | ज्ञानचद | १८४० | १२ | |
| १८४२ | ५२९६ | शीयलबावनी | | १९वीं | २ | |
| १८४३ | ९०३ | शुकबहोतरी चोपाई | रत्नसुन्दर | १९०८ | ८५ | |
| १८४४ | ४०१० | ,, | देवीदान | १८९९ | ४७ | लि क विजयसुन्दर |
| १८४५ | ४४१९ | ,, | देवदत्त | १७९० | ५० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १८४६ | २०८७ | शुकराजकथा | तेजविजय | १९वीं | ३३ | |
| १८४७ | २८९३(२६) | शुद्धसमकितगीत | हीरकलश | १६२२ | ६० वां | |
| १८४८ | ३५६७(२४) | षट्चकवैकवित्त | | १९वीं | १४५–१४६ | |
| १८४९ | ७०१८ | षट्पचाशिका भाषा | | १७६९ | १५ | |
| १८५० | ३५६७(६) | षडदर्शनवर्णन कवित्त | | १९वीं | १०५–१०६ | |
| १८५१ | ३२५१ | षडबलवार्ता | | १७१९ | ५ | |
| १८५२ | ९५७ | षडावश्यक बालावबोध | समयसुन्दर | १८वीं | ३३ | |
| १८५३ | २१६० | ,, | | १७वीं | ३० | |
| १८५४ | ६०१ | षष्टिसवत्सरफल | | १८वी | १३ | |
| १८५५ | ६५४ | ,, | | १८७१ | १७ | |
| १८५६ | ५३७६(६) | षोडशकारणकथा | शुद्धकीर्ति | १७६९ | ९०–९४ | |
| १८५७ | ५३७६(१७) | ,, | | ,, | २०६–२११ | |
| १८५८ | ५३७६(१६) | ,, रासा | सकलकीर्ति | , | २०३–२०६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १८५९ | ३५७३(३५) | सचिआईजीरो छन्द | रघुपति | १९वीं | ८८–८९ | |
| १८६० | ४९१५(१२) | सज्जनप्रेमदूहा | | १८८७ | ३७७–३८४ | |
| १८६१ | २८९३(११७) | सज्झाय | हीरकलश | १६२२ | १७३ वां | |
| १८६२ | ७४४४(२१) | सज्झायसग्रह | | १८८६ | ३२७–३७३ | |
| १८६३ | ७५३८ | ,, | | १८वीं | ४ | |
| १८६४ | ३५७३(४९) | ,, स्तवन आदि | | १९वीं | १२०–१२८ | |
| १८६५ | ३५७३(९) | ,, सग्रह | | ,, | ३१–३२ | |
| १८६६ | ६२८६ | सत्तरभेदीपूजा | साधुकीर्ति | १८५३ | १४ | |
| १८६७ | ७४८० | सत्तरीशयठाणप्रकरण | ,, | १६२३ | ४० | |
| १८६८ | ४०५४ | सतीगुणावलीचोपई | गजकुशल | | १२ | |
| १८६९ | ९७६(१) | स्तभनपार्श्वनाथउत्पत्तिस्तव | कुशललाभ | १९११ | १–२ | |
| १८७० | ३५७५(८) | ,, | ,, | २०वीं | ३८–४४ | |
| १८७१ | २३०८(२) | स्तवनपद आदि सग्रह | | १८१९ | १७–४३ | |
| १८७२ | ३५४९(६) | स्तवनादि | | १९वीं | ४७–४८ | |
| १८७३ | ३५६७(२३) | ,, | | ,, | १४२–१४५ | |
| १८७४ | १७६३ | स्त्रीकुण्डलिकाविचार | | ,, | १ | |
| १८७५ | २३००(१) | स्त्री प्रति पुरुष लेख | | १८७९ | १–४ | |
| १८७६ | २०९६ | स्त्री प्रशसा आदि | | १७वीं | १ | |
| १८७७ | ३३८० | स्थूलभद्रएकवीसउ | लावण्यसमय | ,, | ३ | सं १५५३में रचित |
| १८७८ | ३५७३ | ,, | ,, | १९वी | ४९–५१ | |
| १८७९ | २१९५(३) | स्थूलभद्र कथा | | ,, | ८–१० | |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १८८० | २०२३(२) | स्थूलभद्रकोश्याभास | नयसुन्दर | १७३४ | २–३ | |
| १८८१ | ९२५ | ,, गुणरत्नाकर छद | सहजसुन्दर | १८८१ | २५ | |
| १८८२ | ३५७५(५६) | ,, रास | उदयरतन | २०वीं | २६४–२७७ | |
| १८८३ | १५६५ | ,, शीयल वेली | वीरविजय | १८७१ | ११ | |
| १८८४ | ३५५०(१४) | ,, सज्झाय | | १९वीं | ८९–९० | |
| १८८५ | ४९२४(१४) | ,, , | सिद्धिविजय | ,, | ३५–३६ | |
| १८८६ | ७२४७ | ,, स्वाध्याय | ,, | ,, | १ | |
| १८८७ | ८८८ | सवैवच्छसावंलिगारी वात | | १७५२ | ८ | |
| १८८८ | ९२१ | ,, | | १९वी | १८ | |
| १८८९ | ११४४(५) | ,, | | ,, | ३५–४७ | |
| १८९० | २११९ | ,, | | १८६१ | ४ | |
| १८९१ | ३५१७ | ,, | | १८वीं | ११ | |
| १८९२ | ३५५५(२१) | ,, | | १९वीं | १३३–१४५ | |
| १८९३ | ३५५९ | ,, | कविजन | १८२० | १–३८ | |
| १८९४ | ३५७३(६) | ,, | | १९वी | २२–२९ | |
| १८९५ | ४९१८(२) | ,, | | १७९९ | २१–५२ | लि क प्रोहित जोधा मनोहरपुरका |
| १८९६ | ७१७३ | ,, | | १८७६ | २७ | लि क. मथुरालाल |
| १८९७ | ७७२२(५) | ,, | | १९वी | ५३–५६ | |
| १८९८ | ५४५८(२) | ,, सचित्र | | १८३८ | ५४ | चित्र स ७ |
| १८९९ | ४९२४(१) | ,, | | १७८७ | १–८ | |
| १९०० | ४९१६(४) | ,, | | १८७५ | ५४–७२ | लि क. सौभाग्यगणि |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९०१ | ४१४७ | सवैवच्छसावलिंगारी वात | | १८१९ | ३९ | |
| १९०२ | ६९८९ | ,, ,, | | १८५६ | १९–१०८ | लि क राधाकृष्ण |
| १९०३ | ७७६८ | ,, ,, सचित्र गुटका | | १८वी | १–७ तथा १९–२५ | चि स ७७ |
| १९०४ | ७८४५ | ,, ,, | | १७वी | ७–८४ | चि स १४ |
| १९०५ | ५२०२(७) | ,, अपूर्ण | | १८८५ | १२३–१४१ | |
| १९०६ | २०१४ | सनत्कुमारचक्री रास | लब्धिविजय | १९वीं | १०२ | |
| १९०७ | ५११६ | ,, प्रबधचोपाई | | १८०० | २० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १९०८ | १०१३ | सनीछरछद | | १८वी | १ | |
| १९०९ | २१०४ | ,, | | १९वी | १ | |
| १९१० | २३०९(४) | ,, | हेम | ,, | १५–२० | |
| १९११ | ३०२०(१) | ,, | ,, | १८वीं | १ | |
| १९१२ | ३५४८(२) | ,, | ,, | ,, | १९–२० | |
| १९१३ | ३५५४(२०) | ,, | ,, | १९वीं | ३१ वां | |
| १९१४ | ३५६२(७) | सनीसरछद | हेम | २०वीं | ५६–५९ | |
| १९१५ | ३९५४ | ,, | ,, | १७४४ | १ | |
| १९१६ | २१८५ | सनीसरजीरी कथाचोपई | जोरावरमल्ल | १८८० | ८ | |
| १९१७ | ३५६२(८) | ,, जी रो स्तोत्र | | २०वीं | ५९–६० | |
| १९१८ | ३५५४(१९) | सनीसरकथा | | १९वीं | ३१ वां | |
| १९१९ | १८८४ | ,, | | ,, | २ | |
| १९२० | २३२७ | ,, | जोरो | १८६५ | १–२८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९२१ | २९२२ | सनीचरकथा | | १८८३ | ३० | |
| १९२२ | ३५६२(६) | ,, | जोरो | १९७० | ३४–५६ | |
| १९२३ | ३५६२(९) | ,, वारता | | १९७० | ६०–६६ | |
| १९२४ | ७४४४(१२) | स्नात्रविधि | देवचद्र | १८८५ | २१२–२४५ | |
| १९२५ | २२१७(४) | सप्तव्यसन दूहा कुडलिया | भीम | १८वीं | ३ रा | |
| १९२६ | ११२२(५३) | सपाईनीजातिसबद | | १९वी | ७२ वाँ | |
| १९२७ | २२७६ | ,, | मगनीराम | १९२० | ४ | |
| १९२८ | ५१२३(८) | स्फुट ज्योतिषचक्रादि | | १८८५ | ४१–४९ | |
| १९२९ | ७७५३(१५) | स्फुट पद्य | | १८३७ | ८९–१०६ | |
| १९३० | ४९१४(५१) | सबोधसत्तानू दूहा | वीरचन्द | १८७७ | २७९–२८३ | |
| १९३१ | ३९०८ | सम्यक्त्वकौमुदी कथा चोपाई | रूपऋषि | १८८६ | ४२ | |
| १९३२ | ३९०९ | ,, भाषा | | १८३४ | ३० | |
| १९३३ | २०६३ | समकितकुलकचोपाई | | १७वी | १९ | |
| १९३४ | ३५४३(४) | ,, सज्भाय | लक्ष्मीसुन्दर | १८८२ | ७–९ | |
| १९३५ | ४९१४(३) | सम्मेदशिखरनिर्वाणकाण्ड | | १८७१ | १५८–१६० | |
| १९३६ | ४७२४ | समयरे राजारो फल (वर्षपति फल) | | १९वीं | १ | |
| १९३७ | २३७४(४) | समरासारगकडखो | देपाल कवि | ,, | २५–२६ | * |
| १९३८ | ३५७५(६९) | समवसरणदेशना | शिवचन्द्र | २०वी | ३००–३०३ | |
| १९३९ | ३५७५(७५) | ,, स्तवन | धर्मवर्द्धन | , | ३०८–३११ | |
| १९४० | १११५ | ,, स्तव बालावबोध | | १९वी | ६ | |
| १९४१ | ३५०७ | समाधितन्त्र बालावबोध | पर्वतधर्मार्थी | १७६५ | ८५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९४२ | ५३७६(१५) | समाधिरास | | | २०२—२०३ | |
| १९४३ | ३५७५(४९) | स्याद्वादनयस्तवन | श्रीसार | २०वी | २३९—२४० | |
| १९४४ | ४२३ | सरस्वती छन्द | | १८०५ | १ | |
| १९४५ | ९९७ | ,, | शान्तिकुसल | १९वी | २ | |
| १९४६ | २३१२ | ,, | हेम | ,, | २ | |
| १९४७ | २३२७ | ,, | दयासूर | ,, | १६—१७ | |
| १९४८ | २८९३(२०) | ,, | लावण्यसमय | १७वीं | १२ वाँ | |
| १९४९ | २८९३(२१) | ,, | मतिसुन्दर | ,, | ,, | |
| १९५० | ३२४४ | ,, | सहजसुन्दर | १९वीं | २ | |
| १९५१ | ३५४८(९) | ,, | हेम | ,, | १४—१६ | |
| १९५२ | ४८०२ | ,, | | ,, | ३ | |
| १९५३ | ४२८७(१६) | सवाई जैसिंघजीकी जोधपुर पर चढाईका कवित्त | | १८वीं | १२७—१३० | * |
| १९५४ | २२०० | सवा सो सीख | धर्मसी | २०वीं | २ | |
| १९५५ | १७५९ | स्वरोदय | चरनदास | १९०२ | १४ | |
| १९५६ | २५१० | ,, | चिदानद | १९११ | २१ | |
| १९५७ | ३२३४ | स्वातहँरण चोपाई | गोदडदास | १८११ | २० | |
| १९५८ | ३५५५(२४) | सवैया दूहा | | १९वीं | १४९—१५० | |
| १९५९ | ७७५३(१३) | ,, | | १८३७ | ७० वाँ | |
| १९६० | ४२८७(३) | ,, इकतीसा | बनारसीदास | १७२६ | १२—१३ | बनारसीदासके स्वाक्षर लिखित ५ पद्य है |
| १९६१ | ४०८१ | ,, बावनी | राजसी | १९वीं | ५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९६२ | ४६०६(४) | सवैया बावनी | राज कवि | १७९८ | २५–३४ | लि क केवलसौभाग्य |
| १९६३ | ४४५२(२०) | , सपखरो आदि | | १८वीं | २० वाँ | |
| १९६४ | ४४५२(१४) | ,, सग्रह | प्रताप, ब्रह्म गुलाल आदि | ,, | १७ वाँ | लि क प्रीतिसौभाग्य |
| १९६५ | ४४५२(८३) | ,, ,, | श्याम काशीराम आदि | ,, | १२४ वाँ | |
| १९६६ | ५५२४ | सत्रहभेदी पूजा | साधुकीर्ति | १८६४ | ९ | |
| १९६७ | ६३३ | सहमफल स्पष्टाध्याय | | १९वी | १ | |
| १९६८ | ५९१ | साठ सवच्छरी | | १७वी | ५ | |
| १९६९ | २५५६ | साठ सवच्छर दोहा | | १९०६ | १२ | |
| १९७० | २८३७ | साठी सवच्छर फल | | १८९० | ४५ | |
| १९७१ | ३५६४(४) | ,, | | १८६१ | १–२२ | |
| १९७२ | ५४१० | ,, | | १८वीं | ८३ | प्रश्नावली और मोहर्रमके चाँद आदिका फल है |
| १९७३ | ३५५५(६) | सात वाररा दूहा | | १९वीं | १६ वाँ | |
| १९७४ | ४९२४(१२) | ,, विघडिया | | १७९० | १३–१४ | |
| १९७५ | २८९३(३६) | सात विसन गीत | हीरकलश | १६२२ | ७० वाँ | |
| १९७६ | ४९२४(११) | सात सखीरो सवाद | | १७९३ | १२–१३ | |
| १९७७ | ४४५२(९४) | ,, (प्रहेली) | | १८वी | १३० वाँ | |
| १९७८ | २१०८ | साधुप्रतिक्रमण बालावबोध | | १७वी | १८ | |
| १९७९ | २१७६ | साधुवदना | पासचद | १७३५ | ६ | |
| १९८० | २२०४ | साबप्रद्युम्न चोपाई | समयसुदर | १८३८ | २५ | |
| १९८१ | २८८६ | ,, | ,, | १६९४ | २२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९८२ | ४००० | सांबप्रद्युम्न चोपाई | समयसुन्दर | १८वीं | १५ | |
| १९८३ | २८९३(३०) | सामयिक बत्रीस दोषविवरण कुलक चोपाई | हीरकलश | १७वीं | ६५—६६ | |
| १९८४ | २५७२ | सामुद्रिकशास्त्र भाषा | | १७७४ | ४ | |
| १९८५ | ८६५ | सारसिखामणि रास | सवेगसुन्दर | १८वीं | ६ | |
| १९८६ | १८६८(५) | सावण | मालदेव | १७९३ | १—१३ | |
| १९८७ | ११२२(४३) | सासबहूनो सवाद | | १९वी | ५३ वां | |
| १९८८ | ११२४(४) | साहराउल नीलवण भास | दानसागर | १६७५ | १ | |
| १९८९ | ३७५१ | साहाकाढणरा दूहा | मोतीराम | १९वीं | ३ | |
| १९९० | ३५४८(७) | साहिजादा कुलबुदीन साहबरी वारता | | १७९६ | २—१३ | |
| १९९१ | ३५१२ | सिद्धचक्ररास | ज्ञानसागर | १६८५ | १६ | |
| १९९२ | ३५७५(५८) | सिद्धक्षेत्रचैत्यपरिपाटी | देवचद्र | २०वीं | २८४—२९१ | |
| १९९३ | ३५११ | सिद्धातचोपाई | | १७वीं | १ | |
| १९९४ | २८९३(५५) | ,, बोल | | ,, | ९०—९३ | |
| १९९५ | ७३०५ | ,, ,, | | १६१० | ४७ | |
| १९९६ | ७५४६ | सिद्धातसारोद्धार | | १७७६ | ५९ | अन्त्य ३ पत्र त्रुटित |
| १९९७ | ६३८३ | सिरीसातणी भास | लावण्यसमय | १८वीं | २ | |
| १९९८ | ३५५५(१६) | सिरोही मांडवी बीकानेरी जोधपुरी बोलियां | | १९वी | १०२ वां | * |
| १९९९ | ४००६ | सिंहलसुत चोपाई | समयसुदर | १७९४ | ६ | लि क. कुशलहर्ष |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २००० | ४८२८ | सिंहलसुत चोपाई | समयसुदर | १७वीं | ६ | |
| २००१ | ९११ | सिंहासनबत्तीसी | | १७९० | १३ | |
| २००२ | २१४४(२) | ,, | क्षेमकर ? | १८३३ | १५—३५ | |
| २००३ | २१६८ | | देईदान | १७८२ | २९ | |
| २००४ | २८९३(१) | ,, द्वात्रिंशिका | | १६२९ | ३ | अत्यके ३ पत्र हैं |
| २००५ | ३१३४(१) | ,, चोपाई | हीरकलश | १९वीं | १—८५ | |
| २००६ | ३२९० | सिंहासनबत्तीसी | जेराज कवि | १८७८ | ७६ | |
| २००७ | ३४९० | ,, चोपाई | हीरकलश | १७वीं | १४२ | |
| २००८ | ३५५६(२) | ,, कथा | माधव | १८८७ | ७८—११३ | |
| २००९ | ३५६७(७) | सीकोतरी छद | | १९वी | १०६—१०७ | |
| २०१० | ११४४(२) | सीखबहुत्तरी | | ,, | २८—३० | |
| २०११ | २०७५ | सीखामण ढाल | | १७वीं | ३ | |
| २०१२ | ८९ | सीताराम चोपाई | समयसुदर | १७८३ | १०२ | |
| २०१३ | १८०८ | ,, | ,, | १७३५ | ६६ | |
| २०१४ | ६५३६ | सीताराम चौपाई | ,, | १८वी | ६२ | |
| २०१५ | २०३८ | ,, | ,, | ,, | ८० | प्रथम प्रत्र अप्राप्त |
| २०१६ | ३९५८ | ,, | ,, | ,, | ८२ | मेडतामे रचित |
| २०१७ | ७७५३(२) | सीतासज्झाय | जिनहर्ष | १८३७ | ३०—३१ | |
| २०१८ | ३५७३(२८) | सीमधर जिन वीनती | भक्तिलाभ | १९वीं | ७९—८० | |
| २०१९ | ३५७५(४) | ,, ,, | ,, | २०वीं | ३०—३२ | |
| २०२० | २३२७(२) | ,, ,, | | १९वी | १०—१५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०२१ | २३७४(१६) | सीमधरजिनस्तवन | | १६वीं | ८०–८३ | |
| २०२२ | ३५७५(३५) | सीमधरजीको जीवाजीकी चिट्ठी | | २०वीं | १६७–१७३ | |
| २०२३ | ३६११ | सुदर्शनचरित्र चोपाई | ब्रह्मऋषि | १८५० | १६ | |
| २०२४ | ५३७६(१) | सुदर्शन सेठकी कथा | नन्द ? | १७६१ | १–३१ | |
| २०२५ | ४००७ | ,, रा कवित्त | दीपो | १८८० | २१ | लि क इद्रभाण |
| २०२६ | ४०८६ | ,, ,, | ,, | १८८४ | २० | लि क बाई चपा |
| २०२७ | ३६१० | ,, रास | ,, | १८६१ | १६ | |
| २०२८ | २०८३ | ,, शीलप्रबध | | १५७० | १३ | स १५०१मे रचित |
| २०२९ | १८२३ | ,, सज्झाय | | १७७६ | ३ | |
| २०३० | ३५५०(१३) | ,, ,, | हर्षकीर्ति | १६वीं | ८८–८६ | |
| २०३१ | २८३२(४) | सुदामाकी बाराखडी | | १७७४ | ८५–८८ | |
| २०३२ | २५७५(२) | सुपनविचार चोपई | ज्ञानशील | १८वीं | १२–१३ | स १५६०मे रचित |
| २०३३ | ६२७४ | सुबाहुचरित्र | | १६वीं | ८ | |
| २०३४ | ६३८८ | ,, | माणिक्यसूरि | १८वीं | ६ | |
| २०३५ | ११२३(१३) | सुबाहुरिषिसधि | पुण्यसागर | १७वीं | ७१–७४ | |
| २०३६ | ३५७३(१८) | ,, | ,, | १६वीं | ५७–६० | |
| २०३७ | ६८१ | सुभद्राकथा बालावबोध | विनयकुशल | ,, | ११ | |
| २०३८ | २०६६ | सुभद्रारास | भावप्रभ | १८वी | १३ | |
| २०३९ | ४००८ | सुभद्रासतीरो चोढालियो | मानसागर | १८७६ | ५ | लि क चैनराम |
| २०४० | ११४२(१) | सुभाषित | | १८वी | १–१७ | |
| २०४१ | ४६१२ | ,, | | १६वीं | ४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०४२ | २१५३ | सुभाषित दोहा कवित्त आदि | | १७वीं | २० | |
| २०४३ | २८९३(१६) | सुभिक्षादि वर्णन | | ,, | १० वाँ | |
| २०४४ | २२१७(३) | सुमतिजिनस्तवन | खेम मुनि | १८वीं | ३ रा | |
| २०४५ | २०६१ | सुमतिनागिल चोपाई | | १७६० | ३२ | |
| २०४६ | ५४१८(३) | सुरतपचमीकथा | बनवारीदास | १९वी | १–८७ | |
| २०४७ | ३५१०(३) | सुरप्रियऋषिसज्झाय | लक्ष्मीरत्न | १८वी | ३–४ | |
| २०४८ | ९६३ | सुरसुन्दरी चोपाई | धर्मवर्द्धन | १७६१ | १९ | |
| २०४९ | ९१० | ,, चरित रास | विनयसुदर | १७वीं | १६ | |
| २०५० | ३९१२ | ,, चोपाई | धर्मशील | १८५० | २५ | |
| २०५१ | ३९५९ | ,, ,, | नयसुदर | १७वीं | १९ | |
| २०५२ | ५९३० | ,, ,, | धर्मवर्धन | १८४२ | २८ | पत्र २० से २३ तक अप्राप्त |
| २०५३ | ४००९ | ,, ,, | शुभशील | १९वी | १७ | |
| २०५४ | ७२४४ | ,, ,, | धर्मवर्धन | १८४८ | २१ | |
| २०५५ | ४८०१ | ,, रास | नयसुन्दर | १६८८ | २६ | लि क राघवकेशव |
| २०५६ | ३२८४(५) | सुरेखाहरण | वीरो | १८१६ | १–८७ | |
| २०५७ | २८९३(१२८) | सुवर्णसिद्धिप्रयोग | | १७वीं | १९१ वाँ | |
| २०५८ | ३५५५(११) | सुवाबहुत्तरीकथा | देवदत्त भट्ट | १९वीं | १–५८ | |
| २०५९ | ३६६७ | सुक्तिमाला | | १९१२ | १५ | |
| २०६० | ७३७४ | सुक्तिमुक्तावल | केशरविमलगणि | १९वीं | २५ | लि क इष्टहस |
| २०६१ | ११६५ | सूर्यजीरो सिलोको | | १८५३ | १–३ | |
| २०६२ | ६४१८ | सूरजजीरो सिलोको | | ,, | २ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०६३ | २३६८(९) | सूरजजीरो सिलोको | सेवग | १९वीं | ३७–३९ | |
| २०६४ | ३२५५ | ,, | | १८०१ | १ | |
| २०६५ | ३५५७(३) | ,, | | १८वो | ७२ वां | |
| २०६६ | ७७२५ | सूरजप्रकाश | करणीदान | १८४१ | ३०० | |
| २०६७ | ३५६२(३) | सूरजजीरो सिलोको | | १९५६ | १७–१८ | |
| २०६८ | २३६०(१) | सूडाबहत्तरी वात | देवीदान | १९वीं | १४ | |
| २०६९ | २०४४ | सूरपालचरित्र रास | सकलचद | १८वीं | १५ | |
| २०७० | ७५१ | सूर्यपुराण (कथा) | तुलसीदास | १८८७ | ७ | |
| २०७१ | ६७५२ | सेऊसमनकी परची | गोविददास ? | १९२९ | ३ | |
| २०७२ | ३५४६(२) | सेरसिह मेडतिया आदि अनेक राजाओका सपखरा | | १९वीं | ६–१० | * |
| २०७३ | ३५४६(१०) | सोनीगरा विरमदेरी वारता | | , | ८६–९३ | * स १४८५के समान |
| २०७४ | २८६१(२) | सोमवती अमावसरी कथा | | १८३४ | ८–१४ | |
| २०७५ | ४०११ | ,, वारता | | १८४३ | ३ | लि क जीवणराम |
| २०७६ | ७७२२(३) | सोरठरा दूहा | | १८वीं | ४६–४८ | |
| २०७७ | २१४२(१) | सोरठवीभेंरी वात | | १९वीं | १–५ | |
| २०७८ | ५४१८(२२) | सोलहकारणका रासा | | ,, | १४७–१४९ | |
| २०७९ | ४९१४(४५) | सोलह स्वप्न वीनती | | १८७७ | २७४ वां | |
| २०८० | २२२४ | सौभाग्यपचमी चोपाई | जिनरग | १८वीं | १७ | |
| २०८१ | ६३५८ | ,, | | ,, | २५ | |
| २०८२ | २३७१(१) | सकष्टचतुर्थीव्रतकथा | | २०वी | १२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०८३ | २५४३ | सक्रान्ति फल | | १७५४ | १ | |
| २०८४ | २५४० | ,, तथा पूनमविचार | | १९वीं | २ | |
| २०८५ | ११२२(६४) | सखणीस्त्रीनो छव | | ,, | ८४–८५ | |
| २०८६ | २८९३(८६) | सख्याताविचार | | १७वीं | १४९ वाँ | |
| २०८७ | ९८४ | सग्रहणीचोपाई | मतिसागर | १८३१ | १७ | |
| २०८८ | ३९१४ | ,, बालावबोध | शिवनिधान | १८११ | ७३ | |
| २०८९ | ३९६१ | ,, चोपाई | ,, | १८वीं | १५ | |
| २०९० | ३९१५ | ,, बालावबोध | दयासिंह | ,, | ६२ | |
| २०९१ | ३५७५(१८) | सतोषछत्तीसी | समयसुन्दर | २०वीं | ८५–८८ | |
| २०९२ | ९८९ | सवेगरसायनबावनी | कातिविजय | १९वीं | ६ | |
| २०९३ | २१९३ | हसराजवच्छराजचोपाई | जिनोदय | १९०९ | २५ | |
| २०९४ | ३९६२ | ,, | ,, | १७वीं | २६ | |
| २०९५ | ३९९३ | ,, | ,, | १८२९ | २४ | |
| २०९६ | ५८९२ | ,, सचित्र | ,, | १८३५ | ४४. | स १६८०में रचित, चि स १०३ |
| २०९७ | ५४३१(२) | ,, अपूण | | १६१० | ६४ से | |
| २०९८ | ७४०२ | ,, | ,, | १८६६ | ३४ | लि क. वृद्धिचद्र |
| २०९९ | ६५३५ | ,, | , | १९वीं | ४२ | |
| २१०० | ९४३ | ,, ,, रास | ,, | १७१२ | २१ | |
| २१०१ | ७२२७ | ,, ,, | ,, | १८८३ | ४६ | |
| २१०२ | ५२०९ | हसवत्सचौपई | | १८वीं | ६२ | चि स ६५ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २१०३ | ५४३१(१) | हसावन्ती (अपूर्ण) | | १६१० | ५१–६४ | |
| २१०४ | ४४५२(७०) | हणमतरो छद | | ,, | १२० वाँ | |
| २१०५ | ७७२१(१४) | हनुमान छद | नरहरदास | १६३१ | २०१–२०३ | |
| २१०६ | १८८६(१८) | हमीररासो | | १८५६ | २८ | गुटका |
| २१०७ | ४६०२ | ,, | | १७८७ | ५६ | * लि क नाथूराम पाडे गौड |
| २१०८ | ५३८४(१) | ,, | कवि महेश | १६४४ | १–७० | लि क मनसाराम |
| २१०९ | ७१६७ | हमीरहठवारता | | २०वीं | गुटका | |
| २११० | २३७४(१०) | हरचवपुरी | | १६वी | ३४–३६ | |
| २१११ | ३५६७(१२) | हरजस | | ,, | १२७–१२८ | |
| २११२ | ६४४६(४) | ,, | | ,, | १–४ | |
| २११३ | ३५७३(१३) | हरिकेसीचरित्र नवरसरास | कनकसोम | ,, | ३५–३८ | |
| २११४ | ३५५५(६) | हरिगुणकष्टहरणस्तोत्र | चद कवि | ,, | १४ वाँ | |
| २११५ | ४०१२ | हरिचदरास | जिनहर्ष | १८८२ | २५ | लि क क्षेमाब्धि |
| २११६ | ४८२६ | ,, | कनकसुन्दर | १८८५ | १७ | |
| २११७ | ५३३ | हरिजसनाममाला | रतनूहमीर | १८८१ | २८ | |
| २११८ | ७७२१(६) | ,, | ,, | १८२५ | १४४–१६५ | |
| २११९ | ३४६१ | हरिबल चोपाई | लावण्यकीर्ति | १७वी | ३० | २८वाँ पत्र अप्राप्त |
| २१२० | ३५७३(२०) | ,, धीवर चोपाई | | १६वी | ६१–६५ | |
| २१२१ | ११२३(२) | हरिबल रास | कुशलसयम | १७वीं | ६–२२ | |
| २१२२ | २८६३(४८) | हरियाली (हीयाली) | हीरकलश | ,, | ८८ वाँ | |
| २१२३ | २८६३(५०) | ,, ( ,, ) | हेमाणद | ,, | ८६ वाँ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २१२४ | २८९३(५१) | हरियाली (हीयाली) | वील्हा | १७वीं | ८६ वाँ | |
| २१२५ | ४६०५ (१०,११,१२) | हरियालीरा दूहा ,, | | १६वी | ३६—३८ | |
| २१२६ | २३७७(३) | हरिरस | ईसरदास बारहठ | १८०७ | १६ | |
| २१२७ | ३५५५(८) | ,, | ,, | १६वीं | ६—१४ | |
| २१२८ | ३५५७(८) | ,, | ,, | १७९६ | ८२—९७ | |
| २१२९ | ४९२४(८) | ,, | ,, | १७९३ | १—१० | |
| २१३० | ५३४३ | ,, | ,, | १८वीं | ५ | |
| २१३१ | ७७२१(१२) | ,, | ,, | १९३१ | १८०—१९९ | लि क फूलगिरि |
| २१३२ | ७७५०(१) | ,, | ,, | १८६० | १—२१ | |
| २१३३ | ४९१४(२) | हरिवशपुराणनो रास | ब्रह्मजिणदास | १८७१ | ७—१५७ , १७१—२०१ | लि क चद्रकीर्ति |
| २१३४ | २५४८ | हस्तरेखाचित्र | | १६वीं | १ | |
| २१३५ | ४४५२(९२) | हाथियारा बखाण | | १८वीं | १३० | |
| २१३६ | ४९२४(६) | हाथीरा बणाव | | १७९३ | ११ वाँ | |
| २१३७ | ३५६७(५) | हिंगुलाज प्राणदेवायण | ईसर बारोठ | १६वीं | १००—१०५ | |
| २१३८ | ४४५२(२४) | हिंगुलाष्टक | रामसरण ? | १८वीं | २४ वाँ | |
| २१३९ | ७४१७ | हिंडोलणा आदि | | १७वी | १ | लि क खेतसी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र सख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २१४० | ३५७४(१) | हितोपदेश भाषा | | १७७३ | ११४ | |
| २१४१ | २८९३(६८) | हीयाली | हीरकलश | १७वी | १३४ वाँ | |
| २१४२ | २८९३(६९) | ,, | हेमाणद | , | ,, | |
| २१४३ | २८९३(७०) | हीयाली | हेमाणद | १६५७ | १३५ वाँ | |
| २१४४ | ३५१०(४) | ,, | | १८वीं | ४ था | |
| २१४५ | २८९३(१५) | हीरकलश गोत्राविवर्णन | | १७वीं | १० वाँ | * |
| २१४६ | २८९३(९५) | हीरकलश मुनिस्तुती | विल्हण | , | १६१ वाँ | |
| २१४७ | ४१६८ | हीरराझ्याको तमासो | | १९५४ | ३२ | लि.क नाथूनारायण शर्मा |
| २१४८ | २१०७ | हीरसूरि रास | ऋषभदास | १८वीं | ८२ | पत्र १-२ अप्राप्त |
| २१४९ | २३९८(७) | हीरसूरि सज्झाय | आणद | १९वीं | ५० वाँ | |
| २१५० | ३५७३(४) | हुणाडा मडनसुमतिजिनस्तवन | देवसूरि | ,, | १८ वाँ | |
| २१५१ | १७५८ | होलीविचार | | ,, | १ | |
| २१५२ | २३७४(८) | क्षमाछत्तीसी | समयसुन्दर | ,, | २८-३१ | |
| २१५३ | ३५७५(२०) | ,, | ,, | २०वीं | ९१-९५ | |
| २१५४ | २३१३ | क्षेत्रपाल छद | माधो | १९वीं | २ | |
| २१५५ | ९५६ | क्षेत्रसमासकरणी बालावबोध | वत्सराज | १७वीं | १३ | |
| २१५६ | ४८३९ | क्षेत्रसमास | रत्नशेखर | १७८२ | ७१ | पत्र स १, २ अप्राप्त |
| २१५७ | ७३६७ | ,, | | १७वीं | १५ | |
| २१५८ | ७४०३ | ,, | | १८५१ | ६ | |
| २१५९ | ७५२३ | क्षेत्रसमास चौपाई | मतिसागर | १६८२ | १४ | स १५९४मे रचित |
| २१६० | ४०२१ | ,, प्रकरण सबालावबोध | रत्नशेखर | १८२१ | २० | |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रंथ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २१६१ | ७६१ | त्रिपुरा छंद | | १९वी | २ | |
| २१६२ | ३८८५ | त्रिभुवनकुमार रास | उत्तमसागर | १८वी | २६ | |
| २१६३ | ३९७३ | ,, | ,, | १७९३ | २१ | |
| २१६४ | २१६२ | त्रैलोक्यदीपिका चोपाई | दान (सदारंगशिष्य) | १८वीं | ४ | |
| २१६५ | २०६५ | ज्ञाताभास तथा मोलसतीभास | मेघराज | १७२० | १८ | |
| २१६६ | २०४८ | ज्ञानपंचमीस्तवन | केशरकुशल | १९वी | ४ | |

* श्री *

# परिशिष्ट १

## [ कतिपय ग्रन्थोका विशेप परिचय ]

१ ७७५३ (१-१७)[1] **अकपाटी आदि गुटका**

आरभिक दो पत्रोमे लघु चाणक्यनीतिके दूसरे अध्यायका अतिम श्लोक तथा तृतीय अध्याय लिखित है। आगे १७ पत्रोमे अकपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमे ऊपर अक-सख्या और नीचे सुभापित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि है। उदाहरणार्थ—

'दान दया दमोद्रिण दर्शन देवपूजिन।
दकारा पचवर्नने दूर्गत नैव गछति ॥ १ (पत्र १)

दूहा ॥ मरनर अक्षर सीप पीव, जो रपै अप्पाण।
नर वेरीतर मायरा, अक्षर राज दुवाण ॥ १ (पत्र २)

अन्तके १६ १७वे पत्रमे—

दूहा ॥ काली तू कोयल भली, जम मनषरो विवेक।
अब विहूणी अवरमु, बोल न बोलै एक ॥ १ (पत्र १६वाँ)
गाम गोरमे होत है, जोय दूर मत जाय।
वनी वताइ पारमी, अरय कह्यो इण माय ॥ १ (पत्र १७वाँ)

॥ लीषन। पीडन श्री ५ श्रीवालचदजी लीषी छै। स० १८३५ मीगसर मुद ५ वार मगलवार अषमुरै जै सरूप गोठीरा छै।

६ ६५२५ **अजना चोपाई**

आदि ॥ई०॥ श्री गणेशायनम ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गौनम प्रमुष, एकादस अभिराम।
मन वछित सुष मपजै, नित समरता नाम ॥ १
प्रथम उद्यम मै माडियो, मति दीमै अति मद।
तिण कारण पहिला नमु, श्रीगणधर सुप कद ॥ २
सेवकन मानिध करै, देइचो अविरल वाणि।
जिम वेगो सिद्धै चढै, काइम राषि सकाणि ॥ ४

अन्त– तिणि गछ पीपल थापीयो, आठ साषा विस्तार।
सवत रुद्र बावीसमैं, बीसमै हूई सुषकार ॥ १२

---

१ पहली सख्या क्रमाङ्क और दूसरी ग्रन्थाङ्क सूचक है। कोष्ठकके अङ्क गुटकाके अन्तर्गत रचना-सख्याके द्योतक है।

ते गछ दीसै दीपतो, साचौर नगर मझारि ।
वीर जिणेसर दीपतौ, जिहा तीरथ प्रगट उदार ।। १३
तास पाटै अनुक्रमै हूवा, श्रीलीषमीसागर सूरि ।
विनय करी कर्मसागर, वाचक देय सनूर ।। १४
तास सीस पुण्यसागर, वाचक पभणै एम ।
अजनासुदरी चौपई, पूरण कीधी ते प्रेम ।। १५
सबत सोल सत्यासीइ, श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पचमी निरमल, रिद्धि वृद्धि मगल माल ।। १६

सर्व गाथा ।। इति श्री अजना सुदरी चौपई सपूर्ण सबत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्षे तिथौ १ भौमवासरे द्वीतीय प्रहरे लिषत ऋष नोलचद पीही ग्रामे उदावत राज्ये वाचनार्थ चीर नद्य श्रीरस्तु ।। श्री ।।

२४ १८२० **अजना सुदरी भास अपूर्ण**

आदि– ।।र्द०।। श्री गुरुभ्यो नम ।।

ढाल–बाहुबलि रयण इम चितवइ सरसति सामिणी प्रणमियइ ।
गोतम स्वामि जा पाइरे । अजना सुदरीनी कथा नारि नर सुणह मन लाइरे ।।१।
सील भवियण भलइ पालियइ । पाइय सुजस ससार रे ।
सवि कुसगति वली टालियइ जइय भव दुष पार रे ।।२।।

अन्त– धन धन अजनासुदरी, सुमरिउ चित्ति त्रिकाल रे ।
सील भलउ तिणिइ, पालियउ जसु गावइ मुनिमाल रे ।
सील भलउ जगि पालियइ । ५६।।

इति अजना सुदरी भास समाप्त । लिषत वसावण ऋषि बाई बीरो पठनार्थं सुभ भवतु लिषक पाठक ॱ।। छ।। छ ।। श्री ।।

२६ ३८६२ **अबड विद्याधर रास**

आदि– ।।र्द०।। सकल पडित मडली मडन प० श्री ५ रविसागर गणि चरणेभ्यो नम ।। वस्तु । सदा सपद २ रूप ऊकार । परमेष्ठी पचे सहित । देव त्रिणि सदा सेवित । महाज्ञान आनदमय । ब्रह्मबीज योगीद्र वदित ।

दूहा ।। भुवन त्रिणि गुण त्रिणिमय, विद्या चउद निवास ।
हु प्रणमु परमातमा, सर्व सिद्धि सुष वास ।। १
परम ज्योति परमेस जे, श्री गुरु सारदमाय ।
आदि कवीसर सत जन, नित वदु तस पाय ।। २

अन्त– सवत सोलउ गण चालीस । कार्तिक सुदि तेरसि ससि दीस ।
सिद्ध जोग रिष अश्विनी । अबड कथा चोपइ नीपनी ।। १३
भणता बुद्ध मरीरे जोय । बुद्धि सिद्धि सवि होय ।
सिद्ध देव गुरु सकति । गुरु भक्तिथी पामइ भक्ति ।। १४
नव रस मइ अबड रासनी । स्रोता वगता जन पावनी ।
वीर कथा भावइ जे कहइ । च्यार पदारथ सहजे लहइ ।। १५

जिहा रहइ अबर अवनी चद्र । जिहा रवि तारा ध्रुव गिरि इद्र ।
सागर सपत दीपनो वास । तिहा लगि रहो कथा परकाम ॥ १६
उजेणिइ रहि चत्रमासि । कथा रची ए शास्त्र विभासि ।
विनोद वीर वृद्धि रस वात । पडित रस माहि विष्यात ॥ १७
भही पानना जाम पसाय । विद्या भणी भानु भट पाय ।
मित्र लाडजी सुणिवा काजि । वाची बिडाल वीने राजि ॥ १८
कहइ वाचक मगन्न माणिक्य । अबड कथा रस छइ आधिक्य ।
ते गुरु कृपा तणो आवेस । पूरा सात हुआ आदेस ॥ १९
इनि श्री मुनि रतन सूरास । गोरष जोगिनी दीधा सीस ।
अबड कथानेक आदेस । कीधा सात ने कह्या विसेस ॥ २०

इनि श्री गोरष जोगिनी सप्त आदेश अबड विद्याधर रास सपूर्ण । सवत १६९३ वर्षे ज्यष्ठ शुदि १४ भौमवासरे प० श्री हेमसागर गणि शिष्य खिमासागर वाचनार्थे लिखित पालगजा नगरे शुभभयतु ।

३९ ११२८ (९) अगडदत्त चोपाई

आदि– श्रीसौभाग्यशेखरगणिसद्गुरुभ्यो नम ॥

आदि जिणेसर प्रणमु पाय । समरू सरसति सामिणि माय ।
कर जोडीनी मागु मान । सेवकनि देजो वरदान ॥ १

अन्त– अगडदत्त मुनि तणउ चरित्र । भणता गुणता हुइ देह पवित्र ।
पडित हर्षदत्त सीस इम कहइ । भणइ गुणिते सिव सुष लहइ ॥ ३९

इति श्री अगडदत्त मुनि चउपई सपूर्णा । लिषित न्यानशेखरेण भाद्र राउल पठन कृते ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादथी सुष सपत्ति हु ॥ श्रीस्तात् ॥

४१ ३५६२ (१४) अचलदास खीचीरी वारता

आदि– अथ अचलदास षींचीरी वात लीषते ॥

गढ गागुरणरो धणी अचलदास षीची गागुरणमे राज करे छै । राजा राजने परजा चेन करे छै । नगरीरो लोक वडो । तीण राजारे राणी लाला मेवाडी छै । सेहस मेवाडरो राणो मोकल छे । तीणरे बेटी लाला तीका अचलदासजी षीची परणीया छै ॥

अन्त– गणा वरस लग राज गणोई कीदो । जतरे वृद अवसता आय लागी छै । तीण समै गढ मामुगढरो पातसाह हमीर सुलताण गढ गागुरण उपर चढने आयो । तरे अचलदासजी षीची गढ सजीयो छै । गणा दीन सुधी वेढ कीदी । भली जुगतमु काम आयो ने लाला मेवाडी ने उमा साषलीरो समणो भागो ने दोउ सतीया हुई । परथवी माहे मोटो नाम गो हुइयो ।

इति श्री ठाकर अचलदास षीचीरी वात सपुरण ॥ स० १९७०रा असाढ सुद १५ द० गुरा हीराचदरा छै ॥ श्री ॥१॥

**४४    ३५४६ (१८)    अजीतसिंघजीरी वारता**

आदि— वार्ता। महाराज श्री अजीतसिघजीरी। महाराज श्रीअजीतसिघजी पातिसाह श्रीफरकसाहरा विना हुकम नरबदासु मुरभनै पाछा देसमै पधारीया नै पातिसाहजी दिषण गया। दिषण मुहमसरद करि पातिसाहजी दिली आया। सबत १७६९ पछै पातिसाहजी मारवाडि उपरा मुहम ठहराय नै बाईसी विदा कीवी। निबाब हुसनअलीषा तिको मोचीयारै बाग डेरा षडा हुवा ।

अन्त— तरै भडारी कह्यो महाराजकवार पातिसाहरो हुकम माथै चढाय ल्यो। भवतव्य लारा मति नै कुमति उपजै। धरतीरै लालच अभैसिघजी बषतसिघजी उपरा परवानो लिषीयो। आपणै दोना भाया मारवाडिमै आधो आध छै। नागोर मेडतो थाहरो छै। महाराजसु चूक करिज्यो। महाराजनै जाडेचासे डोलो आयो थो। तिको महाराज परणीज नै जाडेचीजीरा मेहला पोढीया था। तिण राति महाराजसु कवर बषतसिघजी चूक कीयो। सबत १७८१रा आसाढ सुदि १३ मंगलवार इण भाति अजीतसिघजी नै मारिया नै घररी पातिसाही गमी।

इति महाराजरी वार्ता ॥१२॥ श्री ॥

**४५    ३५७३ (४२)    अजितसिंघजीरो कवित्त**

श्री ॥ महाराज अजीतसिंघजीरो किवत ॥

राजलोक रिषदुण विस पडदाईत प्यारी सघ सहेली च्यार अगन।
सिनान उलारै बारै गाईण वले वले नव उडदावे गण।
हाथल चेडी हुवै हुवै दौड जणी हजुरण ॥
पातरा पाच नाजर उभै भल बाई मृत भामीयो।
सीधवत अजन सतीया सहित ईम सरगलोक सिधाइयौ ॥ १
मारीयौ लेष महाराजरै माहाराज कुणथी मरै।
मोहकमसु नाह मुओ जेण मुहकमनै मारै ॥
सयदासु नाह मुओ सेदा सभर सघारे।
पतसाहाना मुओ पडि उभौ पतसाहा।
बावीसी पच गई सूक वदीयौ दोय राह ॥
जोधाण धणी जस राजरो कुण तीणसु भारथ करै।
मारीयो लेष महाराजनै महाराज कुणसु मरै ॥ २

ईती कवित।

**४६    २३६८ (४)    अजीतसिंहजीरो सीलोको**

अथ अजीतसीवजीको सीलोको लीषते ॥

माता सरसती मोटी महामाई। तोनै तो समरया कमणा नही काई।
कहीयो सीलोको सुणज्यो ईण काजो। महाराजा अजमलरो वषाणु राजो ॥ १
माहाराजा बैठा जालोर माहे। पतस्या ओरगनै लागु जी पाऐ।
अब दोय कासीद दीलीसु आया। पतस्या ओरगनै मोष पुहचाया ॥ २

अन्त– समै ईक्यासै आसाढ मासो। राजाजी कीयो देवलोक वासो।
चोथै सीलोकै पेमोजी छाजै। जो ध्यांणै बाजै अविचल बाजै ।। ३१

ईती श्रीअजीतसींघजीको सीलोको संपूर्ण ।। मिती वैसाप वदि ११ सम १८४८ का: लीषतं नेमविज दाध्यामध्ये, जस बीजैजीका चेला नेमजी लीप्यो छै; कालमैं लीषी छै धांनको भाव रुपीयो १) मेर ३६ स छो जदि ला पीढै ।।

५४. २८६३ (१२७) **अणहिल्लवाडपत्तनराजावली**

आदि– संवत् ८०२ वणराउ चाउडह अणहिल्लवाडह पाटण वसाविउ ।। साठि वर्ष लगह राज्य पालिउ। एवं ८६२ आऊषउ जांणिवउ। तेह नह पाटि योग राजा नह राज्य हूऊं। वर्ष ३५ लगह राज्य पालिउ ।।

अन्त– श्रीकुमारपाल राजा राज्य वर्ष ३१ एवं संवत १२।३०। तेह नइ पाटि अजय-पाल राजा राज्य वर्ष ३ एवं १२।३३ तेह नइ पाटि बाल मूल राजा राज्य वर्ष २ एवं सं० १२३५। तेह नइ पाटि भीमदेव राजा राज्य वर्ष ६३ ।। इम सोलंकी ११ पाट पाटणि नयरि राजवी हूया ।।

५६. ७७४३ **अध्यात्मरामायण भाषा**

आदि– श्री गुणेसाये नीम ।। सुरसती नीमो ।। श्री सीतारामजी सत छै जी ।। श्री रामाये नमा ।। कथेतं अधातम रामायने भाषा लीषतं रामह्लदय ।। राज श्रीराजैसंघजी सभाषीत।

चौपई– जबै भुव भार भयो दुष्टनतैं। तब ही देव गये जाचन प्रभुपै ।।
चिदानद सुंनी त्रदस वानी। परजापते अस्तुते ही ठानी ।। २
तीन सुप्त सन भेये भगवाना। चीदानद यनकी सब जाना ।।
मेघ गिरा बांनी जु वुचारी। सुनीक ब्रमा सते बीचारी ।। २

अन्त– दुहा ।। राम हीरदैको राजैदानीते प्रीते करतै वुचारै।
सीय्याराम हीरदै बसैय्या समे नाहे बीचारै ।। ६५
राम हीरद भाषा अरथै कीनौ मते वु न मानै।
सुनी कह रीजै न धारी है करीये मते अपमानै ।। ६६

ईती श्री अधातैम रामाणै रामै हीरदये भाषा अरथ सपुरन ।। कथेते म्हाराजे श्रीराज-सीघजी ।। सुभ समुरथै।

६०. २२०३ **अध्यात्मसारमाला**

आदि– ।।र्द०।। ॐ नमः परमात्मने ।।
दूहा ।। श्री जिन वांणी नितु नमी, कीजइ आतम सूद्धि।
चिंदानंद सूष पामीइं, मीटि अनादइ असूद्ध ।। १

अन्त– इम जिनमत आराधो काज साधो भविक नि सुणी भावना।
गुणि ठाणि वाधो सुणो साधो करो निज मति पावनी ।।

अध्यात्म गुणनी एह माला । भविक जन कंठि ठवो ।
जिम नहो मंगल लीलमाला अचल अनुभव अनुभवो ॥ १
इति अध्यात्मसारमाला संपूर्णाः ॥ ग्रं० २७५ ।

६६.    ३५४६ (८)    **अनंतरायसाषलारी वारता**

आदि– ॥र्द०॥ श्रीगणपत्ये नमः ॥ अथ वार्ता– अनंतराय सांषलो उगो बालो जेसो सरवहीयो तिणरी वात लिष्यतै ॥ समुद्ररै विचै कोइलापुर पाटण । तिणरो धणी अनंतराय सांषलो । छत्रधारी तीणरो वडो गढ । वडी जमीतरो धणी छै। तिणरै एकसो एक भाई भतीजा छै । तिके गढ माहै भेला रहै छै । हुकमी थकां चाकरी करै तिणां कनै असवारी नै घोडो १ नै पवास १ सागडदपे सारा आदमी ४ कनै रहै······॥

अन्त– दूहो ॥ महमद यु मन जांण, वले न धारै वेगडो ।
जेसा वडां जवांन, करता जंग कवाट उत ॥१॥

वात ॥ पातिसाह पचास असवारांसु अहमदावाद आयो । बीजा तो ५ । जेसाजीरै चरणै चहोम्वा । संवत् १३०० माहे हुउ । इतसूं सूरां पूरां क्षत्रीयांरी वात संपूर्ण ॥२॥ श्रीरस्तु ॥

६७.    २१५६    **अरजनहमीररी वात**

आदि– ॥र्द०॥ अथ वात अरजनहमीरनी वातः ॥ अणहिलवाडै पाटण गोहिल भीम राज्य करै । गुजरातमै वेगडौ महमंद राज्य करै । वेगडो महमंदसुं भीम लडाई लीधी । भीम कांम आयौ । वडौ बेटौ अरजन । लहुडौ बेटौ हमीर जाहरां भीमजी कांम आयौ ।

अन्त– आंवर लगै उभारि, माथै षांन मसूररै ।
तन वह रे तरवार, मुंइ लग पुंहती भीम ऊत ॥ ११
सोहडे सोरठी ए, पुरसातल पाटण तणै ।
ले षडकी युषमेह, भारत म्हीणै भीम ऊत ॥ १२
इति अरजन हमीररी वात ॥

१२७.    २१७७    **आणंदसंधि**

आदि– ॥र्द०॥श्री॥ वरधमांन जिनवर चरण, नमतां नव निध होइ ॥
संधि करूं आंणंदनी, सांभलिज्यो सह कोइ ॥१॥

अन्त– संवत दिसि सिधि रस सिसि, तिण पुरी मइ किधी चउमास ।
ए संबध किय उर लिया, मणउ सुण ताथाय उल्हास ॥४९॥धन०

इति श्रीआणंदसंधि संमापतं ॥ संवत १६९६ वर्षे मासे फागुण विदि द्वितीया गुरुवारे श्रीराजलदेसरमध्ये ॥ श्रीलालजी लिषाइतं ॥ यादृसं पुसतके दृष्टं तादृष्टं लिषतं मया ॥ यदि सुधम सुं वा मम दोष म दीयते ॥१॥ लिषतं ब्राह्मण हरषा ।

१६१.    ३४६७    **आरामशोभा चोपाई**

आदि– ॥र्द०॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
दूहा ॥ प्रह ऊंची प्रणमुं सदा, पारसनाथ प्रगट्ट ।
महिमा धणी मुलताण मइ, दीठां हुवइ गहगट्ट ॥१

श्री जिनकुशल सुरी सतउ, ध्यान धरूं चित लाइ ।
ईहक ग्रास्या पूरवइ, इ जग विरुद कहाइ ॥ २

ग्रन्त- दयासार कहइ सुष भरपूरा । दिन दिन हे तप पूरा छै ॥२६ सं०

इति श्री सम्यक्त्वांधिकारे श्रेष्ठी ग्रारामनंदन पदमावती चउपई समाप्ता ॥ सर्व ६२५ छः छः छः ढ़ाल २७ ॥सर्व ग्रंथाग्रं ८२६॥ संवत् १७४६ वर्षे ग्रासू सुदि ७ तिथौ गुरुवारे महाजन मध्ये लिषतं विजयसुंदरेण ॥

**१८६. ३५४६ (१६) ग्रासथानजीरी वारता**

ग्रादि- ग्रथ राव सीहाजी पुत्र ग्रासथांनजीरी वार्त्ता ॥ राव सीहाजी तो कनवज रांमसरण हुवा । सोलंषणीजीरै बेटा तीन हुवा था । ग्रासथांन १ सोनिग २ ग्रज ३ । कनवज टीका बाबत ग्रवांणग हुई । तरै पाटण मोसालनै षडीया । तिके पाधरा दर मजले पाली ग्रायनै उतरीया । तरै श्री जिणदतसूरजी व्रामणांनै कह्यौ ग्रै वडा रजपूत छै । मारवाड़ि माह हजार वरस राज करसी ·····।

ग्रन्त- संवत १४३८ तठे पछै राव चुंडै मंडोवर लीधी नै राजथांन बंध्यो । मंडोवर ईदां चुडाजीनै हथलेवामै दीधी । पछै रावजी मंडोवर उठायनै ग्रापरै नांवै चिडीया टुकरा भाखर उपरै गढ करायो नै जोधपुर वसायो । संवत १५१५ जेठ सुदि ११ । तठा पछै जोधपुर हीज राजथांन छै । इति ग्रासथांनजी वार्त्ता ॥

**१६७. ६०७ इलाचीकुमार रास**

ग्रादि- ॥र्द०॥ उं नमः ॥ श्रीः ॥

दोहा ॥ सकल सिद्धि दाई सदा, प्रणमू जिणवर पास ।
ईलाकुमर ऋषि गावतां, ग्रापै वचन विलास ॥ १

ग्रन्त- वली ऋषि मंडल मांथी लीधो । ए ग्रधिकार मइं सीधा छे ॥ १२
तिणथी न्यून ग्रधिक जे भाषिउ । तेमि छादुक्कड़ मइं दाष्यौ छै ॥१४॥भा.
ग्रंथागर ग्रक्षर गुंण ग्राप्यो । विसेंनेस तस विजांणो छै ॥१५॥भा.
संवत सतर उगणीसा वरसे । शेष पुरि मनहरसिं छै ॥ १६॥भा.
ग्रासो सुदि द्वीतीया दिन सारइ । हस्त नष्षत्र गुरुवारे छै ॥१७॥भा.
ज्ञानसागर दीइ संघ ग्रासीसा । दिनिदिनि दुज्यो सुजगीसा छै ॥१८॥भा.
जस सानिधि साधु चारित पालें । ज्ञान दरसन ग्रजु ग्रालें छै ॥१६॥भा.

सर्व गाथा १८७॥ इति श्री भाव विषय इलापुत्र इलाची रास संपूर्ण॥ संवत् १७४६ वर्षे मागसर मासे कृष्णपक्षे १ तिथौ बुधवासरे श्रीघोघाबंदरमध्ये लषितं । मुनि कुंग्रर-कुशलेन कल्याणं भवतु ॥श्रीः॥श्रीः॥

**२२४. २२१३ (२) उपदेशसत्तरी**

ग्रादि- ॥र्द०॥ उतपत जिव जोय ग्रांपणी, मन मांहि विमान ।
गरभावासै जीवडो वसीयो नवमास ॥१॥ उतपत०
नारि तणीना भात लै जिनवचने जोइ ।
फूल तणी जिम नालका तिम नाडी दोई ॥२॥ उ०

अन्त– कलस ।। ते जैन धरम विचार साभलि लिए सजम भाइ ए ।
परिसाह केरी सदा पालै नेम निरतीचार ए ।।७१।।उ०
मसारना सुष सकल भोगवी ते लहे भव पार ए ।
श्रीरतनहरप सुषास रगै इम कहै श्रीसार ए ।। ७२

इति श्री उपदेशसतरी सपूर्णम् । स० १८३८रा मिती आसोज वदि ४ दिने प० श्रीकर्मसुन्दर कालूग्रामे उपकेस गछै ।

२२६ ११२२ (१७) ऊट तथा हाथीवर्णन

आदि– सुविसाल तुमाल जिके अति सोभित घाट सुघाट विध्यात घड्या ।
जटी आल मुपाल हलत झमालय षन न थाल जके षडिया ।।
बिने पक सुद्ध भला बगदा दीय कुरगह जेभ पये क्रमता ।
जग झेस दीइ अमरे सहरो इस्यो घघवडा मदिरा घुमता ।। १

अन्त– पट जेम उछाडिय पल्ल गेय वर फोज तरणा ग्रहणा फबरणा ।
घन जे मग रज्जित मूल महा परण लाष बे लाष जिके लहणा ।।
गढ भाज पाहाड विहाड कुरगम झाड उपाड वहे झलता ।
गजराज दिइ गजसिघ कमध्वज इद्र जिसा हथियार हुता ।। २
इति हाथीना वषारण ।

२३९ २३६० (८) एकलगिड वराहरी वात

आदि– ।।द०।। अथ एकलगिडवाराहरी वात लिप्यते ।। जबुदीप भरथ षडमै अठारै गिरारो सिर अरवद । अरवद किसडोहेक छै । इरण दूहा जिसडो ।

दूहा ।। वनस्पती पाषर वरणी, वरणीया टूक विहद ।
पटा बिब्बूटा नीझरण, आयो मद अरबद ।। १
घैघूत्री लूबी घटा, सषर पपीया सद ।
लगसामु वाथा लीये, आजुणे अरवद ।। २

अन्त– दाढालो काम आयो भूटरण मती हुई । च्यारु चेलरा काम आया । पाचमो चेलरो आबुजी रहसी । महारावजी वीमलदेनै मारणहार हुसी । ऋषीश्वरराषा वचन सत्य हूवा । झूठामै हूवै रावजीनै मारसी । गोठ षायनै घरे पधारीया । उमरावानै मीष दीधी । मुजरो करनै साराही डेरे आप आपरै गया । महारावजी श्री वीसलदेजी दरबार पधारीया । सुषमै रहै छै । फतई हुई ।।

इति श्री दाढालो वाराहरी वार्त्ता सपूरण ।। श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु ।

२५१. ५३० एकाक्षर नाममाला

आदि– श्रीगणेशाय नम ।। अथ एकाषरी नाममाला लिप्यते ।।
दोहा ।। कहत अकारज विस्नकू , पुनि महेस मतमान ।
आ ब्राह्मकू कहत हैं, ई जुगमा रमा जान ।। १
अन्त– विदुषन मुष सुनि तरक षट अष्टादसहि पुरान ।
नाममाला एकाक्षरी, भाषी रतनू भान ।। ३४

इति श्राघडोईरा रतनू वीरभाण कृत एकाक्षरी नाममाला मपूर्ण ।। स० १८५६ ना वर्षे श्रावण विद ३ रयौ(वौ)लिपिता श्रीगोडीजी प्रशादात् ।।

२५३ ३२८६ **श्रोखाहरण**

आदि– ।। श्रीगणेशाय नम ।। अथ ओखाहरण लिप्यते ।।

राग रामग्री ।।

श्रीशभूमुतने आदे आराधू जी । मन कम बचने सेवा मागु जी ।। १
चतुरदश लोक जेहेने माने जी । तेहना गुणमू लषीये पाने जी ।। २

ढाल ।। पाने लष्या जाये नही श्रीगणेशना गुणग्राम ।
सकल कारज सीध यामे मुप लेता नाम ।। ३

अन्त– पछे ओपाने बीदाय आपी वरत्यो जयजयकार ।
श्रीकृष्ण पधारचा द्वारिका परणावीने कुमार ।। १६
श्रे ओषा (ह)रण जे माभले तेहेना ताप त्रण्ये जाय ।
भट प्रमानद केहे कथा समरो श्रीयदुराय ।। १७
कडवा ।।२६।।२।। ओपाहर्ण मपूर्ण ।। ममाप्न ।

२५५ २३०६ (३) **कृष्णध्यान**

आदि– अथ कृष्णध्यान लिष्यते कवि ईमरदासजीरो कयो ।।
निरषे आदि रूपनिधान । कोट अनगकी छिव कान ।
माथै मुकट पषवा मोर । घेरत मदन मुरली घोर ।।
भाल विमाल लोल कपोल । राषे भानु-कोटकी ओल ।।
भृकुटी भ्रू ह वक कवान । भलकत कुडला जुग भान ।।

अन्त– ओपन चरण अबुज लाल । तिन विच ऊर्द्ध रेप विमाल ।।
जव तिल गदा चक्र पदम । तिनमै कटनि कोट करम ।।
निज पद लाग रज भर जान । तिनकु ब्रह्म सिव ललचात ।।
षेलत बाल जूप(थ)मभार । गोकल गाव नदकुमार ।।
तिनके दरस पै लष वेर । ईसर वार डारचो फेर ।। १५
इति श्रीकवि ईमरदासजीकृत कृष्णध्यान मपूर्ण ।

२७५ ५२११ **कछवाहोकी वशावली**

आदि– ।। श्रीगणेशाय नम ।। अथ कुछावाकी वशावली लिष्यते ।।

श्रीआदिनारायणनै कवलमै ब्रह्माजी ।।१।। मारीच ।।२।। कस्यप ।।३।। सूर्य ।। ४ ।। ववस्वात ।।५।। मनु ।।६।। इप्काक ।।७।। विकुपि ।।८।। पुरजय ।।९।।

अन्त– महाराजाधिराज जन्मनाव मोहोनसिंघ नरवलका राजाको बेटो सो राज पायो । जदि मानमिघजी नाव पडचो । मीती पोस बदि ६ म० १८७५ का । राज कीयो महीना ४ दिन ६ ।। माहाराजाधिराज श्रीमवाई जयमिघजी सवत १८७० कै साल श्रीजमवायजी पधारचा जाति देवा । सव माज्या साथ पधारी मीनी असाढ मुदि ८ सवत १८८४ कै साल ।

२७८    ७७२० (२२)    कपडकुतूहल

आद्य अश खण्डित है। उपलब्ध रचनाका प्रारभ इस प्रकार है—

ढि पिलग पर सु दर ढोलियै वाय ॥ १३

मसी जर सु मो मन भयो, प्रीउ ढोलिए बोलाय।

माल मु हुगीवे लीजिये, सो माहरइ आवी दाय ॥ १४

तन सुपकी साडी चरणी कचु वण्यो सुचग।

रतन जडीत नीरषी सोनी सुदर अग ॥ १५

अन्त— कचीयो पेम पछेवडो कीधो सेज तीआर।

तिरण वेला मदिर गई प्रीउ माणइ तिणि वार ॥ ३१

प्रीआग गगदास सूत, नगर उदैपुर वास।

कपडकुतूहल कीधा वरणी देहिं दुवास ॥ ३२

इति कपडकतुहल सपूर्णं ॥

२६२.    २०६२    करगडू चोपाई

आदि— ॥र्द०॥ नमो अरिहिताण रिसिह

जिणदह पयकमल, विमल वित्त पणमेसु।

वद्धमाण निरा बलि काई एक कवित कहेसु॥ १

रिसह वरस दिण तप कियउ, वद्धमाण छम्मास।

वरमी छिम्मासाइसउ नामहु उतिण तास्स ॥ २

अन्त— वाचक मशिषर इम कहइ, भणइ ते सपद शिव लहइ ॥ ७४

इति कूरगडू रिषि चउपई समप्रलिषड लेप्यक पाठके सुभ भवितु ॥

३०२    ११२३ (१२)    करसवाद

आदि—

दूहा ॥ पहिलू प्रणमिसि मारदा, जसु करि वेणा नाद ॥

आदीस्वर आदिइ करी, गाइसु कर मवाद ॥ १ ॥

नाभिराय कुलमडणउ, मुरु देवी उरि हार।

युगला धर्म निवारणउ, आदिइ आदि कुमार ॥ २ ॥

वीम लाष पूरब लही, कुयरपदिइ सुविशाल।

त्रिस विलाष पूरव जिणइ, कीधउ राज रसाल ॥ ३ ॥

अन्त— दोइ कर मप जिनेश्वर करचा, भाव सरिस अक्षर सभरिया।

श्री श्रेयासकुमर आणद। प्रथम पारणू प्रथम जिणद ॥ ६४ ॥

हुई वृष्टि सो वन श्रृ गार। दुदुभि देव करइ जयकार।

मुनि लावण्यसमय कहइ जोय। जिहार सपति तहा सुष होय ॥ ६५

सपइ लहीइ धननी कोडि। सपइ अग न लागइ षोडि।

सपइ वयण न वाधइ रती। सप वषाणइ श्रीजिन मती ॥ ६६

इति श्रीऋषभदेवपारणाधिकारे करसवाद सपूर्ण।

३०६ ४०२० **कविकल्पलता**

आदि- ।। ई० ।। अथ श्रीसारकृत बावन्नी लिख्यते ।
ॐकार अपार पार तसू कोइ न लभ्यें ।
सबर कर सिरताज मत्र धुरि कवियगभ्यैं ।।
अरधचद आकार उवरे मीडो जसु सोहे ।
जै ध्यावै चित लाय तिकै तिहुयण मन मोहै ।।
साधक सिध जोगी जती जासु ध्यान अहनिस करैं ।
कवि सार कहै ॐकार जप काइ मैण भुलो फिरैं ।। १

अन्त- क्षिते मडल क्षिति तिलक महर पाली पुर सोहै ।
गढ मरु मदिर महिल बाग वाडी सनमोहै ।।
राज करैं जगनाथ सुर सामत र सवाया ।
सोनगरे सुमसथ सुजस वसुधा वर तायो ।।
सवत सोलैनिव्यासियैं आसु सुदी दसमी दिनैं ।
श्रीसार कवित बावन कह्या साभलिज्यो साचैं मनैं ।।५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृते सपुण । सुभ भूयात् ।। श्री सवत १८७८ रा मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुराजी श्रीवेनरामजी । लीषता कु इद्रभाण वाचनारथम् अणदपुरमध्ये ।

३२५ ४९१५ (१६) **कागदरी नकल**

इस गुटकेमे पत्र स० ३९८से पत्र स० ४०६ तक चार कागजो(पत्रो)की नकले दी हुई है जो इस प्रकार हे—

पहली नकल आदि- कागदरी नकल ।

छद नराच- सने हत साभर नगर सुघर । प्यारी निज हाथ दियो पतर ।
सूभ वान कथानक सुदरिय । छिव गात अनत चित हरिय ।। १
सलिता सर निसर नीर वहै । नलनि सूभ वास धरैं र लहै ।
वहु वास निवास न कुप वनैं । वनिता गनि तोर सूनीर थनैं ।। २

अन्त- दिन जात वृथा तुम सग विना । कबहु सुष होत न आप विना ।
कहता ज रजी समचार सवैं । सु मिथ्या तन मानहु भाम कवै ।। १७
न लिषे तुम पत्र सनेह घनौ । पय जावनकी तुम रीत गनौ ।
जुग राम वसु ससि सवत य । सुभ मास तथी सरस चरय ।। १८ इति ।।

दूसरी नकल— [सवत् १८३४]

आदि- कागदरी नकल लीषते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुथाने सुकल सुभ ओपमा केलास क्यारी, प्रेमरसप्यारी, चदवदनी, मृगलोचनी, लगतरी लडी, जीवरी जडी, हीयारी हार, सेजरी सिणगार, प्रीतमरी षीलार, चितरी ऊदार, हसतमुषी, सदा सुषी ।

अन्त– सवसरषी नारी नही, सवसरषी नही बाण ।
मब गुण एकणमे नही, दाषु चतुर सुंजाण ।। ६२
इती ओपमा लिषणारी, जथाजोग मत जाण ।
कहत दुर्लमल चुप सु, रप चुप परवाण ।। ६३ ।। सपुर्ण ।

तीसरी नकल–

आदि– मिध श्री प्यारी दीसे, जैपुर नगर जठेह ।
प्रीतम लिषत वणायकै, नित २ नवलै नेह ।। १
चदवदनि मृगलोचनी, चिता लक सुचग ।
गजगमणि रस जोग है, अतहि जाण सुचग ।। २

अन्त– बाहू उतर देजो सदा, कागद अधिक उजास ।
हित कर लिषजो हेतसु दमकत अपणा षास ।। २० मपुरण ।।

चौथी नकल–

आदि– मिध श्री सरबओपमा विराजमान अनेक ओपमा लायक गुणनिधान बहोतर कलासुजाण चवदै विध्यानिधान सूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेज, चद्रमा जेहा सितल, रुपा जेहा ऊजला ।

अन्त– मत किणहिसु लागजो, नैणाहदो नेह ।
धुकै न धुवो नीसरैं, जलै सुरगी देह ।। १८
सजन फलजो फुलजो, वड जु वीमतरजो ।
नालेरा जु लुबजो, आछा जु फलजो ।। १९

इति श्रीपत्री सपुर्ण ।

३३१. ३५६२ **काया-नगरको कागद**

आदि– अथ कायानगररो कागद लाषते । सीध श्रीसुरगपुरी सुब सुथानेर सकल सुभओपमा वीराजमानान राजराजेस्वर माहाराजाधीराज महाराजाजी श्री श्री १००८ श्री श्रीधरमरायजी जमराजजी सदाचरणजी वो चरणकमलायनु जोग कायानगरसु लीषनु ककर षानाजाद नमतासुर अतरसुर चीतगुपतरो नमो वीसन वचावसी अठारा समचार भला छै ।

अन्त– सवत उगणीसैं सही, पाचा उपर एक । (१९१५)
कवीयण कर जोडी वीनवे, सायब राषे टेक ।।
कागद कीदो कोडसु, फरष रष्यो नही फेर ।
ओर ठोर लावे नही, हीया जब चलो हेज(र) ।। ३

ईती कागद सपुर्ण ।

३४२ २३७५ (२) **काष्ठघोडा विक्रमजीतनी वारता**

आदि– श्रीगणेशाय नम ।। अथ श्रीकाष्ठघोडानी वारता लिष्यते ।
चोपाई ।। हरसि दरे गुणपतिनु नाम । प्रथ विपत पोतानो ठाम ।।

नेन व्यजाणे बिजो कोय । तेह थानक एक अचरज होय ।
समीपे आण्यु देहरू । जै राजा ये हेरू करू ॥
माहि बेठो एक दिठो जन । तेहनु मरवा उपर मन ॥ २

अन्त- विक्रमसेन मोटो राजन । कहे पूतली सुणो भोजराजन ।
एवो को यथा स्ये सही । ते सीघासण बेसे जई ॥ १०२
एह वात पुतलीये कही । पछे आकास मारगे उडी गई ॥ १०४

इति श्रीराजा विक्रमजितनी वारता काष्ठघोडानी सपूर्ण ।

३४५ ११५२ **कुतुबशत**

आदि- दं० ॥ ढढणी दान सबदकी, अढी देवल नाम ।
माहिबसा मुरत्तिया, बर बोलीये बडाम ॥ १

एक दिवसि साहिबा ढढणीकु पाणा षुलावती थी ढढणी प्रमाद कीया । साहिबा तुझकु क्या उपगार करू । हमकु क्या उपगार करहुगे । हमारे बडाबूढाके उवसाफ करउ । तेहउ अवर क्या उपगार करहुगे ।

अन्त- जिन ही जीव अरग्गीया, ज्वलन भई जन जाइ ।
कह्या सुमाह कुतव्वदी, रहइ सु राषउ माहि ।
मुलतान फुरमान दीना, लेट्ट करे गोष पर चीना ॥
फकीर लूटणइ लग्गे, सादा नेवागे ।
वाजे वाजत वज्जीया, हुवे हुवदे काई ॥
जिमी जीव कुतव्वदी, जिन नामना न जाइ ।

इति श्रीकुतबशत समाप्त ॥ श्री ॥ सवत् १६७० वर्षे वैशाषमासे कृष्णपक्षे शनिवारे श्रीमन्नागपुरीय तथागच्छ स्वच्छातुच्छसुगच्छसमुल्लासन सजलजलधराणा श्रीअमरकीर्तिसूरीश्वराणा शिष्य धर्मकीर्तिना लेखित ॥ श्री ॥ चेला साकरसी ॥ श्री ॥ श्रीनागपुरमध्ये ।

४०८ २८९३ (१०३) **गुजा-काचनसवाद**

वर जिहु तामह बालियै, वरिषाधउ घण घाउ ।
अबला साथि ज तोल्यिौ, तिह भग्गउ भडवाउ ॥ १
रत्नि वसती हू भली, रातउ सव्व सरीर ।
कालउ मुह तव पाइयौ, परसिउ पुरुष सरीर ॥ २
सुणि गुजा कचन भणइ, हमि तुम्हि वटी किसीस ।
पडसिहू तासण नीसरा तउ भाजुइ दुह रीस ॥ ३
सुणि कचण गुजा भणइ, हमि तुम्हि एहि वटीस ।
पइसि समुदर नीसरा, तउ लभ्यइ कुल रीस ॥ ४

५०४. ३५४६ (१७) **चितोड जोधपुर आदिकी ऐतिहासिक हकीकत**

आदि- ॥दं०॥ सवत ९०२ चित्रागदे मोरी चीतोड वसायो । सवत १३६१ अलाव

दीन पातिसाह पदमणीरै लीयै आयो नै गोरोवादल लडीया । सबत १६२४ राणा उदैसिंघजीसु चीतोड छूटो नै पीछोला-तलाव उपर उदैपुर वसायौ ।

अन्त– सब्बत १६०० राव राम काल कीधो राव डुगरसी टीकै बैठो। पछै राव मालदे डुगरसीनै तेडनै होलीयारी रामति माहे भालीयौ। पछै राव मालदे फलोधी आण घेरी। डुगरसीनै पिण साथे ल्याया। कोट डुगरसीरै रजपूत जगहथै देपावत सभायो। वडी बेढ कीवी मास २ ताई। पछै रावजी डुगरसीनै दोहरो करण लागा। तरै डुगरसीजी जगह छ देपावतनै कहायौ। तु कोट परोटे तरै जगह श्रै कह्यौ कु थारै हाथ कूची देईस। तरे डुगरसीनै पोल बारै ले गया। जगहथै देपावत डुगरसीरै हाथ कूची दीवी। डुगरसीजी राव मालदेनै दीधी। तरै राव मालदे गढ लीयो। डुगरसीनै परो छोड दीयो पछे डुगरसी कानी होइ गयो।

**५७१ २८९३ (१३८) चद्रगुप्त सोलस्वप्न सज्भाय**

आदि– ॰ य नम ।। हरषइ प्रभु गुरु प्रणामी करी, स ॰ हियडइ धरी।
सोलह सुपण तणी सिभाइ णता सवि सुष थाइ ।। १
भरतषेत्र पाडलपुरि ॰ राजा चद्रगुपति अभिराम।
निसि भरि सेजि सुपन जे लहिया, सोलह सुणियो अनुक्रमि कहिया ।। २

अन्त– सवत सोलहसइ बावी वसुदि पचमिय जगीस।
राजलदेसरि सघा एह सिभाय हीर रिषि कहइ ।। २०

इति श्री चद्रगु द्र सोल स्वप्न सिज्भाय ।। लिषत हेमराजेन।

विशेष—गुटका अत्यन्त जीर्ण एव त्रुटित होनेसे इस कृतिका अधिकाश खण्डित हो गया है।

**६०३. ३५४६ (१३) जषरा मुषराकी वार्ता**

आदि– अथ वार्त्ता १ जषरा मुषरारी लिष्यत्ते। पछिम दिसनै पटण गाव छै। तठै ओढो भाटी राज करै। तिणरै दोइ बेटा हुवा। एकणरो तो नाम भीवो। दूजारो नाम देवो। गाव २॥ ऽय ३ रो धणी। घणा रजपूत षाप २ रा कनै रहै छै। असवार हजार १री साहिबी। तठै ठावा सगीरै भीवानै परणायौ। देवो पिण परण्यौ। तठै वरस १६ माहे तो भीवो हुवो••• ••।

अन्त–

दुहा ।। पूटी ताई षानाह, जिणै न पायो जषरो।
मिलै न मेले ताह, माटी दूजी माढुवा ।। १
वेह दातार विनाह, जाचिक क्यु जीवै नही।
पूटी ताई षानाह, जिणै न पायो जषरो ।। २
पातरीया पहलोइ, जाय जूहारचो जषरो।
नर बीजा नर लोइ, आष्या तलि आवै नही ।। ३
आ इतरी वात जषरा मुषरारी कही।
सूरवीर दातार, तिणरै मन लही ।। ३
इति वार्त्ता सपूर्ण ।।

६०४ ११२२ (३) **जगडूनो छद**

आदि- ॥दं०॥ अथ जगडूनो छद ॥

अगम रूप देवी आदेश । आपोआप अगम आदेश ।
आदि जुगादि नमो आदेश। अषर मपर देअण आदेश ॥ १
ब्रह्मा विष्णु महेसर जाया। मोह जाल जिण जग मडाया ॥
आप कुमारी विष्णु उपाया । तु मोटी माता त्रिपुराया ॥ २

अन्त-

कलश ॥ नाकारो मुंष नही दान षट वरणा देणो ।
दे दै कार दुवार लोभ छोडे जस लेणो ॥
अगमने उछरग भला गुणगीत भणावै ।
ओसवाल भूपाल आज कुण सम वड आवै ॥
लालगेम कज लीलो कहै मेर समोवट जाम मन ।
दाना रमको जाणे दुनी तिम जगडू व्रधमान तण ॥ ६
इति जगडू नवागरवालानो छद सपूर्ण ॥

६०५ ११२२ (१८) **जगडूसाहनो जस**

आदि- अथ भद्रेसर वालो जगडूसाहानो जस ।

छप्पै ॥ मूडा आठ सहस्स दीध वीस लवण वीरै ।
बारै मूडा सहस्स दीध सिंधवे हमीरे ॥
गजनवे मुलतान सहस मूढा इक वीसे ।
मालव पत्र अठार अने मेवाड बत्तीसे ॥
राया सधार इल पर हूऔ मवत बार श्रीलोत्तरे ।
जगडवे साह सोला तणै करी प्रमध पनरोत्तरे ॥ १
मरग थकी सवरचो देस पुहतो दकालह ।
नगर सरवे पलभल्या वार पोहती श्रीमालह ॥
अने करचो आकलो धारतो धीनी वाहू ।
केतो फेडू ठाम केतो जीवतो साहू ॥
जगडू ए साह सोला तणे जकडबध गाढो जडचो ।
मेल मेल्न माह जगडूआ नही पडू काल पनरोतरो ॥ २

६४८ २३६२ (७) **जसवतसिहजीका कवित्त**

आदि- कवित्त महाराज श्रीजसवतसिघजीरा कुवरा रा ॥

गुण गभीर गणेश शेश मर्पेस मुणीजै ।
सुर तेतीसा सहित ससकति हित उपर कीजै ॥
नव नाथा नवग्रहा सत जन करो सहाई ।
रिषि रावा साधका कहे उपजे जिकाई ॥
महाराज मरण मुरधर धरा, राजपाट किण विध रहै ।
ब्रह्मा विसन शिव ईद्र सुणि, कहै वचन सरसति कहै ॥ १

अन्त– हुजदारा हेक वार जात सेत्रजे जावै ।
अकल पथ हिगलाज तहा काय हुइ आवै ॥
पाकरण पोतदार तिकै द्वारका पधारौ ।
ज्यौं पातिक मिट जाय हुई आतम निसतारौ ॥
उतपात मात करसी अलग जात कीया दुष जावमी ।
द्वारकानाथ प्रतापथै इतरै होली आवसी ॥ १

सवत १७३५रा पोस वदि १० महाराजा श्रीजसवतसिघजी देवलोक प्राप्त हुआ छै सौ अटक पार तरै घोडै चढुरै कह्या छै ।

**६५०. ११२२ (४६)　　जाम लाषारी नीसाणी**

आदि– ॥र्द०॥ अथ जाम लाषानी नीसाणी सिहटप लिप्यते ॥
मो कर भवानी मेहरवानी, अषर आगेवान ।
वाषान लाइक सुर विनाइक, दै सवाइक दान ॥ १
हुनू दान दाइक नरा नाइक, वरनवो सुविहान ।
रज रीत राषा जाम लाषा, षट्ट भाषा जान ॥

अन्त– हुनू रूप राजै छवि छाजै, जस कवदा जीह ।
वह कहत राजसरान बाबत, देसपत सब दीह ॥ २९
हुनू दीह साजै घनी दौलत, सत्त दत्त सवाइ ।
अस्मान जमी ताम अमर, जाम नाम न जाइ ॥ ३०
इति श्रीनीसाणी जाम लाषारी सपूर्णं ॥

**६५३. ७४९　　जालधरपुराण**

आदि– ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ जालधरपुराण लिप्यते ॥

छद बेआषरी ॥ गजमुष गुण भडार गणेसर ।
सिधि बुधि समपि समोभ्रम सकर ।
उमया मात उदर उतपना ।
देमू देव विद्या वरदन्ना ॥
अष्षर अजब अछभम आणी ।
वघवाणो दे अविरल वाणी ॥
विमला कला कमल वाहनी ।
वेद वरनी चद वदनी ॥ २

अन्त– तोहारौ चाकर चिता तूझ ।
मफेर विजो न चौरासी मूझ ॥
तोरौ करि राषि हवै त्रिपरारि ।
अमै बर मूझ मया अवधारि ॥ ३५

इति श्रीजालधर पुराण सपूर्णतामबीभजत् ॥ लिखित प. कुअरकुशलेन ॥

६८१ ४६१४ (५४) **जोगी रासा**

आदि– अथ जोगीरास लीपीते ॥ ॐ नम सोन्येभ्यो नम ॥
आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु आदिजती आदिनाथो ।
आदिजुगोत्तमो जोग पयसो, जय जग जय जगनाथो ॥ १
तास परपर मुनिवर हुआ, दीगाबर सहिनाणी ।
कुदकुदाचरज[1] गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ॥

अन्त– जोगीह रासो सीषहु श्रावक, दुषन कबहु लहि सौ ।
जौ जिणदासह त्रिविधि हि सिधहु समरण कीजहु ॥ ४२
ईती जोगीरासो सपुरणमस्तु ।

६८३ ५४१८ (३१) **टडाणा गीत**

आदि– टडाणा टडाणा बे, जियडे टडाणा टडाणा ॥
इत ससारै दुष भडारै, क्या गुण देषि लुभाणा छे ॥
जिन ठग ठगिया नादड कालै, फिर तस जोग पत्याणा छे ॥

अन्त– करि उदिम आपन बल मडौ, भोगौ अमर विमाणा छे ।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा, निरमल धरम कराणा छे ॥
सुधसरीरु सहज लवलावहु, भावहु अतर झा(णा) छे ।
जपै बूचा तम सुष पावहु, वछै पद निरवाणा छे ॥

इति टडाणा समाप्तम् ।

७१५ २३६८ (५) **तारातबोलरी वार्ता**

आदि– अथ तारातबोलकी वारता लीपते ॥ मुलतान वासी ॥ नाव ठाकुरसी । वुलाकीदास दुर देमकीसु वारता देषि आयो सु लीषी छै ॥ प्रथम गुजरातसु कोस ३००सै अहमदाबाद नगर छै । अहमदाबादसु कोस ३००मै आगरो छै । आगरासु कोस ३००सै लाहोर छै ।"

अन्त– "तारातबोल नगरकै आसि पासि सीभु नदी बहै छै । चोगरद जीका पाट छै । आगेंकी काई गम नही । मुलक जमी आसमान छै क नही छै । जी की ठीक नही ।

आ वारता मुलतान वासी नाम ठाकुरसी जाति षत्री वुलाकीदास देषि आयो सो लीषी छै ।

तारानबोल आगरासु ५५५१ कोस छै । आगे धरती छै जीको बिचारतो केवली जाणै सहर १ आगै बतावै छै । जीको राह कोस २००सै आगै चालै छै । सो पडित होसी सो जाणसी । इ वात मजूब जाणो मतीना ॥

ईति श्रीतारातबोलकी वार्ता सपूर्ण ।

---

१ कुदकुदाचार्य (?)

७८६    ११२४ (१०)    **दामनक चोपाई**

आदि– ॥र्द०॥ वा० श्रीसौभाग्यशेखरगुरवे नम ॥

दूहा ।। सरमति सामिणि वीनवी, मागु अविचल मान ।
सरस कथा रस बोलवा, दे जेउ वरदान ॥ १
दया धर्म जगि रूयहउ, भाषइ श्रीजिनराय ।
तसऊ परि सबधहु, बोलिसु सगुरु पसाय ॥ २
मानव भव दुहिल्यु लही, कीजइ जीव यत्तन ।
दामनगनी परिसदा, लहीइ परिघलधन ॥ ३

अन्त– सवत सोल त्रिसठि जाणि (१६६३) । ज्येष्ट सुदि नवमी सु बषाणि ॥
राउ(?)द्रहा नगर मझारि । श्रीवर्द्धमान स्वामि आधारि ॥ ३१
पुन्यइ सुष सपति घरि होइ । पुन्यइ जय लाभइ जगि जोइ ॥
दयाशील वाचक इमि कहइ । पुन्य थकी सिव पद लहइ ॥ १३२

इति श्रीजीवदया विषये दामनग चुपाई सपूर्ण लिषित मुनि श्रीज्ञानशेखरेण साहराउल पठनकृते श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीरस्तु ॥

८७९    ४९२४ (३)    **नागदमण कथा (अपूर्ण)**

आदि– ॥र्द०॥ श्रीसारदाय नम ॥ अथ नागदमणि लिष्यते ॥

दुहा ॥ वलतो सारद विनवु, गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगा सरस, जदुपति कीधो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया, देत वडा चादन ।
के पालणैं पोढीया, के पय पान करन ॥ २
कोइ न दीधो कानवा, सुण्यो न लीला बध ।
आप बधावण उषला, बीजा छोडण बध ॥ ३

अन्त– "कलश ॥ सुणे पुणे सम वास, नद नदन अहिनारी ।
समुद्र पार ससार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनतर आणद सवे वषताप सुणावै ।
भगति मुगति भडार, क्रगन मुगनाह करावै ॥
रमीयो चरित राधारमणि' · · ॥

९१३    ११२३ (२२)    **नेमिनाथ चदाइण गीत**

आदि– ॥र्द०॥ राग केदार गुडी ॥

दूहउ ॥ सामल वर्ण सोहामणु, सब गुण भणु भडार ।
मुगति मनोहर मानिनी, तिनको हइ भरथार ॥ १

वालि ॥ मुगति रमनि तु भरथारा । तुझ गुण कोइ न पामइ पारा ॥
तीन भुवनहु आधारा । अभयदान तुहइ दातारा ॥ २

अन्त– सहस बरस कु आयु ज पालिउ । जनम मरण कु भइ स बटालिउ ॥
सुकल ध्यान ऊजल गिरि करीए। नेमनाथ शिव रमणी वरीए ॥ ४५

दूहउ ।। नेम चदाइण जे भणइ रे, ते पावइ षुसार ।
मुनि भाकइ इम वीनवइ छोरउ भव के पार । ४६
इनि नेमनाथ चदाइण गीत ममाप्त ।।

३५७३ (४८)[1] **पनरमी विद्या**

आदि– ।।ई०।। श्री गुणेसायन्म अथ राजा भौजरी पनरमी वार्त्ता व्यास भवानीदास-कृना लिष्यत्ते ।

अथ दूहा ।। श्री गणपति सरसती सीव, विसना रवि गुरुदेव ।
व्यास करे अरदास प्रभू, देजे अष्यर भेव ।। १
अविरल वाणि आप जे, देज्ये सूबुद्धि सुग्यान ।
त्रियाचरित्र वरणत करूं, धरे सुलछन ध्यान ।। २

अन्त– क्रु न नार वचन चित्त धरयै ।
करीयै भोग आलोच न करीयै ।।
सुष विलाम बहुतेरा कीजै ।
दीलमु मरम भरम नही दीजै ।। ५३
त्रिय परपुरुष घणु वषाणु ।
चोहटै वात पारकी आणै ।।
देष जवाना चीत दीढावै ।
विधतासेह जु छिनाल वतावै ।। ५४
(अपूर्ण)

१०७५ ३५६० (४) **पाबू धाघोलोतरा दूहा (अपूर्ण)**

आदि– ।। श्री पाबु धाघोलोतरा दोहा मु० लष्यरा कथा ।।
देवी दे वरदान, मुणतो यु लध मालीयो ।।
पाबूमु परघ्यान, गालतु तुवै गुणै ।। १
सुरनाया कुडाल, वरदायक हुइजै वलै ।।
भल पाबु भूपाल, मलकहै या कीरत मुणु ।। २

अन्त– वीरै वरजताह, मै कीधो मुज पामीयो ।।
षटै नह षाताह, माता सुण बूझो मुणै ।। ६५
छेहडो विछावेह, मै समझायो मो दिसा ।।
पिण लागो या एह, तो पिण न मानै त्रिपट ।। ६६

११५५ ५८६७ **बगसीराम प्रोहित हीरा की वात**[2]

१२६६ ३५४६ (२०) **महाराज अभैसिंघ देवलोक हुवा तिण समयरी वार्त्ता**

आदि– ।।ई०।। अथ वार्त्ता महाराजा श्रीअभैसिघजी देवलोक हुवा मारवाडिमै विषो हुवो तिण ममीयारी ।। सबत १८०६रा अशाढ सूदि १४री राति घडी २ पाछली रहिता महाराज श्रीअभैसिघजी अजमेर देवलोक हुवा नै दाग पोहकरजी दिरायो । पछै

---

१ यह ग्रन्थ मूल सूची मे भूल से छपना रह गया है । २ यह कृति प्रतिष्ठान से प्रकाशित हो रही है ।

महाराजकवार श्रीरामसिघजी श्रावण सुदि १० गुरवार जोधपुरमै टीकै बैठा ।

अन्त– सबत १८१३रा आसोज सुदि ८ महाराज विजैसिघजी मेडतै अमल कीयो । सोझत पिण तुरी लीधी । तरै रामसिघजी जैपुर गया । राजा ईसरसिघजीरी बेटी परणीया सबत १८१३रा पोस वदि १ मगलवार ।

इति मारुषडविषारी वारता सपूर्ण ।

कवित्त– दिषणी मुरधर देस राम राजा ले आया ।
लारा लगावै रार काल पिण पड्या मवाया ॥
धरती हुई पराब लटकोस वणी मचाई ।
दुनीयारा षोगाल गउ पिण कटी सवाई ॥
सबत अठारै इग्यारोतरै बारोतरो पिण जाणीयो ।
तीनु काल मिल एकठा तेरोतरोही पिछाणीयो ॥

१२८९    ६०४    माधवानलकामकदला चोपाई

आदि–    माधवानल २ रूपि मकरद । चवदह विद्याधर चतुर ॥
बिदुर जाणि सुरगुरु विचक्षण । नारद वर नाद गुण ॥
लहु बेस बत्रिस लक्षण । कला बहुत्तरि अति कुमलक्षण ॥
अभिनव इदकुमार । सदगुरु मुषि जिम मन लइ ॥ विरचिसु तेह चरित ॥ २

अन्त– दूहा ॥ सवत् सोलसोलोत्तरइ, जेसलमेर मझारि ॥
फागुण सूदि तेरमि दिवसि, विरची आदित्यवार ॥ ५०
गाहा गूढा चउपई, कवित कथा सबध ॥
कामकदलाकामिनी, माधवानल सबध ॥ ५१
कुसललाभ वाचक कहइ, सरम चरित सुपवित्र ।
जे वाचइ जे सभलइ, तीया मिलइ धन गरथ ॥ ५२
गाथा माढी पाचसइ, ए चउपइ प्रमाण ।
सुणता भणता सुष दीयइ, जे नर चतुर सुजाण ॥ ५३
रा ल माल सु पट्टधर, कुवर श्रीहरराज ।
विरची ए शृ गार रस, तासू कतूहल काजि ॥ ५४
सारदसु प्रसाद करि सील तणइ आधारि ।
भणइ सभलइ तेह नर, सुष पामइ नरनारि ॥ ५५

गथ ५०५५ ॥ इति श्रीमाधवानलकामकदला चउपई ममाप्ता ॥ स० १६४३ वर्षे चैत्र वदि १० बुधवारे उत्तराषाढ नक्षत्रे मध्ये पल्लीवाल० भट्टा श्री शातिसूरि तत शि० देवीदास लिषत जयतारणे ॥

१३०२.   ६७१    मानतुगमानवती चोपाई

आदि– ॥र्द०॥ श्रीपरमात्मने नम ॥
प्रणमु माता सरसती, प्रणमु सदगुरु पाइ ।
मूरषथी पडित करे, जस जगमे कहिवाइ ॥ १

कथा मरसने कवि वयण, केलवीया बहु मीठ ।
साकर द्राप अमी थकी, मे तो अधिका दीठ ।। २

अन्त- सवत सतरेमतवीसे वुरे । सुदि आसाढे वीज दिने गुरे ।।
परतर सह गुरुजिणचद जयकरू । तेहने राजे सोहगसुदरू ।।
सु दरू सोमसु दर प्रसादे । अभयसोम इणि परि कहे ।।
ए सरस कहिने कथा दापी । भेद मतिमदिर लहे ।।

इति श्रीमानतुग मानवती चतुपदी समाप्ता ।। स० १७७८ चैत्र सुदि चतुर्थी लिषिना प० राजविजयवरैं ।। श्राविका पुण्यप्रभाविका देवगुरुभक्तिकारिका केसरपठनार्थ वीक्रमपुर वास्तव्य कल्याणमस्तु ।

**१३८२ ३५५० (१५) मेडता आदिकी ऐतिहासिक हकीकत**

आदि- सवत् १७४६ वर्प पोस वदि नबाव अन्याइतपानरो बेटो रावणषडौ निग्नु मेडतीयै जोधे षाडानु मारीयौ । साभरि परै तुरक घणा मरण गया । रपत वपत घोडा कुद द्रब सर्व रजपूतारै आयौ । राडानु वाढी । मारवाडि माहे वरस ७८ रह्यौ । लोका माहे लीक पाडतौ गाव घणा षाडै मारीया था तका सर्व कसर काढी । मुहकमसीघ मेडतीयानु मारीयो हुतो तको वैर लीयो ।

अन्त- स० १७५२ वर्षे वगडी मुकातै रुपीया हजार ७ लसकरीषानरै बेटै बीजो हबीबषान लीधी । साष नीपनी सषरी । मेह घणा हूआ ।। १

**१४५४ ७७२० (२३) रागनामोपरि विरहसुभाषित**

आदि- ।।र्द०।। प्रीतम चाल्यो हे सषी, ललित करी लपवार ।
ह्यिडा उपर हिसतो, सो विरहणीको ना हार ।। १
तुम विण मेरे प्रीतमा, मदीर माहि अधार ।
घर वाहर नही आलगे, जा कीयो दीव गधार ।। २

अन्त- थाहरो प्रीतम आइयो, सज्या समे सुजाण ।
मन उछाहो अधि हुयो, करो कल्याण कल्याण ।। ३०
प्रीउ पधार्‍या हे सषी, पायो आज सोभाग ।
जैतश्री जय जय करे, आज अम्हारो भाग ।। ३१
इति राग सपूर्ण सवत् १७६५ वर्षे जेठ सूद ७ दीने श्री ।।

**१४६१ ४६०६ (२) राजसभारंजन**

आदि- ।।र्द०।। अथ राजसभारजन लिप्यते ।।
गगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।
राजसभारजन कहो, मन हुलास रस लीन ।। १
दपतिरति नीरोगतन, विद्या सुवन सुगेह ।
जो दिन जाय आनदमै, जीतबको फल एह ।। २

बीचसे कुछ उदाहरगा—

साथ सहेट चल्यो चहै, मुग्धो तिय पिय छैल।
षीसेमे कोडी न्ही, चले बाग की सैल ।। ६७
सहज रीति कुल तजि लगै, काम कलाकै साज।
बाप न मारी मीडकी, बेटा तीरदाज ।। ७०

अन्त– छद तीनसैसाठ सब, व्यवहारै सुष देत।
राज–सभा–रजन सरस, कियो रसिकजन हेत ।। ६७
अक बान मुनि ससि (१७५९) समा, विक्रम सर्क नभ मास।
उजल नवमी भृगु दिवस, पूरन रस-प्रकास ।। ६८
सुषद भूमि सग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि।
तहि कवि मन सुप्रसन्न अति, मति रतिसो अवगाह ।। ६९
जब लो सुष सज्जन कला, मेरु धराधर धाम।
तब लो चिर जीवहु रसिक, पढत गुरगत गुन नाम ।। ७०

इति श्रीराजसभा-रजन दोहा समाप्त।

सबत् १७९८ वर्षे मिति पोस बदि १४ शुक्रे लिपिकृत श्रीरस्तु कल्यारगमस्तु।

१४७६ ४८३४ राठोड नाहरखानरो छद

आदि– छद राठोड नाहरषानरौ गाइरग माधौदास रौ कह्यौ ।।

आरज्या ।। उपन्ना षुरसाणी उडा। पाणी पछा पाषर होडा।
अैरा कीआ रछ्छीस जोडा। नाहरषान समप्पै घोडा ।। १
भाडजी केवी मुगलाणी। षासा षैग जिके षुरसाणी ।।
वडपाता सुण अवरल वाणी। रेवत रीझ दीयै राजाणी ।। २

अन्त– कलस ।। वहस तेज बहु सफल बहुत मोला बहु भोयण।
धीरज तेज अनत लोय दीप क्वहलोयरग ।।
वड विसाल पै करह गात उतगह मैंगल।
पवग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ।।
बरहास वडा वड कवीयरगा त्यागी द्यण हरतै रवै।
समपीया षान राजानकै कुप करन्नह अभिनवै ।।
इति नाहरषान घोडारा दातारी छद सपूरण ।।

१४९८ ३८९७ रामयशोरसायन

आदि– ।।दं०।। राम-रासा लिषते ।। वेलावल रागे ।।

दोहा ।। श्रीमुनिसोव्रतस्वामि नमो, त्रिभवन तारण देव।
तीरथ कर प्रभु वीशमो, सुर नर सारै सेव ।।
पुत्र सुमित्र नरिद्रनो, पो मावैत समाय।
जनमा भुमि जिनवर तणी, राजग्रही कहवाय ।। २

अन्त– कलस ॥ राम लिछमन अनै रावण मति सीता नीचरी ।
कही भाषा चरीत साची, वचन रचन करी षरी ॥ १
मन रंग विनोद कवता, अनै आवत, मुष भणी ।
केशराज कवीद जपै, सदा हरष वधामणी ॥ २

ईति श्रीढाल ह्वपट्या रामयसोरसायणै चतुर्थोदिकार समाप्त सर्व ढाल ६२ सर्व गाथा ३१६६ सर्व ग्रथाग्रथ ४३७५ ईनि रमायण समाप्त ॥ सवत १९७१ चैत्र मासे शुक्लपषे तिथ छठ ६ वार आदीत बार नै देहरग्रामे जमना टटे । लिषत रमायण साम्त्र पुरा कीया हुगा बुधराम लिषत ।

१५३७ २३६४ (२) रूपदीपक पिंगल

आदि– । श्रीरामजी ॥ अथ रूपदीपक भाषा लिषत ॥

दोहा ॥ सारदमाता तू बडी, सुबुधि देहु दर हाल ।
पिगल कि छाया लीयै, बरनौ बावन चाल ॥ १
गुरु गनेसके चरण गहि, हियै धारकै विघ्न ।
कुमर भवानीदास कौ, जुगति करै जै किस्न ॥ २

अन्त– बावन बरनी चाल सब, जैसै मोमैं बुद्ध ।
भूल भेद जाकौ कहौ, करौ कबीसर श्रुद्ध ॥ ३
सवत सतरै सै बरस, और छिहतर पाय ।
भादो सुदि द्वतीया गुरौ, भयौ ग्रथ सुषदाय ॥ ४ सवत् १७७६

इति श्रीरूपदीपक पिगल भाषाग्रथ सपूर्णम् ॥१॥ स १८५८ मिती पोस सु ६ ।

१५४७ ११२२ (६१) लाषफूलाणीरा कवित्त

आदि– ॥र्द०॥ अथ लाषाफूलाणीना कवित्त लिष्यते ।

छप्पय ॥ प्रथम चउद्दह कोडि सेन गह मिलै सुभट्टा ।
धर पूरव ऊमडै वहै सिर वाट उवट्टा ॥
जगल वारा मिरू लष्ष लोधी धर माही ।
वनचर चीध विलग्ग जाए वामणो पसाही ॥
धूवलो गयण पुड धूजियो गभीर पच जोजन गियौ ।
सम बीह सूर सत्त मारवा इद्र कहै लाषो अयौ ॥ १

अन्त– सवत नव एकमे मास कारतक्व निरतर ।
पिता वैर छल मर्माहि सहउ राषाइत सद्धर ॥
पडै सग्गा सो पनर पडै सोलकी सो षट ।
ओगणीस सो चावडा सूआ छिल राज रिणवट ॥
पातरे षमल मगल लहै सोल सीह नामो सरै ।
आठ सै पष्ष रा चाद्रणे मूलराज लाषो मरै ॥ ५

इति लाषा फूलाणीना कवित्त सपूर्ण ।

**३५४६ ३५५५ (२७) लाषाफुलाणीरी वात**

आदि— श्री गणेशाय नम ।। अथ लाषाफुलाणीरी वात लिषते । प्रथम तो गीत सीहा सेतरा मोतरो लाषाजीनै मारीया तिण समारो—

सुध मन जात चालियो सीहो, सेन सुतन ले बहु साज ।
मूलराज नालेर मेलीयो, उपर करो कनोडचा आज ।। १
हुतो चाल्यौ जाति गोमती, सगी पण छै आगलो साथ ।
जाता करे वलता घर जास्या, वाउडता सगपणरी वात ।। २

अन्त— सिरदार काम आयो । राषायचरा काका भाइ सारा ही वैर ले पाछा पाटण आया ।

इति श्री लाषाफुलाणीरी वात सपूर्ण । सवत् १८२६ वर्षे येष्ट वदि १४ दिने पिपलीया ग्रामे लिषत केसरचद लिपीकृत । तिण समारो कह्यो दूहो—

लाषो तो मीहै मारीयो, थे भगा सो वार ।
पडीयो सीह कर्कडै, की बेडीयो गिमार ।। १

वात लाखोजी पुरे लोहे पडिया छै तठै मूलराज चावडो आयो सीहोजी कुच करे नैक नव जनै पधारीया । सोलकणीसु सुष भोगवता छ पुत्र हुवा छै । बडा आसथानजी तिके मारवाडमै आया । तिणारो विसतार राठोड छै सहो ।

इति वारता सपूर्ण ।

**१५६३ १८१५ विक्रम-चरित्र**

आदि— ।।र्द०।। श्रीत्रिपुराई नम ।।
देवि सरस्सति पाय पणमेवि शभु शकति बिमनी धरी ।
करिस कवित नव नवइ सिद्धि बुद्धिवर विघनहर ।।
गुणनिधान गणपति प्रसादि ज्ञानी रषि आगइ हूया ।।
जह आगम परवेस तस पसाइ कवीअण कहइ विक्रमसुत ऋणवेस ।। १

दूहा ।। आदि सति नेमी सरह, पासनाह वर्द्धमान ।
ए पचइ मगल करण, शास्त्रारभि प्रधान ।। २

अन्त— पनरपासठइ सवत्सरिइ । जेठ मास सुदि पक्ष दिन करिइ ।।
रवि त्ररास ए शास्त्र प्रकास । कहि कवीयण निज गुरु उदास ।। ४६
विपुल बुद्धि सुकवि तेह तणइ । वाचक उदयभानु इम भणइ ।। ६२

इति श्रीविक्रमचरित्र प्रबध ।। सवत् १५६७ वर्षे मार्ग्रशरमासे कृष्णपक्ष्य नवम्या तिथौ शनिवारेऽज्जेहश्रीपूर्णिमापक्षे पूजा श्री श्री ६ भुवनप्रभसूरि शक्ष्य वा० रत्नमेरु लिषित ।। गोदावरी ग्राम श्री श्रीहस सानिध्ये लिषिन ।। कल्याणमस्तु ।।

**६४१४ विक्रमचरित्र ( हेमाणन्द रचित )**

आदि— ।।र्द०।। श्रीसरस्वत्यै नम ।। प्रणम्य देवदेवच वीतराग सुरर्चित ।।

लोकाना हि विनोदाय करिष्येह कथामिमा ॥ १
नत्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूषिता ।
पद्मपत्रविसालाक्षी नित्य पद्मासने स्थिता ॥ २

अन्त- श्री विक्रमने बेताल कथा कही चउवीस उदार ।
मोल छियालै भाद्रव माम । हेमाणद कहै उल्हास ॥ ३६
इति श्रीवेतालपचीसी २४ कथा ।

दोहा- बलि विक्रम सीसम गयो, पाछो तिण ही डाल ।
मटबधी काधइ कीयो, तब बोलै भूपाल ॥ १
आगेका ग्रन्थ अपूर्ण है ।

१६१२ २०१६ **विक्रमसेन चोपाई (परमसागरप्रणीत)***

आदि-
॥द०॥ दूहा- परम जाति प्रकामकर, पूरण परम उल्लाम ।
प्रणमु परमानदसु, परम सषेसर पास ॥ १
चरमसरीरी चरम जिन, शासन नाह सधिर ।
परम प्रेम पद पुजस्या, जगवल्ल भजि न वीर ॥ २

अन्त- ता लगे ए चोपइ थिर रहयों, जा लग सूरज चदा ।
राग धन्यासी ढाल चोमठमी, परमसागर आणदा रे ॥ १३

सर्व्व गाथा १३४७ छे इती श्रीविक्रमादित्य लीलावतीसूत विक्रमसेन चोपई सपूर्ण ।

१६१३ ३८६८ **विक्रमसेन चोपाई (मानसागररचित)**

आदि- ॥र्द०॥ श्रीवीतरागाय नम ॥
सुपदाता सषेसरो, पूरण परम उलास ।
सानिध करज्यो साहिबा, अधिक फलै मुझ आस ॥ १
सारद चद समो वडो, वदन अनोपम जाश ।
सा सारद सुप्रसन्न हूवो, द्यो मुझ वचन विलाश ।

अन्त- ढाल बावनमी जो मे गाइ मानसागर सुषदाइ जी ।
दीन २ चढतै जोत सवाइ दीन २ दोलत पाइ जी ॥वी १३॥
इति श्रीविक्रमसेन नरिंदस्य चौपी सपूर्ण समाप्ता । स० १८२८ वरषे ।

१६२७ ३६५२ **विद्याविलास चोपाई**

आदि- ॥र्द०॥ श्रीजिनस्याय नम ॥
श्रीजिनवरमुखवासिनी, प्रणमु सरसति माय ।
कवियण वयण समुच्चरइ, ते सारद सुपसाइ ॥ १

---

* इस रचनाकी क्रमाक १८२५ पर भी एक प्रति है। ये दोनो परमसागर कृत है ।

प्रणमु गोतम प्रमुष वलि, गणधर गुणह निवास ।
समरता गुण जेहता, पूजइ सगली ग्रास ।

अन्त– तास सीस रगइ कहइ, राजसिघ ग्राणद ।
विद्याविलास नृप गाईयउ, दान अधिक सुषकद ।। ४५
ए सवध सुहामणउ, सुणत भणत दुष दूर ।
मनवछित माहिल फलइ, लहावइ सुषतर पूर ।। ४६

इति श्रीविद्याविलास चउपई समाप्त सपूर्ण सर्वगाथा, ३४६ ग्रथाग्र ४१६ सवत् १६६३ वर्षे माह वदि ६ नौमि ठाकरसी वाचनार्थ लिषित श्रीजेशलमेरमध्ये शुभ भवतु कल्याणमस्तु ।।

१६२६ ६१११ विद्याविलास चोपाई

आदि– ।।द०।। श्रीसरस्वत्यै नम ।।
दूहा– सरसति नित ग्रापो सुमति, चित हित धरि प्रणमेवि ।
जित तित थित थानक ग्रचल, सोभित दह दिसि देवि ।। १
कवियण नरसा निधि करण, दूर हरण ग्रग्न्यान ।
चरण सरण उपम वरण, उपावण गुण ग्यान ।। २

अन्त– वाचक गुणवर्धन सुषदाया, श्रीसोमगणि सुपसायाजी ।
इम जिनहरष पुण्य गुण गाया, तीस ढाल सुष पायाजी ।। १८
हिव राजानि सुणै गुरवाणी ।।

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलास चोपई सपूर्ण ।। स० १८२६ वर्षे मिति ग्रासाढ सुदि ७ दिने ।

१६३२ १८२७ विद्याविलास रास ( पवाडउ )

आदि– ।।द०।। ॐ नम ।। श्रीवीतरागाय नम ।।
पहिलु पणमु पढम जिणेसर, शत्रुजय ग्रवतार ।
हथिणाउरि श्रीशाति जिणेसर, उजलनेमि कुमार ।। १
जी राउलि पुरि पास जिणेसर, साच उरउ वर्धमान ।
कासमीरि पुरि सरसति सामणि, दिउ मुझ नित वरदान ।। २

अन्त– सयम लेई सिवपुरि पुहुतउ धन धन विद्याविलासइ ।
भणइ हीराणद सो श्रीसघह वछित पूरउ ग्रासइ ।। १६
सवत चऊद पच्यासी ग्रए, रचीउ ए हरसालन्तु ।
ग्रचल वधामणा ए ।। १६
जा लगइ ग्रबरि रवि तपए ता लगइ विस्तरउ ए चरी।
ग्रचल वधामणा ए ।। २०

इति विद्याविलास चरित्ररास सपूर्ण ।। सवत् १६७६ वर्षे ।। ग्रासो वदि दुवादसी गुरुवारे.... जावालमध्ये लिषित ।। शुभ भवतु ।।

**१६७० ७७२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त**

आदि- ।। श्रीगणेशाय न(म) ।।

कवित्त- गढत लक दईवत मक झकत अहिराइण ।
वनत धीन अहि वेलत पान षेधत पत्राइण ।।
अमरत आस माया तपास रस होइ महा जल ।
परमा वात सोवन घात चितत वेगागल ।।
अणराइ चाइ एकाणवै सालिहातर दिठो सवे ।
त्रिहु राइ तिलक नारियेण तना दाता तो वीरमदे ।।

अन्त- कर परि जिण गिरवर धरयौ, मथुरा मारयौ कस ।
रेषा राषस निरदले, जयकारी जदुवस ।। १०
श्रीठाकुरारी माषी छै ।। लिषत मिश्र आनदराम ।। शुभमस्तु ।।

**१६७३ २१४३ (४) वीसलदेव सूअर शिकाररी वात***

आदि- ।। अथ वडैराव वीसलदे सीरोहीरै धणीरी मूवरारै सिकाररी वात लिषते ।।

दूहौ- गहै घूब लूंबी घटा, वणिया टक विहल्ल ।
अरवदसु अलगा रहै, जाका कौण हवल्ल ।। १

वात- आबूरा पाहडा ऊपर नवनाथ । चौरामी सिद्ध । चौसठ जोगणी । बावन वीर । तेतीस कोड देवता तपस्या करै । स आबूरै पाहडा ऊपर १ जलम लीयौ मो मास २ अथवा च्याररो हूवो । सौ माईता सागै चरण जावै । सो पाहड कोस १२ मै ते ऊपर चरै पीयै । मो मारी ही ठोड तपमी तपस्या करै छै ।

अन्त- भो जिण षेहमें मूवर सिकै थौ तैमै आय पडी । वडी मजलस हुई । जिकै मिरदार काम आया था तिकानै रावजी निवाजस करी । सीरोही पधारीया ।

इति श्रीवडै राव वीमलदेरै सूवरारै सिकार वात मपूर्ण ।

**१६९०. ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा**

आदि- ।। श्रीरामजी ।। अथ बेदस्तुती भाषा लीष्यते ।। राजश्रीराजैसीघजी सभाषन ।।

छद- श्री भागौत दमम सकध, बेद सतुत्म भाषा बध ।।
अती आनद भव बध छेद आवागमन मिटै भ्रम षेद ।।

चोपई- श्रीसुपदेव ब्रह्म ततुवज्ञाता । बेदब्यासके पुत्र विष्याता ।।
तीनके पदबदन मै करु । तीनको ध्यान हीरदैमै धरु ।।

अन्त- नीती प्रनी पाठ जु जे करै, वुपजै ब्रम ज्ञान ।
तत पद नीहचै पाय है, राजै प्रम बीज्ञान ।। ६०

ईति श्रीबेद सतुती भाषा अरथ सपुरण ।। कथीत म्हाराज श्रीराजैसीघजी ।।

---

* स ४४५२ (५५) पर अकित 'एकलगिड वराहरी वार्ता' और इस रचनाकी कथा-वस्तु एक है, किंतु दोनोकी वर्णनशैली भिन्न है ।

१६६१. ३६०३                    वैदर्भी चोपाई

आदि–

॥द०॥ दूहा– जिण धर्म माहे दीपता, करि धरमस्यु रगि ।
रिदइ, सूरा जाणिस्यइ, ढाल भणइ बहुरग ॥ १
रग विण रस न आवसी, कविता करो विचार ।
नवरस आदि सिंगार रस, ते आणु अधिकार ॥ २

अन्त– दूहा ॥ दान देइ चार तलीयो, हूवउ तउ जयजयकार ॥
पेमराज गुरु इम भणै, मुगत गया ततकाल ॥ ४६
भणै गुणै जे साभलै, वैदरभी तणौ वीवाह ।
भणता सहु सुष सपजै, पुहचइ नगर मझार ॥ ५०

इति श्रीवैदरभी चौपई समाप्ता ॥ ग्रथाग्रथ २५० ।

१७०० ३५४८ (१)                    वैहलीमरी वात

आदि– ॥ अथ वेहलीमरी वात लिष्यतै ॥

दूहा– धूर दीषण वाका धणी, राज करै पीरोज ।
उगै आथनीया विचै, दाण उघरै रोज ॥ १

वात—पीरोजसाह पातसाह गढ गजनी राज करै । तरै पातसाह वीचारीयो वीजा-पुररो गढ लीजे । तरै पातसाह कटक करनै वीजापुररै गढनु लागो । मास ८ आठता ढ ढोहो हुओ । पछै गढ पीरोजसाह पातसाह लीयो ।

अन्त– वात ॥ तठै ममण तलाव ऊपर सती कर काठ देनै पाछो वलीयो ॥

दूहो– रातै मुह वैहलीम साह, साहिब भाई होय ॥
भोजाई पला जिसी, कवर होसी मोहि ॥ ५६

इति वैहलीमरी वात सपूर्ण ॥ लिषत धनराज तिमरीमध्ये सा श्रीअमुकनाजी तत्पुत्र राजसी फतेचद वाचनाय ॥ स० १७६४रा मिती आसोज सुदी २ गुरवारे ॥

१७६८ १००२          शत्रुञ्जयउद्धार रास (समयसुन्दररचित)

आदि–

॥र्द०॥ दुहा– श्रीरिमहेसर पाय नमी, आणी मन आणद ।
राम भणी सरलीयामणो, सेत्रु जना सुषनो कद ॥ १
सवत च्यार सतोतरइ, हूआ धनेसर सूर ।
तिण सेत्रुज महातम कीह्यो, सिलादित्य हजूर ॥ २

अन्त– तास सीस जग जाणीयै ए, समयसुदरउ वडाय ।
रास रच्यो तिण सूअडो ए, सुणता आणद थाय ॥ २१॥से॥

ईति श्रीसेत्रुजय रास सपूर्ण ॥ सवत् १८३६रा वर्षे आसोज सुद १२ दिनै उपाध्याय श्रीसोभागचदजी कम्य आत्यम साधने लिषापित प नैणसीलिंषत श्रीराधणपुरमध्ये ॥ श्रीरस्तु ॥

१७७२ ३६५३ शत्रुञ्जयउद्धार रास (नयसुन्दरविनिर्मित)

आदि– ॥र्द०॥ गुरुभ्यो नम ॥
विमल गिरिवरमडन जिनराय । श्रीरिसहेसर पय नमी ॥
धरीय ध्यान सारदा देवी । श्रीसिद्धाचल गाई सिउ ॥
हईड भाव निरमल धरेवी । सेत्रुजि गिरिवर माहि वडउ ॥
सिद्धि अनती कोडि । जिहा मुनिवर सुगति गया ॥
वदु बे कर जोडि ॥ १

अन्त– भानुमेरु पडित सीस दोए कर जोडि कहि ॥
नयसुदरो प्रभु पाय सेवा नित करे वा । देहि दशरा जय करो ॥ ११४

इति श्रीसेत्रुजयउद्धार समाप्त ॥ स० १६६५ वर्षे मागसिरि सुदि २ महोपाध्याय विमलहर्षगरिण शिष्य गरिण हसविजयेणालेषि ॥ शुभ भवतु ॥

१७४४ ६८० श्रीपाल रास (विनयविजय यशोविजय विरचित)*

आदि– ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नम ॥
दूहा– कल्पवेलि कवियणतणि, सरमति करि सुपसाय ।
सिद्ध चक्र गुणगावता, पूरि मनोरथ माय ॥ १
अलिय विघन सवि उपसमे, जपता जिन चोवीस ।
नमता निज गुरुपयकमल, जगमा वधे जगीस ॥ २

अन्त– देह सबल ससनेह परेछे, रग अभग रसाला जी ।
अनुक्रमे तेह महोदय पदवी लहिस्यै ज्ञान विशाला जा ॥१४॥ त०

इति श्रीमहोपाध्याय श्रीकीर्तिविजयगरिण शिष्य उपाध्याय श्रीविनयविजयगरिण विरचिते उपाध्याय श्रीजशविजयगरिण पूरिते प्राकृतबधे श्रीसिद्धचक्रमहिमावर्णनाधिकारे श्रीपाल चतुर्थ खड सपूर्णम् ॥ आगे स० १६२३मे सिद्धचक्रपजाविधि लिखी है ।

१८४३ ६०३ शुकबहोत्तरी चोपई

आदि– ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ श्रीमाताजी सत्य छे ॥ छ ॥
सयल सुरासुर माया मगल कलाण सुजस जय निलया ।
वर विजाधरण दाया सा सारद पढम पद णमामि ॥ १

अन्त– मगल पेहेलो जिन चोवीस । बीजो मगल गोमय सीस ॥
त्रीजो मगल गुरु अभिधान । चोथो जिन सासन प्रधान ॥ ५२

इति श्रीरसमजरी कथा शुकबहूतरी चोपाई सपूर्णं समाप्त भवतु ॥
स० १६०८ना वर्षे ।

१८४४ ४०१० शुकबहोतरी

आदि– ॥र्द०॥ श्रीगणेशाय नम । अथ वात सूवाबहुत्तरी लिष्यते ॥

---

* इस कृतिकी चार विभिन्न प्रतियाँ हैं चारोके कर्ता एव पाठ अलग-अलग है।

दूहा– करि प्रणाम श्री सारदा, अपनी बुध परमान ॥
सुक शप्त वार्ता उ करी, न्यायते देवी दान ॥ १
विक्रम नगर सुहामणो, सुष सपतकी ठोर।
हिंदू थान ऽरु हिंदू धरम, अैसो सहर न और ॥ २

अन्त– • हरदत्त सेठ होम करायौ तिहा सारिका पिण आई। ऊपरसु दिव्यमाला पडी। उणरे दर्शन सेती सराप छूट शुककारिका गधर्व होय आपणै लोक गया।

इति श्रीबहुत्तर वार्त्ता सुध सूवाबहुत्तरी सपूर्णम् ॥ ७२ सवत् १८९९रा मिती श्रावण सुदी १ दिने लिषत प० बिजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्गे चतुर्मास्या स्थिता।

१८४५     ४४१९          **शुकबहोतरी। प्रथम पत्र अप्राप्त**

आदि– दी कह्यौ। पृथवीकै विषै बहुतरी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती आगे कहसी। सील रषावसी। तदि गधमाद परवतकै विषै आविनै शुक सरीर छोडिकै मूल गौ शरीर पामी पाचसै मोहर ब्राहमणनै दान देई। निपाप थाइस •।

अन्त– कवि देवदत कहै। शुकका वचन भेला करिकै आपकी बुद्धिकै अनुसारै बाधी छई।

इति श्रीशुकबहोतरी कथा समाप्ता॥ सवत् १७९० वर्षे आसोज बदि ६ षष्टी भोमवासरे प० वनीतविजय लिपि चक्रे॥ शुभभवतु॥ श्रीसमाप्ता।

१७४५     ९८५          **श्रीपाल रास ( ज्ञानसागर कृत )**

आदि–
॥र्द०॥ दूहा– कर कमलजोडेवि करि, मिद्ध सयल पणमेस।
श्रीश्रीपाल नरिंदनु, रामबध पभणेस ॥ १
महीयलि मत्र अनेक छै, पपलि मपडिग मार ।
भवसायर तनु उतरै, जो जपै श्रीनवकार ॥ २

अन्त– सिद्ध चक्र महिमा सुणो ए माल वडी भवेया कर्णधरेवि सुणो सुदरी भ० २ मनबछित सुषदायकु ए माल०॥ जे सुणें नितमेव सुणो० जे० १ एक मना जे जिन जपइए मा० ते घर मगल माल सु० ते० २ ऋद्धि अनती भोगवे ए मा० जम भूपति श्री सुणो सुदरी जे० २।

इति श्रीपालरास सपूर्ण।

१७४६     ९९१          **श्रीपाल रास (जिनहर्ष रचित)**

आदि–
॥र्द०॥ दूहा॥ श्रीअरिहत अनत गुण, धरीयइ हीयडै ध्यान।
केवल ज्ञान प्रकाश कर, दूरि हरण अगन्यान ॥ १
चउद राजु ऊपरि रहइ, सिध अनत समृद्धि।
मुगति युवति सुष भोगवइ, दायक अविचल मिद्धि ॥ २

अन्त– सवत सतरइमै चालीसै, चैत्रादिक सुजगी इसइ रे।
मातइ सोमवार सुत दीसै, पाटण विसवा वीसैरे ॥ १०

श्रीषरतरगछ महिमाधारी, श्रीजिनचद्र सूरि जयकारी।
जाणे सहू नरनारी रे
शातिहरष वाचक सषकारी। तासु सीस सुविचारी रे ॥ ११
कहे जिनहरष भविक नर सुणिज्यो, नवपद महिमा धुणिज्यो रे।
अडतालीसै ढालै गुणिज्यो, निज पातिक वन लुणिज्यो रे ॥ १२

इति श्रीसिद्धचक्र महिमा उपरि श्री श्रीपालरास सपूर्णम् ॥ सवत १८१४ वर्षे फाल्गुन मासे सुक्ल पक्षे १५ तिथौ शुक्रवारे पाटण नगरे प० महीवल्लभेन लिषित।

१७५२ ३४८९ श्रीपाल रास (गणरत्नसूरिप्रणीत)

आदि–
॥ई०॥ कर कमल जोडेवि करि, सिद्धसयल पणमेसु।
श्रीश्रीपाल नरिदनो, राम बधय भणेसु ॥ १
महीयलि मत्र अनेक छि, पपलि सपडिगमार।
भव सायर ते ऊतरइ, जो जपीइ श्रीनवकार ॥ २

अन्त– श्रीगुणसमुद्रह सूरि, तास पाटि मोहामणा ॥मा०॥ वदीए आणद पूरि ॥६३
भवीया भवी इन उन ए मा० श्री गुणदेव हस्तरि।
तास सीसि रास रविउ ए मा०। श्रीगुणरत्नह सूरि ॥ ६४
पनरएकत्रीसइ मागसिरइ ए ॥मा०॥ उजली बीज गुरुवार।
रास रचिउ सिद्ध चक्रनु ए ॥मा०॥ गाइउ श्रीनवकार ॥ ६५
एक माना जे जिन जपइए ॥मा०॥ तेह घरि मगल माल।
रिद्धि अनत भोगवइ ए मा० जिम भूपति श्रीपाल ॥ ६६

इति श्रीसिद्ध चक्र श्रीपाल रास सपूर्ण ॥छ॥श्री॥छ॥श्री॥

१९३७ २३७४ **समरासारग कडषो**

आदि– ॥ समरासारग कडषो लष्यते ॥
दूहा– पातीसाहु ग्यारादीन, दलीपत सुलतान।
तास तणे वजीर जो, षान मुलाकम मान ॥ १
पातसाहा पोतावकी, हय गय रथ असवार।
डोल मुषासण पालकी, छत्र चामर ले सार ॥ २
अन्त– जाच करी घेर आवउ, वरतो जैजैकार।
कर जोडी देपाल भणे, तु ओस वस सणगार ॥ ४४
ईती श्रीसमरासारग कडषो सपूर्ण २९ ॥

**१९५३. ४२८७ (१६) सवाई जैसिहजीकी जोधपुर चढाईका वर्णन**

आदि– "सबत १७९७ का मीती सावण बदी ८ ने श्रीमाहराजा सवाइ जैसघजी जोधपुर वुपर चढा। राजा अभैसघरी हुकम पॉतसाह महमुदसाह काथे चढा। सो रोज पदरामै १५ जोधपुर जाइ लागा। त्ररफ मडोवरकी डेरा जाइ कीया। मुकाम १
आगे युद्धके खर्चे और जोधपुरकी तरफसे लिये गये उपहार आदिका वर्णन है जो अपूर्ण है।

केहो हिवै जाऊ किथी कहो जिकू,
तिकू करौ छपी ही न छुटु म्हारो छेहडो न छाडै जी ।
जाणो त्यु ही हालो आप हू तो क्यू ही,
कहू नही देषो मानै भाडै जी ॥
इति जोधपुरी बोली सपूर्ण ॥ लिपीकृत चेला केसरचद ॥ समापना ॥

### ३५४६ (२)　सेरसिह मेडतिया आदि राजाओका सपषरा

आदि– गीत जाति सपषरो सेरसिघ मेडतीयारो नै कुसलसिघ चापावतरो ।
चवडै आवोया धरारै बेध बेहु राजा बधे चाल,
बेहुई अराबा दगे छुटे गोला बाण ।
वलावली सिधुराग वागिया भुझाउ बाजा,
अडे बेहु आभ लाग उकलै आराण ॥ १ ।

अन्त– रगमै अनगा जैसा कसी तग अग रंभा,
आषती पिलगा पोढै मकोउती अग ।
नष चष घाल वणु घेरिया कुरग वचा,
भेट जेल लाजी भला भागरा तरग ॥ ७ ॥इति॥

### ३५४६ (१०)　सोनीगरा वीरमदेरी वारता

आदि– ॥र्द०॥ अथ वार्ता १ सोनिगरा वीरमदेरी ॥ गढ जालोर सोनिगरा वणवीर-जीरै कवर दोइ हुवा । वडो कवर कानडदे । छोटो राणगदे । टीकै कानडदेजी बैठा । गढ जालोर राज करै । तिको एकण ममीयै कानडदेजी सिकार चढीया । तिको जालोरसु कोस १० तथा ११ उपरा गया नै राति पडी । कनै एक षवास रह्यौ ।

अन्त– तरै अगर चदणरो घर वणायौ । माथो धड गोद माहे लेनै सती हुई । तिका षावदसू जाय सतलोकमै भेली हुई । पातिसाह अलाबदीन दिली गया । आ इतरी वात बीरमदे सोनिगरारी कही । सूरवीर दातार तिणरै मन लही । सबत १३३७ अलाबदीन पातिसाह जालोर आयौ नै सबत १३४१रा फागुण वदि १३ वीरमदे सोनिगरो काम आयौ नै गढ जालोर भागौ ।

इति वीरमदे सोनिगरारी वार्त्ता संपूर्ण ।

### ४६०३　हमीररासो (हमीरायन)

आदि– श्री गनेसाय नम हमीराईन लीषतै ॥

कवीन– गवरीनद आनद चद लीलाट वीराजैत ।
च्यार भुज कर फरस सरस भुषन अग राजत ॥
कर कमंडल जयमाल लाल वसत्र वोह सुहावै ।
मधुर स्वगध स्वणमय रची ओर उदभाहन कीन ।
हो हय प्रसन सुधी वुधी धनी जौ कथ कवीत प्रमा माण ॥ १

अन्त– कवीत.।। असी करीउ काहु करै नही, कोउ सो करी राजवी चक्र तल।
वाईस वीक्रम राण वुयवीन षाईवयाभा अजहु मध्यकी रोड रोले।
दक्षीन भडारा मदगल कहु हमेल करी।
कदल रनथभ गढ असी करै न कोई ।।

ईती श्रीहमरायनसाको श्रीगार सपुरन समापती।

छद जाजाको ।। कुडलीयो माई मोहदे असीस काई जीवो वरस सो। थाई मोह दे असीस छीत्री ई तोर जीवो। वारा ऊपर वीस भनैजा जन वीरम रहै।

लीषत पाडे नाथुराम व्राह्मन गोडमी आसावी श्रम धर्ममुर्त्त गड व्राह्मनका रक्षपाल राजा श्रीमलजीकू नाथुराम व्राह्मन गोड सदारामको भतीजो टोढ रहै है पकीजीको अप भीछुकको असीस वचजोजी मीती पोस वदी ९ मगलवार सवत् १७८७ जो पुस्तग वाचै जीकु राम राम वचजोजी। जाद्रष्ट दस्वा ताद्रस लीषते मा। जदी सुद्ध वीसुद्ध वा मम दोषे न दीयते ।। शु० ।।

२३७४ (१०)          हरचदपुरी

आदि– ।। अथ हरचद लष्यने ।।
नेरी अवनी उत्यम ठाय। राज करे ता हरचद राय ।। १
रायना चक्र फरे नव षड। आरा न लोपे को बलवत ।। २
सासु छोल वऊ नव फरे। पित्य पिलो पुत्र नमी मरे ।। ३
गउ तुलसी विरामणने दवार। रावु सत हरचद नै राय ।। ४

अन्त– काढी षडकने धसमसो जाघायो मुके सीस।
आगल चकीता आवीउ भाह्मवग्रह्मा जगदीस ।। ८
ईती हरचदपुरी सपुर्ण ।।१०५५।।

२८९३ (६८-६९)          हीयाली

१ हीरकलश कृत

जलि कमल प्रसगइ। वास वसइ लघु अग विश्रगइ ।।
कहिहो पडित ते फुरण नारी। स्याम वरण ते स्याम सिंगारी ।।
कवरण सुनीर कमल कुण नारी। हीरकलस कहि कहउ न इ विचारी ।। ८

२ हेमाणद कृत

राग मल्हार ।। एक पुरुष सामल सुकुलीराउ रमणी त्रिहु भरतार रे ।।
गगा सुरि सिरि मूल उत्पन्नउ सुविचारउ ससार रे ।। १
हीरकलस मुनि सीस हेमाणद बोलइ मन उल्हाम रे ।। ५

अन्त– इति श्रीहीयाली नाम कृत हीरकलस मुनि ।। सवत १६५७ वर्षे काती सुदी २ दिने रडवी स्थाने।

२८९३ (१५) हीरकलश गोत्रादि वर्णन

इस गुटकेके दमवे पत्र पर ग्रारभमे सूक्ष्माक्षरोमे हीरकलश गोत्रादि लिखे हुए है, जो पत्रका कुछ भाग खण्डित हो जानेमे पूर्णतया पढे नही जाते। पढनेमे ग्राने योग्य कुछ ग्रश इस प्रकार है—

रीया बुहरा गोत्रे ।। सा० मोहणसी पुत्र मत्रि वा पुत्र म० बावा पुत्र म० धरणा पुत्र म० देवा पुत्र सोभा पुत्र मा० सगता पुत्र सा० सदारग प्रमुख ।। कुतरा पुत्र नीसल हीरा चेला हेमाणद चेला ग्ररजन ईसर सा० तेजा पुत्र वीदा पुत्र चिरमाना ।।

+++++++++

* श्री *

# परिशिष्ट २

## ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

व



श

क्ष



ज्ञ

# राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित

## महत्वपूर्ण राजस्थानी ग्रन्थ-

१. **कान्हडदे प्रबन्ध,** महाकवि पद्मनाथ रचित । सम्पादक– प्रो के बी व्यास, एम ए ।
मूल्य १२ २५

२ **क्यामखा रासा,** कविवर जान रचित । सम्पादक– डॉ दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द, भवरलाल नाहटा ।
मूल्य ४ ७४

३ **लावारासा,** चारण कविया गोपालदान विरचित । सम्पादक– श्री महताबचन्द खारैड ।
मूल्य ३ ७५

४ **बॉकीदास री ख्यात,** कविवर बॉकीदास । सम्पादक– श्री नरोत्तमदास स्वामी एम ए. ।
मूल्य ५ ५०

५ **राजस्थानी साहित्यसग्रह,** भाग १, सम्पादक– श्री नरोत्तम स्वामी, एम ए । मूल्य २ २५

६ **जुगलविलास,** महाराजा पृथ्वीसिह कृत । सम्पादिका– श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूँडावत ।
मूल्य १ ७५

७ **भगतमाळ,** ब्रह्मदासजी चारण कृत । सम्पादक– उदैराज उज्ज्वल । मूल्य १ ७५

८ **राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग १ ।** मूल्य ७ ५०

९. **मुहता नैणसीरी ख्यात,** भाग १, मुहता नैणसी कृत । सम्पादक– श्री बदरीप्रसाद साकरिया ।
मूल्य ८ ५०

१० **रघुवरजसप्रकास,** किसनाजी आढा कृत । सम्पादक–श्री सीताराम लाळस । मूल्य ८ २५

११ **राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १ ।** मूल्य ४ ५०